कथा संग्रह

दूधबेचनी

राम विलास साहु

दूधबेचनी

राम विलास साहु

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-71-1

दाम : ₹ 200/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

Doodhbechnee
Collection of Short Stories
by Shri. Ram Vilas Sahu.

समर्पण

कथाक सत्तैर

गामक गाछी

हमरा गाममे एकटा पुरान गाछी अछि जे पच्चीस-तीस बिगहामे अखनो पसरल अछि। ई गाछी साए बर्ख पूर्व गामक जेठरैत बाबा लगौने छला। गाछो तेहने पैघ-पैघ आ विशाल अछि। जइमे बहुतो प्रकारक आम, जामुन, कटहर, बरहर,गुल्लैर, सीरीष, शीशो आ नीमक गाछ अछि। केतेको आमक गाछक स्वरूप सुन्दर तँ केतेको विकृतो अछि। गामक बुढ़-बुढ़ानुसक कहब अछि जे किछु बर्ख पूर्व ई गाछी जंगल सन छल। दिनोमे अन्हारे आ डेरौन लगै छल। तँए लोक एकरा 'भुतहा गाछी'क नाओंसँ जनै छल। बरसातक समयमे गाछी घनघोर जंगल जकाँ भऽ जाइ छल। जइमे बानर, सियार, हरिण, नीलगाए, जंगली सुगरक संग अनेको साँप-कीड़ाक बसेरा छल। मुदा किछु लोक सभ मिलि हिम्मत जुटा कऽ बहुतो जानवरक शिकार केलक आ किछु जानवरकेँ खिहारि-खिहारि भगौलक। मुदा अखनो बानर आ सियारक राज गाछीपर अछिए। जखन जानवर उकपात करए लगैए तखन जालमे फँसा भगबैए। वर्त्तमानमे गाछी जानवरसँ मुक्त भऽ गेल अछि।

बरखा बितते गामक लोक गाछीमे जे घास-झाड़-झंखार रहैए तेकरा काटि-छाँटि साफ कऽ सुन्दर बनबैए। गामक गरीब लोक गाछीमे पत्ता खड़ैर, सुखल ठौहरी जारैन खातिर लऽ जाइए। जारैनक

समस्या जे गरीबमे बनल रहैए, ओ समस्या ऐ गाछीसँ दूर करैए।

वसन्तक आगमन होइते बच्चा-बेदरू, स्त्रीगण आ बुढ़-पुरान सभ कियो गाछीमे नि:सन्देह जाइए। गामक सैयो धिया-पुता खेल-कूद करैए। किछु पुरान विशाल गाछ जे सुखि जाइए तेकरा गाछक मालिक काटि-काटि लऽ जाइए आ ओइ स्थानपर नव गाछ रोपि दइए। अखन तँ ओ गाछी सुन्दर-मनोरम लगैए। जे गाछी पहिने भुताहि आ डेरौन छल। अखन गामक लोककेँ सुख-दुखमे सहायक बनल अछि। जाड़क समयमे गरीब लोक पत्ता खड़ैर टाल लगा जारैनक भण्डार करैए। सुखल डारिक ठेहुरीसँ घूर जरा जाड़ भगबैए। कुम्हार लोक ओइ गाछीसँ पत्ता खड़ैर ओइ पत्तासँ आबा लगा माटिक बरतन पकबैए आ हाट-बजार बेच गुजर करैए।

जाड़क अन्त होइते वसन्तक आगमन होइए कि गाछी मज्जरसँ वौड़ाए जाइए। मज्जरक गमकसँ वातावरण सुगन्धित भेलासँ गाछीमे मधुमाछी भनभनाइत मधुक छत्ता लगा मधु जमा करैमे मस्त भऽ जाइए। कोयली, पपीहाक संग रंग-रंगक चिड़ै-चुनमुनी डारिपर बैस वसन्ती हवामे झूलि-झूलि अपन-अपन मधुर गीत सुनबैए। बच्चा-बेदरू, किशोर-किशोरी सभ गाछीमे तरह-तरह केर खेल खेलैत वसन्ती माहौलक आनन्दसँ पुलकित होइए। देखते-देखते किछु दिनमे मज्जरसँ टिकुला देख गाछीक मालिक सभ प्रसन्न भऽ खोपड़ी आ मचान बना गाछीक ओगरवाहि करए लगैए।

जखने आम कोशा जाइए तखने तँ गाछीक शोभा एतेक रमणीय भऽ जाइए जेकर वर्णन केनाइ साधारण विद्वानक लेल सहज नै अछि। गाछ फलक भारसँ झूकि लोककेँ सदिखन जेना किछु कहए लगैए तहिना भऽ जाइत अछि। तेज हवा आकि अन्हर जखने अबैए तखने सभ लोक, दिन हुअए कि राति, उठि-पुठि कऽ गाछीए आबि

आम बीछ-बीछ लऽ जाइए। कहियो-कहियो तँ आमक खातिर झगड़ा-झंझट सेहो भऽ जाइए। मुदा बुजुर्ग आबि झंझटकेँ सुलझा दइ छैथ। जखन रोहैण नक्षत्रमे आम पाकब शुरू होइए तखन गाछबलाक अलाबे आनो-आन सभ आम बीछि लऽ जाइए। दिनकेँ के कहए जे रातियोमे नीन हरा जाइ छइ। राति अन्हरिया हुअए कि इजोरिया एक दोसराक गाछक आम बीछि कऽ भागि जाइए।

गाछीमे आम पकैसँ पहिने गाछीक मालिक वा रखबार गाछीक रखबारि करए लगै छैथ। किछु मालिक अपने नै कऽ सकै छैथ तँ दोसरकेँ रखबारि दऽ दइ छैथ। एक राति बिरजू मालिकक आम बुधुआ आ चुनुआ चोरा कऽ बिछैत रहए। ओइ समयमे बिरजू मालिकक बेटी अड़हुलिया आ हुनकर पुतोहु वीणा, गाछी पहुँचली। ओ दुनू गोरे देखली जे बुधुआ आ चुनुआ आम चोरा कऽ बीछि रहल अछि। मालिक खोपड़ीमे नीनसँ सुतल छला। दुनू ननैद-भौजाइ मीलि कऽ दुनू आमक चोरकेँ हिम्मतसँ पकैड़ लेलक। चुनलाहा आमक जलखरी छोड़ि चुनुआ हाथ छोड़ा कऽ भागैमे सफल भऽ गेल। मुदा बुधुआकेँ दुनू ननैद-भौजाइ मिलि कऽ दबोचि जोर-जोरसँ हल्ला करए लगली।

हल्ला सुनि बिरजू मालिकक नीन टुटलैन। नीन टुटिते बिरजू मालिक दौग कऽ आबि बुधुआपर बिगड़ैत बजला-

“अँए रौ बुधुआ, तोरा ई केना हिम्मत भेलौ जे हमर आम चोरा कऽ भागि जाइ छँह। तोरा ई नहि बुझल छौ जे साए दिन चोरकेँ होइ छै तँ एक दिन साधुओकेँ होइ छै। ई केतुका कानून छै रौ। आँखि बन्न आ डिब्बा गाइब। ई तँ हमर बेटी-पुतोहु फ्राउन्टेपर पकड़लकौ मुदा हम पकैड़तियौ तँ जहिना तूँ आम खा आँठी फेंक दइ छीही तहिना हम तोरा खा कऽ तोहर हड्डीकेँ फेंक दैतियौ।”

एतेक बात सुनि बुधुआ जोरसँ गरजैत बाजल-

“ई हाल हमरा अहाँ की करब। अहूँ ने जेलक जरलाहा रोटी खा कऽ अपन किश्मत जारि लेब।”

बात बढ़ि कऽ बतंगर भेल जाइत रहइ। गाछी लोकसँ भरल रहइ। कियो कहै खूब मारू, हाथ-पएर तोड़ि दियौ तँ कियो कहै जानसँ नै मारियौ मालिक।सभ लोक बैस शान्तिसँ दण्ड-जुरिमाना लीअ। तँ कियो कहै छोड़ू की नाहँकमे आमक खातिर झगड़ा बढ़बै छी। झगड़ा-रगड़ासँ दुश्मनी हएत, अनेरे कोट-कचहरीक फेरामे पड़ब।

बाता-बाती होइते रहै कि बुधुआक बाप झगरू, मंगल काका आ गामक मुखिया धनपति बाबूक संग गाछीमे पहुँचला। मुखियाजीकेँ पहुँचिते सभ लोक शान्त भऽ गेल।

मुखियाजीक जेहने नाम छैन तेहने मनो। धनपति बाबू मनक धनी लोक सेहो छैथ। मुखियाजी बिरजू मालिक आ बुधुआसँ बेरा-बेरी बयान सुनि दुनू गोरेकेँ समझाबैत बजला-

“देखू, हमरा-अहाँसँ जानवर आ गाछ-बिरीछ नीक अछि। जानवरो बड़का-छोटका मिलि कऽ प्रेमसँ जंगलमे रहैए। तहिना गाछो-बिरीछ गाछीमे वा वन-जंगलमे बड़का-छोटका एके संगे मिलि कऽ रहैए। हमहूँ सभ बड़का-छोटका मिलि कऽ संगे रही। तखने जिनगीमे शान्ति भेटत आ बेसी खुशीसँ जीवन कटत। ई छोट-छीन बातक खातिर की झगड़ा करै छी। मानलौं बुधुआ आम चोरा कऽ बीछि लेलक। एकटा बातपर विचार कऽ अहाँ सभ कहू जे ई गाछी जखन जानवरक अड्डा छल, घनघोर जंगल छल तखन ई गाछी भुतहा गाछीक नाओंसँ जानल जाइ छल। तइ समयमे गामक गरीबे सभ मिलि जानवरकेँ भगौलक आ जंगल-झाड़केँ काटि साफ केलक। तँए आइ ई गाछी स्वर्ग सन बनल अछि। गामक बुढ़ लोकक कहब अछि

जे बुधुआक दादा कालेसर अही गाछीक गछकट्टीमे दबि मरि गेला। आइ कालेसरक बेटा-पोता पाँच-दसटा आम खसल-पड़ल बीछि लेलक तँ कोन बड़का जुलुम केलक। तखन बिना पुछने रातिमे आम बिछलक से गलती भेल। ऐ गलतीकेँ सभ कियो माफ कऽ दियौ आ बुधुओ अपन गलती स्वीकारत।”

मुखियाजीक बात सुनि बुधुआ अपन गलती स्वीकारैत हाथ जोड़ि माफी मांगलक।

अन्तमे मुखियाजी कहलखिन-

“आजुक समाजमे जे परिस्थिति अछि जइमे कोन गलत आ कोन सही अछि तेकरा फरिछाएब बड़ कठीन अछि। तखन एहेन गलती नै करी जइसँ उलैझ समाजे पछुआए जाए। क्षमासँ महानता सेहो बढ़ैए आ समाजक संतुलन सेहो बनल रहैए। जँ छोट-छोट बातक उलझनमे पड़ब तँ लड़ि-झगैड़ कऽ सभ मरब आ समाजक विकास रूकि जाएत। आइ धरि लड़ाइ-झगड़ासँ किनको किछु नै भेटलै। फोकटमे हानि छोड़ि लाभ नहि भेल।”

मुखियाजीक अदर्शवादी वचन सुनि सभकेँ ज्ञान भेल। सभ कियो एके स्वरमे बाजल-

“ई गाछी हमरा सबहक पैतृक धरोहर छी, समाजक इज्जत छी।”

❒

शब्द संख्या : 1021

कमतिया हबेली

जानकी घोलाति आ मधुमाछी जकाँ भनभनाइत रस्ता धेने घर जाइ छेली। रस्ते कातमे मदीना दादी बैस किनको बाट जोहि रहल छेली। मदीना दादी झुनकुट बुढ़, सौंसे गामक लोक दादी कहि उद्बोधन करै छैन। नजैर पड़िते मदीना दादी जानकीसँ पुछि देलखिन-

“जानकी केतए-सँ अबै छहक। एकटा काज कऽ दाए तखन जइहह।”

जानकी बजली-

“दादी एकटा की दू-चारिटा कऽ देब मुदा घरपर कियो नइए आ ओसरापर चिल्हकाकेँ सुता कऽ गेल छेलौं। बहुत अबेर भऽ गेल, कनैत हएत।”

मदीना दादी बजली-

“हइ, तूँ बड़ हड़बड़िया छह, एतेक देर तोरा कोनो चिन्ते ने छेलह आ हम टोकि देलियह तँ हड़बड़ी लगि गेलह! हमरो घरपर कियो नइए, हमरा चाह पीबैक मन भऽ गेल। चुल्हिपर पानि खोला दूध दऽ चाहक पत्ती देलिऐ, चीनीक डिब्बा खोलि जखन चीनी दैतिऐ तँ चीनीए नहि। लेधुरिया सभ डिब्बा खोलि सभटा चीनी खा गेल। तूँ कनी चुल्हबा दोकानसँ दू टकाक चीनी लाबि दाएह। चाह बनिते अछि

हमहूँ पीब आ तोहू पीबि लिहह।”

जानकी बजली-

“दादी, दोकान दूर अछि हम अपने ऐठीम जाइ छी चिल्हको लऽ लेब आ चीनीओं नेने अबै छी, तखने बैस गप्पो करब आ चाहो पीब।”

मदीना दादी निराश नइ भऽ आश भरल नजैरसँ निहारैत बजली-

“जा तूँ कोनो कम गहींरगर छह।एके तीरे दूटा शिकार करए चाहै छह।”

जानकी रमकैत-दमकैत घर दिश विदा भेली। घरसँ दूरे छेली कि चिल्हकाकेँ कनैक अवाज सुनली। अवाज अकानिते दुलकी दैत आँगन जाधैर पहुँचली ताधैर चिल्हका कनैत फफचीहारि काटि, उनैट-पुनैट ओसारसँ निच्चा आँगनमे गिर गेल छल। हाँइ-हाँइ नूनू बौआ कहि जानकी कोरामे लऽ छातीसँ सटा दूध पीबए लगली। चिल्हका दूध पीबिते अलिसा गेल। कागतक टुकड़ीमे चीनीक पुड़िया बना एक हाथमे लऽ चिल्हकाकेँ कोरामे सम्हारि-पकैड़ मदीना दादीक घर दिश विदा भेली।

मदीना दादी चुल्हिपर कखनो चाहो निहारैत आ कखनो रस्तोपर नजैर दौड़बैत रहैथ जे जानकी कखनी चीनी लऽ कऽ आएत जे चाह बनत।

जानकीकेँ कनी देरी भेलासँ चुल्हिपर चाहो उधिया-उधिया अधजरू भऽ गेल। मदीना दादी आश लगौने ने अगुतेली आ ने घबड़ेली। ओ जनै छेली जे जानकी चिल्हकौर छी चिल्हकाक लटारममे लगि गेली।

मदीना दादीक मन खुद-बुद होइते छेलैन कि जानकी हहाइते

पहुँचली आ बजली-

“दादी की कहू, कनियोँ अँगना जाइमे देरी होइतए तँ हमर चिल्हका प्राण तियागि दइतए। ओकरे सम्हारैमे लटारम भऽ गेल, तँए देरी लगल।”

मदीना दादी बजली-

“से तँ तूँ बड़ होशियारि-सुतिहारनी छह। जे मनमे ठानै छह से कए कऽ दम मारै छह। लाबह चिल्हकाकेँ हम पकड़ै छी, तूँ चाहमे चीनी दऽ छानि दूटा गिलासमे नेने आबह। चाहो पीअब आ गप्पो करब।”

जानकी चुल्हिपर चाह देखलक तँ ओ खदैक-खदैक कऽ अधजरू भऽ गेल छल। सुगन्धो चहाइन-चहाइन, जल्दीसँ तीन-चारि चुटकी चीनी दऽ हिला-मिला कऽ उताइर दूटा गिलासमे लऽ मदीना दादी लग एली।

एक गिलास मदीना दादीकेँ आ दोसर गिलास अपने लेली। चाह तँ जरि कऽ जराइन भऽ गेल छल मुदा पीबैमे सुअदगर रहइ। दू-चारि घोंट लैत मदीना दादी जानकीकेँ टोकलखिन-

“जानकी तूँ तखनी केतए-सँ अबै छेलहक से तँ नै बजलह?”

जानकी बजली-

“दादी, की कहू! अपन हारल, हाथतर गेने कहैमे अपने संकोच होइए। मुदा हिनका नै कहबैन से उचित हएत। जा कहब नै ता समाधानो केना हएत। बहुत दिनक बाद मालिकक हबेली गेल छेलौं।”

बिच्चेमे मदीना दादी बजली-

“की कोनो पैघ बात वा काज छेलए की?”

जानकी बजली-

“दादी, हमरासँ तँ बेसी अनुभव हबेलीक अहींकेँ हएत।”

मदीना दादी बजली-

“हबेलीकेँ तँ हम आब नाओं चर्च नै करै छी। ओकरे मारल तँ तीन पीढ़ीसँ दुख काटि रहल छी। पहिने तूँ कहऽ ने जे हबेली किए गेल छेलह?”

जानकी बजली-

“दादी, अहूँ खैन-खा कऽ हमरेपर लगल छी। कहुना छी तँ गामक मालिकक हबेली छी किने, जँ कनियोँ बाजबमे हुसि जाएब तँ गामोमे ने बास हुअ देत।”

मदीना दादी बजली-

“तोरा ने डर होइ छह, हम तँ हबेली कहियो ने मानलिऐ आ ने मानै छिऐ। ओइसँ नीक तँ गामक गरीब-दुखिया जे जाइते मातर टुटलोहो ओछाइन बिछा आदरसँ बैसा कऽ हाल-चाल पुछबो करैए आ एक गिलास पानि-चाह पीआ कऽ विदा करैए। दुखो-सुखक धड़ीमे सोझहा आबि मदैत करैए। मुदा जेकरा तूँ हबेली कहै छहक आ आनो सभ कहै छै तेकरा हम कमतिया बुझै छी।”

जानकी बजली-

“से केना दादी! जे गामक मालिक जमीन्दार छैथ ओ कमतिया केना भेल?”

मदीना दादी बजली-

“तूँ बुझबहक केना, तोहर उमेरे की भेलह हेन। ओ की गामक डीहबासू छी। ओ तँ बाहरसँ आबि गाममे बसि कऽ सबहक जमीन हरैप जमीनदार बनि गेल आ गामक लोककेँ गुलाम जकाँ दिन-राति

खटबए लगल। जेतेक शोषण आ दुख ने कमतिया सभ समाजक लोककेँ देलकै जे समाज टुटि छिड़िया गेल। तेकर नाम तोँ ऊँचगर करै छह, तोरा अखनी परिचय नै लगलह हेन।"

जानकीक मोनमे जिज्ञासा बढ़लै आ अचरज सेहो भेलै तखने मदीना दादीसँ पुछि पड़ली-

"दादी नै बुझलौं कमतिया हबेलीक किरदानी। कनी फरिछा कऽ बता दिअ।"

मदीना दादीक मनमे जेना उमकी एलैन तहिना उमकैते बजली-

"तूँ बुझबहक केना! भरि दिन तँ अपन दुख-धन्धामे लगल रहै छहक, ओइसँ जे समय भेटै छह तँ फहरदवाल मारि ऐ अँगनासँ ओइ अँगना गाल बजबै छहक। कहियो ई भेलह जे गामक बुढ़-बुजुर्गक लगमे बसि गामक बितलाहा दिनक चर्च करी आ ओहन-ओहन बातक कान धरी जे आगू काज देत।"

जानकी बजली-

"दादी, जहियेसँ होश आ बोध हएत तहियेसँ ने सीखब-बुझब। एतेक दिन तँ गरीबीए-मे दिन काटलौं, अखैन धीए-पुतामे ओझराएल रहै छी। जहियासँ हबेली छोड़ि दुनू परानी अपन काजकेँ गहि कऽ पकड़लौं तहियासँ महड़ा भादोकेँ खाइ छी। घरबला छह मास घरक काज करैए आ छह मास परदेश कमा लबैए, तँए दू सेर अन्नो देखै छी आ दूटा रूपैओ।"

मदीना दादी बजली-

"हबेलीक काज किए छोड़ि पड़ेलह?"

जानकी बजली-

"की कहबैन दादी, जाबे हबेलीक काज करै छेलौं ताबे पेटो ने

भरए। काजक मजूरीबला काज कम, बेगारीए बेसी खटै छेलौं। दुपहरिया लगा कऽ दुनू परानी खटै छेलौं आ बोइन तँ दूर रहए, पनपिआइयो ने भरि बुत्ता भेटै छेलए। खेतीक काज करै छेलौं तँ बोइनो ऐ सालक पौंरुका, पौंरुकाबला बोइन तेंसरा झझमझेसँ दइ छेलए। कहियो भाभंस नै भेल जे दुनू साँझ चुल्हि पजारितौं।”

मदीना दादी बजली-

“आइ किए, कथी-ले कमतिया ऐठीम गेल छेलहक से ने कहह।”

जानकी बजली-

“दादी, अहाँसँ छाम की। हमरा तँ मन जरैए। जँ अहाँकेँ कहब तँ सुनिते अहूँकेँ देहमे आगि नेसि देत।”

मदीना दादी बजली-

“तूँ की कहबह कमतियाक किरदानी, हम तँ सभ खेल-बेल देखने-भोगने छी आ देह लगा मारने छी। मुदा बताबह ने तोरा की भेलह।”

जानकी बजली-

“दादी, पौंरुका साल अखाढ़-सौनमे हबेलीबला मालिक दुहारिक माटि बुझू खाए गेल। भोरमे अन्हरौखे आबि निहोरा करैत कहै लगल जे हमर खेत अफारे रहि जाएत। गोरहा खेत छी कहुना धनरोपनी कऽ दएह। चास नहि लगत तँ बास केना हएत। सुनि हमरो मन ढलि गेल। हमर घरबला हर जोति गजार-कादो करए आ हम किछु बोनिहारक संगे धनरोपनी कऽ देलिऐ। एक दू दिन नै दुनू परानी बीस दिन खटि देलिऐ। बीस दुनी चालीस पेसरी बोइन भेल। माने पाँच मन भेल। पाँच मनमे तीन मन तँ कहुना कहि-सुनि देलैन मुदा दू मन धान अखन धरि नै देलक। सालसँ बेसी भऽ गेल। एक तँ

आसीन-कातिक मास अहुना सालक तेरहम मास होइए, तहुमे एतेक रास पाबैन-तिहार...। खर्चे-खर्च...।

घरबला बाहर कमाइले जाएत। सोचलौं हबेलीमे दू मन धान कमाएल बोनि अछिए, आनि कऽ एक पसेरी धान चूड़ा-ले ताड़ि देबै आ एक पसेरी धान भाड़ि-ताड़ि कऽ मुरहीक चाउर बना लेब। हाथे मुसरे चूड़ा कुटि लेब दोसर दिन मुरही भुजि देबै जे घरबलाक बटखर्चा दऽ देबइ। जे धान बँचत तेकरा उसैन सुखा कुटि लेब। ओइ चाउरसँ कातिक खेप जाएत।"

मदिना दादी बजली-

"की भेलह, देलकह आकि नै देलकह?"

जानकी बजली-

"की कहूँ दादी, कोनो की एक दिन बोइन-ले हबेली गेलौं हेन। जाइत-जाइत टाँग टुटि गेल। बोइन जोखैमे घिघरी कटबैए। अखैन तक नै देलक। जखन जाइ छी तँ बेगारीए काज अढ़ा दइए। कहु ने हम अपने चिल्हकौर छी। सक-बुत्ता लगबे ने करैए, केना भिरगर काज कऽ देबइ। अही खातिर हमर घरबला आनठाम काज करैए मुदा हबेलीक काज नै करैले जाए चाहैए।"

मदीना दादी बजली-

"आब तूँ बुझि गेलह, बोइन आनैमे तेरह डिबिया तेल जरि जेतह। हमरो घरबला ऐ कमतिया हबेलीक अढ़ौती आ बेगारी खटैत-खटैत दुनियाँसँ चलि गेला। एक मन मरूआ आ दू मन धान कर्जामे नेने रही तेकर सुदिक सुदि जोड़ि कऽ कर्जे तरमे दस कट्ठा चौमास आ दू कट्ठा बासडीहो लिखा हरैप लेलक। ई जे हमर डीहबास देखै छहक से सरकारीए परती छिऐ। घरबलाक मुइला पछाइत जखन बास डीहपर सँ भगा देलक तखन हमर दुनू बेटा माथपर छिट्टामे माटि उघि-

उघि भरि कऽ बाँस-खुट्टा ऐ समाजसँ मांगि-चांगि कऽ घर बनौलक आ हमहूँ बुढ़ारीमे राति दिन संग देलिऐ। दुनू बेटा कमतिया हबेली आइ धरि घुमि नै गेल। काजे ने एतेक सीखौने छी जे कहियो बैस नै खाइए। काजक लूरि रहने काजे चढ़ल रहैए। तूँ हबेलीक फेरमे लगले छह।"

बिच्चेमे जानकी बजली-

"दादी, हम कमेलहा बोइन नै छोड़बै। हमरोसँ सूदिक सूदि जोड़ि नेने अछि। आइ जँ हमहूँ कहिये देलिऐ जे बोइन राखू दू मनक तीन मन असूल कऽ लेब, अहाँक अन्नो-पानि दुना-तिगुना बढ़ि जाइए आ गरीबक बोइन जे छह मास, साल भरिक पछाइत देबै तँ ओकर सूदि नइ हेतइ। हमहूँ सूदि लगा कऽ लेब।"

मदीना दादी बजली-

"सुना कऽ कहलहक की नहि?"

जानकी बजली-

"सुना कऽ! चिकैर कऽ कहलिऐ। जहाँ ने कि सुनलक कि जेना बिढ़नी कटलापर लोक छिटपिटा उठैए तहिना छिटपिटा लगल। मुदा किछु कहैक साहस नै भेलइ। जँ किछु बजितए तँ समाजसँ दस बेकतीकेँ बजा पानि उताइर दैतिऐ।"

मदीना दादी बजली-

"साँझ पड़ि गेल। छोड़ह अखैन हबेलीक गप-सप्प। जेते काल ओझराएल रहब तेते काल घरक काज पाछु पड़ि जाएत। सौंझुका पहर बीतल जाइए, पहिने घरमे साँझ-बाती देखा लइ छी।"

जानकी बजली-

"दादी, हमहूँ जाइ छी साँझ-बाती दइले। अबेर भऽ गेल।

चिल्हको सम्हारब आ भानस-भात करब। काजपर सँ घरबला अबै छैथ तँ सबेरे खा कऽ सुतै छैथ। मुदा कमतिया हबेलीक किरदानी कहियो फलिसँ सुना देब।"

मदीना दादी बजली-

"कहियो किए बजलह, आइ अबेर भऽ गेल आ अखन गपक बेर नै काजक बेर छी तँए, अखन तहूँ जा काल्हिये दुपहरियामे अबिहह फलिसँ सभ गप सुना देबह।"

मदीना दादीकेँ गोर लागि जानकी अपन घर दिस विदा भेली। कमतिया हबेलीक किरदानी बुझैक जिज्ञासा मनमे बढ़िये गेल छेलैन। मनमे होइत रहैन जे कखनी राति बितत जे काल्हि दुपहरमे दादी लग जाएब। सभ काज सम्हारि भानस-भात कऽ पतिकेँ खीआ अपनो खा कऽ सुति रहली। भिनसरे उठि हाँइ-हाँइ काज कऽ पनपिआइ आ खेनाइ बना काजसँ निवृत्त भऽ गेली। चिल्हका नेने दुपहरियेमे दादी लग पहुँचली।

मदीना दादी नहा-खा हुक्कामे चिलम बोझि सोंट मारि सुनगबै छेली। दादी जानकीकेँ अबैत देख बजली-

"कनियाँ, पुबरिये ओसरापर बैसह। किए तँ तोरा कोरामे चिल्हका छह एतए बच्चाकेँ हुक्काक धुइयाँ लगि जेतह। हमहूँ उठि कऽ पुबरिये ओसरपर अबै छी। अखैन कोनो काजो नहियेँ अछि। निचेनसँ गप-सप्प करब।"

जानकी बजली-

"दादी, अहाँ ने काजसँ निचेन छी मुदा हम तँ असगरूआ छी, बहुत काज पछुआएल अछि। तोहूमे अपने परदेश जाइबला छैथ। हुनको ओरियान करए पड़त। हम तँ कमतिया हबेलीक किरदानी जनैले अहाँ लग एलौं हेन। काल्हि ने हमरा आ ने अहाँकेँ समय रहए

जे बता दइतौं।"

मदिना दादी बजली-

"चटपट नै करह कनियाँ, पहिने कनी हुक्का पीअ दएह तखन निचेनसँ गप करब।"

मदीना दादी जोर-जोरसँ सोंट मारि हुक्का पीबए लगली। चिलमक कंकर जरि गेल तखन हुक्का मोख लग गड़ लगा ठाढ़ कऽ पुबरिया ओसारपर आबि चटकुनी बिछा बैसली।

दुनू गोरेमे चौबगलीक गप-सप्प शुरू भेल। जानकी चारू कातक गपक भूमिका बान्हि कमतिया हबेलीक केन्द्र बिन्दु बना मदीना दादीसँ पुछि देलखिन।

मदीना दादी बजली-

"जखन भागवतक कथा जकाँ कहबह तँ सुनबहक तँ मुदा एक कानसँ सुनबहक आ दोसर कानसँ बोहि जेतह। से नहि तँ तपसी जकाँ धियान लगा सुनबहक तखने किछु जानबो करबहक आ हमरा मुइला पछाइत गाममे तोहू ने दादी हेबहक, जेना आइ हम छी। गाममे केहेन-केहेन कारनामा सभ भेल मुदा लोक सहैत रहल, ने कियो बुझैले तैयार आ ने कियो विरोध केलक। मुदा आजुक दिन किछु बदैल गेल आ लोकोमे विचारो बदललैए। जे नजायजकेँ विरोध करए लगलैए। तैयो समाजमे पछुआएलकेँ मौजरे केतेक छै जे विरोध करत। अखनो गरीब लोकक डेग-डेगपर शोषण होइ छै आ ओ देह लगा सहैत रहैए, ओकर संगो दइबला कियो ने तैयार होइ छइ।"

कनखरल जानकी बिच्चेमे पुछि देलखिन-

"दादी, की गरीबक मुँहमे बोली नै छै, की विवेकक कमी छै जे एतेक दुख सहितो शोषित होइए। आखिर एकर कारण की अछि?"

मदीना दादी जोरसँ हुंकार भरैत बजली-

"सुनह तेकर कारण कोनो एकेटा छै जे झब-दे कहि देबह। बहुत रास कारण छै। एकरा लग महाभारतो फेल अछि। मुदा हमरा जे बुझल आ अनुभव कएल अछि तेकर एकटा अंश कहै छिअ। पहिने-राजा महाराजाक शासन चलै छेलै हुनका सबहक कानून बड़ कठोर! छोट-छोट गलती करैबलाकेँ नमहर-नमहर सजा भेटै छेलइ। लोक ओइ कठोर दण्डक डरसँ विलाइ बनल रहै छल। खेतक मलगुजारी बड़ करगर छेलइ। जइ साल उपजा होइ छेलै तइ साल तँ कहुना लोक मलगुजारी दइये दइ छेलै मुदा जइ साल रौदी वा दाही होइ छेलै तँ मलगुजारी चुकता नै कऽ पबै छेलइ। पहिने खेतीक अलावा ने दोसर कोनो साधन छल आ ने कोनो रोजगार, जइसँ लोक कमा कऽ पेट भरैत। गामक गाममे भुखमरी होइ छेलइ। गरीब लोक सभ बाल-बच्चा आ अपन घर-परिवार छोड़ि ढाका-मुंगेर, मोरंग कमाइले चलि जाइ छल। गामक जमीनदार कर्जे तरमे गरीबक सभटा जमीन लिखा हड़ैप लेलक। मलगुजारी नइ देलापर राजा सेहो खेत सभकेँ निलाम कऽ लइ छल। ओ जमीन सभ अपन लगुआ-भगुआ सभकेँ दऽ दइ छल। ओही निलामीबला जमीनक जागीर बना केतेको जमीनदार बनल। किछु लोक मुंशी-मनेजर आ शर्कलक हाकीमसँ मिलि कऽ गरीब आ किसानक जमीन जे निलाम होइ छेलै ओ कनी-मनी रूपैआ दऽ अपना-नामसँ जमीनक पट्टा बना लइ छेलइ। ऐ तरहेँ मिथिलाचंलक मूलवासी गरीब भऽ गेल। बहुतो डीहबासु सभ भूमिहीन बनि बिलैट गेल। जे जमीनबला छेलै से गरीब मजदूर भऽ गेल आ बाहरसँ आबि कमतिया सभ जमीनदार भऽ गेल। ओ सभ अपन-अपन कामत बना रहए लगल। ऐठामक भूमिहीन मजदूर पेटक खातिर कमतिया सबहक खेतमे मजदूरी, बेकारी, नोकरी-चाकरी करै छल। कमतिया सबहक धिया-पुता पढ़ि-लिख आनठाम हाकिम-

हुकाम बनि शहरमे रहैए आ कामतक जमीनक उपजासँ नेहाल भऽ गेल। तैयो संतोख नै भेलै। ऐठामक गरीब-मजदूरकेँ कर्जेतरे बेगारी खटैत-खटैत कहियो पर नइ भेलै जे विरोध करितै। जखन देश अजाद भेल तेकर किछु बर्खक पछाइत गरीब-मजदूरक यूनियन बनलै। कम्युनिष्ट पार्टीक लोक सह देलकै। गामे-गाम कमतिया सबहक जमीनपर लाल झंडा गारि डंका बजा-बजा चुनौती देलकै। खेतक उपजाकेँ लूटिस करौलक। तखन किछु कमतियाकेँ कमेदाममे जमीन बेचए पड़लै। मुदा जे कमतिया अपना सबहक समाजमे हिल-मिल रहए लगल ओ सभ कोठा-सोफा बना डीहबासु भऽ गेल। मुदा चालि-चलैन पूर्णत: नै बदललै। कहबी छै- चालि, प्रकृति आ बेमाए ई तीनू मुइने जाए। लोक सभ जे कहौ मुदा हम तँ सभ दिन कमतिया कहलिऐ आ अखनो कहै छिऐ। तूँ सभ ने धनिक आ कोठा-सोफा देख हबेली कहै छहक।”

बिच्चेमे जानकी बजली-

“दादी, अहाँक बात सुनि बहुत जानलौं मुदा अहाँ कमतिया कहै छिऐ आ हम हबेली कहै दिऐ, तखन दुनू जोड़ि कऽ कमतिया हबेली बाजब नीक नै हएत की?”

मदीना दादी बजली-

“बजबाक लेल मुँहक कोनो भाड़ा-खर्चा लगै छै, जे मन हुअ से बाजह मुदा उचित बुझि बाजबह तखन ने समाजोक लोक सीखत। इएह उनटा-पुनटा भेने ने आइ मिथिलाक लोक आनठामसँ बेसी गरीब अछि। जेकर सुधि आइ धरि कियो ने लेलक।”

❑

शब्द संख्या : 2385

घुमि गाम चलु

रबिया पत्नी संगे खेत आ चौमासमे तरकारी उपजा कऽ परिवार चलबैए। बैसारी समयमे घर-घरहटीक मजूरी सेहो करैत अछि। तइसँ भरि पेट भोजन तँ भेट जाइए मुदा बाहरी खर्चाक लेल कोनो आमदक साधन नै अछि। रबियाक पत्नी गर्भवती अछि। एक राति भोरबेमे पत्नी रधियाक पेटमे जनमासुतक दरद शुरू भऽ गेल। रबियाक हाथ छुच्छ, एको छदाम नै जे कोनो वैदकेँ बजा दवाइ-दारू करैत। मुदा भगवान ऐ बिपैतमे मदैत केलखिन आ सुहरदे बेटाक जन्म भेल। भोरे अन्हारेमे रबिया उठि गामसँ पल्हैनकेँ बजा देख-भालमे लगा आ दोकानसँ उधारे रधियाक किछु दवाइ, करू तेल आनलक। खुशी मने रबिया रधियाकेँ सोइरी घरमे खेनाइ-पिनाइपर धियान दैत रहल। बेटाक जन्मक खुशीमे गुड़-आदी गाममे बाँटलक। मुदा छठमा दिन छठीहारक लेल रबियाकेँ चिन्ता रहए जे छठीहारक समान आ नवका वस्त्र इत्यादी केना आएत। रबियाकेँ एकटा उपाय सुझल जे किछु खेत भरना राखि महाजनसँ रूपैआ उठा सभ काज सम्पन्न कऽ दइ छी आ फेरो कमा कऽ रूपैआ महाजनकेँ सठा खेत आपस लऽ लेब। ऐ तरहेँ रबिया काज सम्पन्न केलक। बेटाक जन्म गरीबी आ दुखक समय भेल तँए नाओं रखलक- दुखना।

दुखनाक जन्म भेने रबियाकेँ परिवारक खर्च बढ़ि गेल। कहियो

दवाइ तँ कहियो तेल-कुर आ कहियो नुआँ तँ कहियो खेलौना। खेत पहिने भरना लगल रहए, चौमाससँ खर्चा पुंगबे ने करइ। आ अपनो घरेमे ओझराएल रहए। बोइन-मजूरी करि कऽ कोनो धरानी पेट भरैत गेल। दू बर्खक पछाइत बेटीक जन्म भेल। दुखक घड़ीमे परिवारक खर्चा बढ़ैत गेल।

एक दिन रबिया पत्नी रधियासँ विचार केलक जे आब आगू दिन केना कटत? रधिया बजली-

“बेटा-बेटी नमहर हएत तँ काजक मदद अहूँकेँ आ हमरो करत। ताबे कोनो तरहेँ दिन खेपु आ हमहूँ सकताइ छी तखन दुनू गोरे कमाएब। तइले किए मन छोट करै छी।”

दिनो बढ़ल आ बेटो-बेटी बढ़ि सियान भऽ गेल। रबिया विचार केलक जे पहिने बेटीक बिआह कऽ लेब पछाइत बेटाक बिआह करब। किए तँ बेटीक बिआहमे दान-दहेज लगत। जँ पहिने बेटाक बिआह करब तँ बेटीक बिआह बेरमे बेटा-पुतोहु अरंगा करत।

रबियाक बेटी अड़हुलिया बड़ सुन्नर, चतुर आ काजमे कुशल अछि। गामो-समाजक लोक अड़हुलियाकेँ देख सराहैए। बगलेक गामक धनिक लाल बाबू प्रतिष्ठित बेकती छैथ। ओ अपन बेटा लेल अड़हुलियाक हाथ मंगै खातिर रबियाक घर पहुँचला। रबिया बाजल-

“हम गरीब छी, अहाँ धनीक। हम केना अहाँमे सकब जे अहाँक बेटासँ अपन बेटीकेँ बिआहब।”

मुदा धनिक लाल बाबू अपन घरमे कुशल गृहणीक अत्यन्त जरूरी बुझि आ सुन्नर कन्या देख, सोचैत-विचारैत रबियाकेँ कहलक-

“देखू रबि, सम्बन्ध दिलक मिलानीसँ होइए धनसँ नहि। हमरा अहूँ किछो नै देब। मात्र कुल लक्ष्मीसन कन्या खुशी-खुशी देब बाँकी सभ काज हम समझब। अहाँक कोनो खर्च नै करए पड़त। हम अपना

बेटा आ परिवारमे सभकेँ समझा-बुझा लेब।"

रबिया सभ बात सुनि मने-मन सोचलक धनिकलाल बाबूक विचार उत्तम छैन। हमरा नै कोनो खर्च हएत, हमर बेटी सुखी घर जाएत। तहि क्रममे गप-सप्प चलिते रहए कि धरक बनल अड़हुलिया हाथक स्वादिष्ट जलखै आ चाह भेल। रबिया उठि आँगन जा कऽ पत्नी आ बेटासँ विचारि दरबज्जापर आबि धनिकलाल बाबूसँ बाजल-

"देखू, हम अपनेक प्रतिष्ठा राखलौं। शादीक रिस्ता मंजूर करै छी मुदा हमरो इज्जत अहाँ राखब।"

जखने बिआहक बात गामक लोक सुनलक तँ दाँते औंगरी काटए लगल। कियो कहए जे बिआह केना हेतै, किएक तँ अमीरी-गरीबीमे बड़ फर्क होइ छइ। मुदा अधिक लोकक सोच रहै जे अहिना सम्बन्ध अधिक लोक करत तखन ने ऊँच-नीचक खाधि मेटाएत आ समाजसँ दहेज प्रथाक अन्त हएत। किछु लोक तँ परोक्षेमे विरोध करए मुदा गामक अधिक लोक प्रसन्न अछि जे गरीबक बेटीक बिआह नीक घर-बर आ प्रतिष्ठित परिवारमे भऽ रहल अछि।

रबिया बेटीक बिआहक तैयारीमे जुटि गेल। मुदा सोचैत रहए दहेज ने नै दिअ पड़त, तैयो तँ बेटीक बिआह आ विदाइ करबामे बहुतो समानक जरूरत पड़बे करत किने। बरियाती आ कुटुम सबहक मान-मर्यादा, खान-पानक लेल रूपैआक इंजाम करैये पड़त किने।

रबियाक किछु खेत पहिने भरना लगल छल आ शेष जे पाँच कट्ठा बँचल छेलै ओहो भरना लगा अपन बेटीक बिआहक काज सभ मिलि करए लगल।

बिआहक दिन बरियाती समयपर पहुँचल। गामक लोक सभ आ उपस्थित कुटुम सभ मिलि बरियातीक स्वागत करए लगल। नाश्ता-पानि, चाहक पछाइत वर्तमान रीति-रेबाजसँ दुल्हा-दुल्हिनक

बरमाला भेल। दुल्हा-दुल्हिनक जोड़ी देखैले गामक लोक उमैड़ पड़ल। सभ मने-मन राम-सीता सन जोड़ीकेँ असिरवाद देलक। बिआहक काज शुरू भेल आ बरियाती-सबहक भोजनक बिजौ भेल।

बिआहक काज सम्पन्न भेला पछाइत रबिया बेटीक विदाइमे लगि गेल। बेटी आइ नैहरसँ सासुर जेती तिनकर भार-दौर बरदगड़ीपर साँठि आ दोसर गड़ीपर पलंग, कुर्सी, अलङा, पीढ़िया, आलमारीक संग अनेकानेक चीज-वौस लादि बान्हि तैयार केलक। तेसर संफनीबला गड़ीपर ओहार दऽ दुल्हा-दुल्हिनक विदाइ कऽ रबिया अपन समधी- धनिकलाल बाबूक देहपर साल ओढ़ा कऽ गला-सँ-गला मिलल आ बाजल-

“समधी बाबू, अड़हुलिया आब हमर बेटी नहि, आब अहाँक छी। हम जे सकलौं से पुरा केलौं। कुल लक्ष्मी अहाँक देलौं।”

धनिक लाल बाबू रबियाक धिरज बान्हैत वचन देलखिन-

“अहाँक बेटी आब हमर इज्जत आ लक्ष्मी छी। हमरा रहैत कोनो तरहक कष्ट नै हएत।”

अड़हुलिया अपन सासुर पहुँच कऽ खूब खुशीसँ रहए लगली। कुशलतासँ सासु-ससुर आ पतिक सेवा, घरक काज, सुन्दर विचार आ बेवहार देख सभ कहए जे एहेन पुतोहु भगवान सभकेँ देथुन जे सबहक घर स्वर्ग बनल रहत।

अड़हुलियाक कमी रबियाक घरमे हुअ लगल। घरक काज आ ऊपरसँ मजदूरियो करबाक चिन्ता रबियाकेँ बढ़ि गेल। काजक भारसँ रधिया बेमार पड़ि गेल। रबिया विचार केलक जे बेटा- दुखनाक बिआह कऽ लइ छी। पुतोहु घरक काज करती, तइसँ पत्नीक काजक भार सेहो कमि जाएत आ किछु आराम सेहो भेटत। मुदा पुतोहु अपने बेटी सन काजुल बेवहारी आ सुन्नर करब।

एक दिन रबिया सनेश नेने बेटीसँ भेँट-मुलाकात करैले जाइत रहए। रस्तामे सोचबो करए जे समैधसँ बेटाक बिआहक चर्च करब।

समैधक घर पहुँच बेटीसँ भेँट करि समैध लग रबिया बैसल। गप-सप्पक क्रममे रबिया अपन बेटाक बिआहक चर्च केलक । समैध बजला-

“हमरा गामेमे पुबरिया टोलमे हमर पुरान मित्र रघुनीजी छैथ। हुनकर बेटी बुधिया बड़ सुन्नर, बड़ काजुल आ सुशील सेहो अछि। जखन अहाँ अपना बेटाक बिआह केतौ करब तइसँ नीक रघुनीजीक बेटीसँ करू। दुनू गोरे घुमैत-फिरैत चलू हम मित्रसँ भेँटो कऽ लेब आ बिआहक चर्च सेहो करब।”

टहलैत दुनू समैध रघुनीजीक द्वारिपर पहुँचला। चाह पीबैक क्रममे बुधियाक बिआहक चर्च भेल। रघुनीजी बजला-

“धनिकलाल बाबू, बुधिया कोनो हमरेटा बेटी छी आ अहाँक नहि छी। जेतए बढ़ियाँ हुअए, हमरो विचार रहत। हमरा-अहाँमे फर्के की अछि। मुदा एकटा बातक धियान राखए पड़त, हम गरीब छी गरीबे कुटुम करब। किए तँ गरीब-अमीरमे विचार आ बेवहारमे फर्क होइत अछि।”

तखने रबिया लड़की देखबाक इच्छा व्यक्त केलक। तैपर रघुनीजी अपन बेटीकेँ बजा देखौलक आ बाजल-

“इहए छी हमर बेटी- बुधिया, बजा-भुका कऽ देख लिअ।”

रबियाकेँ लड़की पसिन भऽ गेल।

रघुनीजी बेटीकेँ कहलक-

“बेटी, तूँ पहिने अपन हाथक बनल जलखै आ चाह नेने आबह, पछाइत खैनी-सुपारी सेहो नेने अबिहह।”

रघुनीजी मिथिलाक रिति-रेबाजसँ नवका कुटुमकेँ सम्मान करैत बेटीक हाथसँ बनल जलखै-चाह करा खैनी-सुपारी दऽ बिआहक दिन निसचित करबाक लेल गामक पण्डित दीनानाथ जीक घर पहुँचल। पण्डीजी शुभ बिआहक मुहुर्त पत्रामे देख बजला-

“बिआह पंचमीक दिन बड़ शुभ लगन अछि। मुदा एकटा विचार मानी तँ कहब।”

रघुनीजी बजला-

“बाजू ने पण्डीजी! अपनेक विचार कोनो कि गलत थोड़े हएत।”

पण्डीजी बजला-

“कम खर्चमे मन्दिरमे बिआह करू। की झेल-झटारमक लटारममे पड़ब।”

रघुनीजी रबिया आ धनिकलाल बाबू पण्डीजीक विचार मानि गामक मन्दिरमे बिआहक कार्यक्रम सम्पन्न करबाक निर्णय लेलैन। बिआह पंचमी दिन गामक मन्दिरमे मिथिलाक रीति-रेबाजसँ बिआह सम्पन्न भेल।

बेटा-बेटीक बिआह भेने रबियाकेँ खुशी तँ भेल मुदा चैन नहि भेल। खेत भरना लगने घर-खर्च पुंगबे ने करइ। खेतो कमि गेलै आ मजूरी सेहो। ऊपरसँ कपड़ा-दवाइक खर्च केना चलत। ऐ चिन्तामे रबिया दिन-राति डुमल रहै छल। एक दिन बेटासँ विचार करैत रबिया बाजल-

“गामक लोक सभ पंजाब-दिल्ली कमाइले जाइए, चलह ओकरे संगे दुनू बापुत अपनो सभ बाहरे कमाएब। घरमे दुनू सासु-पुतोहु मिलि काज करती। बाहरी कमाइसँ भरनाबला खेतो छोड़ा लेब आ कर्जो चुका लेब।”

दुखना अपन पिताक विचारसँ सहमत भेल। दुनू बापुत गामक संगबेक संग पंजाब चलि गेल।

रबिया दुनू बापुत पहिल बेर पंजाब आएल। ऐठामक वातावरण, जलवायु आ रीति-रेबाजसँ परिचित नइ अछि तँए ओ संगीक संगे काज करए लगल। लोक घर छोड़ि परदेश ऐ लेल अबैए जे कम समयमे बेसी मजूरी करि बेसी रूपैआ कमा घर भेजब।

दुनू बापूत रबिया कमाइ खातिर दिन-राति परिश्रम करए लगल। पंजाबमे धन-रोपनी करए लगल। धनरोपनीमे दुनू बापुत कुशल, कीलाक-कीला धनरोपनी कऽ खूब कमेलक। मुदा पंजाबक भीषण गरमी, एक दिन कीलेमे रबिया बेहोश भऽ गिर गेल। दुखना अपना पिताकेँ खेतमे गिरल देख झट-दे उठा कनहापर लादि डाक्टरक क्लिनीकपर पहुँचल। डॉक्टर दू-चारिटा इंजेक्शन आ कतेको रंगक टेबलेट देलखिन आ दुखनाकेँ बजा समझाबैत कहलखिन-

“देखू अहाँक पिताकेँ कालाजार बोखार भेल अछि। हिनका एक मास धरि इलाज चलत, अराम करत आ समयपर भोजन-दवाइ खा सुतत। खूनक कमी सेहो अछि।”

डॉक्टरक बात सुनिते दुखनाक होश उड़ि गेल। मुदा धिरजसँ मास भरि इलाज पिताक करौलक। जे कमेलहा रूपैआ छल से सभटा खर्च भऽ गेलइ। छुच्छे हाथे आगू इलाज केना चलत। सोचमे दुखना पड़ि गेल, असगर कमाएब कि पिताक सेवा करब। दुखनाक परेशानी देख मने-मन रबिया सोचए जे गाम-घरमे जे कियो बेमार पड़ैए तँ घरक सभ सदस्य मिलि सेवा करैए आ गामोक लोक आबि-आबि हाल-चाल पुछैए। दुख-सुखमे सहयोग करैए। मुदा परदेशमे सभ अपन-अपन कमाइक पाछू लगल रहैए। संगी सभ सेहो हाल-चाल नै पुछैए, मदैतक तँ बाते दूर। मदैत करत किए। ऐठामक लोक कोनो हमर

गामक छी आकि दियाद-वाद छी जे दू-चारि छेबो करए ओ अपन-अपन मजूरीमे लागल रहैए, हमरा लग किए औत।

रबिया बेटाकेँ कहलक-

“बौआ, ऐठामसँ घुमि अपन गाम चलह। अपना गाम-घरक जिनगीमे जे दया-धर्म, प्रेम-भाव आ सहयोग करैक विचार अछि से एतए नहि अछि। रहल कमाइ-खाइक बात तँ अपने गाममे एतेक मेहनत-मजूरी करब तँ ऐठामसँ बेसीए हएत। अपन गाम परदेश छोड़ि लोक आन परदेश आबि कऽ दिन-राति मेहनत कऽ ओतुक्का विकास करैए मुदा एतेक मेहनत जखन अपने देश आ अपने गाममे करत तँ अपनो देश आ गामक विकास हएत किने। घुमि गाम चलु बौआ, अपने घर रहि सभ मिलि मेहनतसँ गाम आ देशक विकास करब। ई बात बहुत पहिने डाक कहने छला- ‘घरक आधा रोटी नीक आ बाहरक सौंस रोटी नहि नीक।”

❑

शब्द संख्या : 1575

बिपैत

रामनाथ आ सितिया दुनू परानी बोनिहार अछि। दुनू मिल बोनि-बुत्ता कए घर चलबैए। शिबू आ मिट्ठू दूटा बेटा एकपीठिये अछि। दुनू तरा-ऊपरी, तेहने बान्हकाट ओहने बान्हल गठगर देह-दशा। दुनू बेटाक शरीर देख रामनाथ आ सितिया खेबा-पीबामे कोनो कोताही नै हुअ देलक। दुनूक धुआ-काया देख बैरनिक जेना नजैर लागि गेल। बर्खाक समय आएल रहए। कोसीक बाढ़ि गामक चारूकात घेरने। मुदा घर-अँगना बँचल रहइ। कोसीए-पानिमे नहेनाइ-धोनाइसँ लऽ कऽ सभ करम होइत रहए। दोसर कोनो उपाइयो नहियेँ रहै जे साफ पानि पीबैयो-ले आनत। कोसीक जट्ठर पानिक प्रभावे मालो-जाल सर्दियाह भऽ मरए लगल। आ लोको सभकेँ बोखार लागए लगलै। पीलहा रोग आ कालाजार बोखारसँ अनधुन लोक सभ मरए लगल। एमहर गाममे बाढ़िक पानिसँ कटनियाँ सेहो हुअ लगल। गामक गाम कटनियाँसँ भाँसए लगल। गामक लोककेँ जिनगी जीनाइ मोश्किल भऽ गेल। केकरो कियो देखैबला नहि जे बिपैतक ऐ घड़ीमे कियो मदैत करत। लोको आ मालो-जालो एतेक ने मरए लगल जे गाममे फौती आबि गेल। जेहमर देखिऐ कि सुनिऐ, चारूकात कन्नारोहैट होइत रहए। तही बीच रमनाथक छोटका बेटा- मिट्ठू सेहो बेमारीक चपेटमे आबि गेल। दिन-

राति बोखारसँ देह धधकैत रहै छेलइ। दवाइयो के आ केना आनत। जलमग्न इलाका, ने डॉक्टर, ने दवाइ-दारू आ ने दोसर कोनो उपाय। इलाजक अभावमे मिट्ठू प्राण तियागि सभ दिनक लेल कोसीमे विलीन भऽ गेल।

बेटाक मृत्यु भेने रामनाथ दुनू परानी सोगाए गेल। छौर-झँप्पीए दिन गति-सराध जे जनलक से अपने कऽ देलक। निच्चाँमे बाढ़ि आ ऊपरसँ बर्खाक झाँट करवनो ने दम मारए। दस-पनरह दिन धरि सौंसे गाम-घर पानिसँ घेराएल रहल। जखने पानि घटलै कि लोक सभ गाम छोड़ि-छोड़ि जान बँचबए पड़ाए लगल। लोक अपन-अपन ठौर पाबि कर-कुटमैतीमे जा गड़ लगौलक।

रामनाथो अपन शिबुकेँ कान्हापर बैसा माथपर झोरा-बोरामे किछु घरक समान लेलक आ विदा भेल। संगे, पत्नी सेहो बकरीकेँ पाँजमे कसि कऽ पकैड़ पानियेँ-पानि पतिक पाछू-पाछू विदा भेल।

आन गामक एकटा नहबरिया नाह खेबैत जाइ छल। देखते रामनाथ जोरसँ पुक्की देलक कि सुनिते नहबरिया नाह छींटपर लगौलक। सभकेँ नाहपर चढ़ा कोसी टपा देलक। सबहक जान पलटलै आ हिम्मत कऽ तीनू गोटए समान आ बकरी नेने निर्मली टीसनक घरमे आएल। एकटा कोणपर जगह पाबि समान राखि बैसै गेल।

रामनाथ पत्नीसँ बाजल-

“कहुना कालक मुहसँ बचलौं। जँ आइ घर नै छोड़ितौं तँ एकटा बेटा तँ नहियेँ रहल, जे छी बँचल तीनू सेहो कोसीए-मे समा जइतौं। बुझू वंशे चौपट छल।”

पतिक बात सुनि सितिया बजली-

“जे भेल से बिसैर जाउ, वंशक रखबार तँ अहाँ छी। एकटा बेटा

तँ अछिए। एकरे पालि-पोसि दियौ जे गाम-समाजमे वंशक नाओं नै मेटत।"

मन थीर होइते रमनाथ बाजल-

"अखन जीवित छी, मुदा भूखक आगि जरा कऽ मारि देत, तेकर कोन उपाय करब!"

सितिया बजली-

"खाइले तँ मोटरीमे सेहो किछु नहियेँ अछि। तखन आँचरक खूटमे एकटा पचसटकही बान्हल अछि मुदा सेहो तँ भीजले अछि। एकरे नेने जाउ, किछु बेसाहि आनू।"

रमनाथ ओ भिजलाहा पचसटकही नेने टीसने कातमे चाह-जलखैक दोकानपर पहुँचल। दोकानपर दोकानदार नहि, दोकानवाली छेली। ओहो झुनकुट बुढ़ मुदा थेहगर। रामनाथ दोकानवालीसँ बाजल-

"दस टकाक जलखै झब-दे दिअ, बड़ भूख लागल अदि। तहूमे हम तँ बरदासो कऽ लेब मुदा एगो छोट कनटिरबा आ घरोवाली अछि। भूखे लहालोठ भेल अछि।"

रामनाथ पचसटकही बढ़ा दोकानवालीक हाथमे दिअ लगल कि ओ बजली-

"रूपैआ तँ भिजल अछि, रंगो खराप भऽ गेल अछि। दोसर रूपैआ दिअ।"

रामनाथ मिरमिराइत बाजल-

"बड़ बिपैतमे छी। दोसर रूपैआ नइ अछि। कोसीक बाढ़िमे फँसल रही, एकटा बेटो दुखे मरि गेल। दस-पनरह दिनपर बाढ़ि घटल तखन कहुना जान बँचा अखने ऐठाम एलौं हेन।"

दोकानवाली बजली-

"रूपैआ चुल्हि लग सुखा लिअ, बेर-कुबेरमे आगू काज देत। जलखैमे कथी सभ लेब से बाजू।"

रामनाथ बुढ़ियाक आँखि दिस देखैत बाजल-

"चूड़ा-मुरही आ घुघनी, तीनू मिला कऽ दऽ दिअ।"

दोकानवाली निष्ठुर नहि, दयामन्ती। ओ अहगरसँ तीनू गोरे लेल तीनटा कागतक पतौड़ामे चटनीक संगे जलखै दऽ देलक आ कहलक-

"जाउ, पहिने खा कऽ पानि पीबू तखन ऐठाम आएब। हम चाहो पिआ देब।"

दोकानवाली बुढ़ियाक बात सुनि गुनधुन करैत रामनाथ किछु बाजल नहि, जलखैक पतौड़ा सम्हारि कऽ टाकाकेँ धोतीक खूटमे बान्हि विदा भेल। जलखैक एकहकटा पतौड़ा तीनू गोरे अपन-अपन हाथमे लऽ खाए लगल। जाबे भूखल रहए ताबे बाप-बेटा बिनु सुअदने खेलक, मुदा पछाइत सुआदि-सुआदि कऽ...।

सितिया एक मुट्ठी चूड़ा-मुरही बकरियोकेँ देलक आ अपनो खाइत बजली-

"जलखै बड़ सुअदगर अछि।"

तीनू गोरे जलखै खा, पानि पीब भूख मेटौलक कि रामनाथकेँ चाह पीबैक मन भेलइ। पत्नीकेँ कहलक-

"चाह पीबैक मन होइए, अहूँ पीब की?"

सितिया बजली-

"बिपैतसँ पहिने उबैर जाउ तखन ने सख करब। अखन तँ बिपैतीए-बिपैत पड़ल अछि।"

पत्नीक बात सुनि रामनाथ बाजल-

“बिपैत सहब मनुखक पैघ गुण होइत अछि। जाबे तक मनुख बिपैत नइ सहत ताबे तक सुख केना खोजत। दुखे-सुखक बीच ने मनुख जिनगी जीबैए। ठीक ओहिना जेना दू किनारक बीच धार आगू बढ़ैत-बढ़ैत सागरमे मिलैए। तहिना ने मनुखो स्वर्ग धरि पहुँचैए। ई संसारे दुख-सुखक खान छी, जइमे सभ जीव-जन्तु संघर्ष करैत जिनगी पार लगबैए। यएह ने असल जिनगीक सुख छी। जँ हारि मानि लेब तखन तँ आफद-बिपैतमे फँसल रहबे करब।”

पतिक नमगर-चौड़गर लेक्चर सुनि पत्नी चनकैत बजली-

“लगले बिपैतकेँ बिसैर गेलिऐ जे एना बजै छी। जाउ ने चाह पीअब तँ झब-दे पीब आउ। तखने ने ठरो-ठेकान लगाएब। ई तँ कोनो अपन गाम-घर छी नहि, आनठाम छी। काज खोजि करब, केतौ जगह ठेकानि कऽ खोपड़ी बना रहब, तखने ने आगूक जिनगी चलत। रोजी-पुजी तँ अछि नहि, मुदा समांग आ हाथ-पएर तँ भगवान देने छैथ। कमा कऽ खा तँ सकै छी।”

रामनाथ गपकेँ बिलमबैत चाह पीबैले विदा भेल।

रामनाथकेँ अबैत देख देकानवाली बुढ़िया चाह बनबए लगली। रामनाथकेँ लगमे अबिते बुढ़िया बजली-

“आबह बौआ, जलखै केलह? निम्मन लगलह किने? चाहो बनैए, बैस पीब लएह। असगरे पीबह कि घरोवाली पीतह? जँ पीतह तँ बजौने आबह, ओहो पीब लेत।”

रामनाथ बाजल-

“ओ केना औती। छोटका कनटिरबा, बकरी आ मोटरी-चोंटरी सेहो अछि।”

बुढ़िया बजली-

“जाह ने सभ किछु नेने बजौने आबह। चाहो पीब लेत आ बाजियो-भुकियो लेब। मनो बहटारल जेतैन। अपनो लग बेसीए जगह अछि। राति भरि अहीठाम रहि जइहअ।”

रामनाथ आस देख उठि कऽ विदा भेल। मनमे विचार केलक जे मुसाफिरखानामे नीनो नहि हएत आ टीसनपर चोरियो-चपाटीक डर रहैए। कहीं छोट ननुआगर बेटा वा बकरीए चोरि भऽ जाएत तखन तँ बिपैतक ऐ घड़ीमे आरो बिपैत बढ़ि जाएत।

सोचैत-विचारैत रामनाथ विदा भेल। पत्नी लग आबि बाजल-

“चलू, दोकानवाली बुढ़िया बजबैए। चाहो पीब लेब आ राति भरि ओतै रहियो जाएब। जगहो सुरक्षित अछि।”

झोरा-बोरा आ बकरी लऽ कऽ तीनू गोरे बुढ़ियाक दोकानपर आएल।

सितिया बुढ़ियाकेँ देखते पएर छुबि कऽ गोड़ लागि लगमे बैसल।

रामनाथ समान राखि बकरीकेँ कोण लग खुट्टामे बान्हि ब्रेंचपर बैस गेल। बुढ़िया चाह छानि दुनू परानीकेँ दऽ अपनो पीबए लगली। चाह पीबैत तीनू गोरेमे गप-सप्प हुअ लगल। पहिलुका जान-पहचान तँ छल नहि, तँए पहिने जानब-ठेकानब नीक जकाँ भेल। रामनाथ आ दोकानवाली बुढ़ियो कोसिकन्हेक वासीक जनतब भेल। तखन बुढ़िया बजली-

“बौआ रामनाथ, रौतुका खेनाइ बनाइये लइ छी। सभ कियो एहीठाम खइहअ आ सुतियो रहिहअ। हमहूँ तँ असगरे रहै छी। चाउर आ सजमैन अछिए। भात आ सजमैनक तीमन बना लइ छी, सभ कियो प्रेमसँ खाएब।”

सितिया मने-मन सोचए जे बुढ़ीक उमेर अस्सी बर्खसँ बेसीए

छैन। आ से भानस कए कऽ खुऔती आ हम सभ बैस कऽ खाएब से उचित नहि हएत। कोनो की हम सभ पाहुनाइ आएल छी। से नहि तँ हमहूँ भानस-भातमे लागि-भीर दइ छिऐन।

सितिया चोट्टे उठि कऽ सजमैन सोहि मेहींसँ बना बुढ़ीकेँ कहली-

“माए, अहाँ समान सभ देखा दिअ, हमहीं भानस करै छी।”

बुढ़िया बजली-

“ओना, भानस करबह तँ करह, आइ तोरे हाथक बनाएल खाएब। मुदा तोरा ई नहि बुझि पड़ह जे हम नै सकब। अहू उमेरमे लगधक साए आदमीक जलखै आ चाह सभ दिने बनबै छी, ओकरे कमाइ खाइ छी।”

भानस बनल। सभ कियो खा कऽ सुतैले बिछौन केलक। बिछौनपर पड़िते बुढ़िया अपन दुखनामा सुनबए लगल-

“बौआ, हमरो सासुर कोसीए पेटमे रहए। जोबहा गाम जनिते हेबह। हमर पति बाढ़िमे भँसियाएल एकटा लकड़ी पकड़ए गेल रहए, पानिक रेत आ ढल बड़ करगर छेलइ। लकड़ीक टोन नमहर आ मोटगर रहै जे पकड़मे सम्हार नइ खेलकै, बेसम्हार भऽ गेलइ। भँसैत-भँसैत पानिक लपेटमे चल गेल। अगम पानि रहइ। पलेटीमे घुमैत-घुमैत निच्चे मुहेँ डुबि गेलैथ आ ऊपरसँ लकड़ीक भारी टोन दाबि देलकै। से मुइला पछातियो लहाश केतए गेल से आइ धरि केतौ पता नइ लागल। हम समरथे रही, एकेटा बेटा कोरामे छल। तेतेक ने बाढ़ि-पानि आबि गेल जे केकरो कियो देखनिहार नहि रहल। दुरकाल समयमे हिम्मत करि कऽ साड़ीक फाँढ़ बान्हि बेटाकेँ अँचरामे लपेट पीठपर बान्हि लेलौं। आ हेलैत-हेलैत सिसौनी देने निर्मली एलौं। नैहरक कोनो आसे ने छल। माए-बाप आ भाए सभ जे कमाइले

बंगाल गेल से ओत्तै बसि गेल। जेकर कोनो थाह-पता नै अछि। जुआनीए-मे बड़का बिपैत पड़ि गेल। जन-बुत्ता कऽ लोकक घरक बरतन-बासन माँजि आ कुटोन-पिसौन कऽ कोनो-धरानी बेटाकेँ पोसलौं। बेटा चेतनगर भेल मुदा बपटुगर भेने बहलोलहा। ओहो लमपटहा सभ संगे बिगैड़ गेल। जुआड़ी-नशेरी बनि केतए भागल तेकर कोनो पता नहि। मरि गेल कि जीविते अछि से ईश्वर जानैथ। एहनो विकट बिपैतमे हम जीबठ बान्हि करेजाकेँ पाथर बना बिपैतकेँ सहैत जिनगी आगू ससरबै छी।"

बुढ़ीक बात सुनि रामनाथक हूबा जेना जागल। हुबगर होइत रामनाथ बाजल-

"बुढ़ी माए, बिनु आलमक नारी भऽ, केना एतेक हिम्मत केलिऐ!"

बुढ़ी उत्तर दैत बजली-

"बौआ, हिम्मत केना ने करितौं। हिम्मते बले ने नारीपनसँ पुरुखपन जगा भितुरका पौरुषकेँ जगौलक। मनुखक खगता समाजकेँ होइ छइ। समाज तँ ओ सागर छी जइमे छोट जीवसँ लऽ कऽ नमहर-नमहर जीव रहैए आ सबहक गुजर-बसर होइए। जेहेन मनुख तेहेन समाजक निर्माण होइए। बिपैत सहब हमरे-तोरेसँ ने लोक सीखत।"

रामनाथ बाजल-

"हम अपन बिपैतकेँ बड़ पैघ बुझैत रही, मुदा अहाँक बिपैत सुनि हमर दिल आ मन बुझू हेरा गेल। हमरा तँ किछु फुरबे ने करैए जे की करब आ की नइ करब।"

रामनाथकेँ समझाबैत बुढ़ी बजली-

"बौआ, हृदयकेँ सक्कत बनाहब। मनमे मनोबल जगा आगू मुहेँ चलह। पुरुख छह, पुरुखपना जगाहब। पत्नी-बेटा संगे नव जिनगी

ठाढ़ करह। समाजकेँ कसि कऽ पकैड़ चलह। सभ बिपैत बिर्डो-बिहाड़ि जकाँ उड़ि जेतह। तोरा तँ सभ किछु छहे, मुदा हमरा बिपैत छोड़ि आर के?"

❑

शब्द संख्या : 1576

झंझैटक जड़ि सिनुरिया आमक गाछ

किसुनदेव पित्तमरू आ बड़ कंजुस लोक अछि। आ पत्नी सेहो एकबोलिया तथा झगड़ाउ प्रवृतिक छइ। जटही नैहर छिऐ। तँए, सभ हिनका जटहीवाली कहै छैन। मुदा दुनू परानी किसुनदेव खूब हिमतगर आ मेहनती अछि। जखन किसुनदेव किछु बेसाह करैए तँ जटहीवाली एक-एक पाइक हिसाब लइए। ओहुना किसुनदेव किनको देखौंस नै कऽ कमे खर्चमे जिनगी चलबैत आबि रहल अछि। मुदा तैयो बरबैर जटहीवाली अकारणो हनपट करैत झगड़ैत रहैए। किसुनदेवकेँ बपौती सम्पैत किछु बेसीए भेटल छैन तँए खुशहाल अछि। ने किनकोसँ अराइर आ ने लेन-देन रखने अछि किसुनदेव। एकर कारण अछि किसुनदेवक हाथ-मुट्ठी सक्कत रहल आ मनबढ़ू सेहो नइ अछि। अपन खेत बेसी तीन फसिला छै, बाड़ीए-झाड़ीक साग-तरकारी सालो भरि खाइए। सालक अन्दर बढ़ोतरी जे अन्न आकि चीज-वौस होइ छै, ओ बेच रूपैआ जमा कऽ केतौ पाँच-दस कट्ठा जमीन खरीद लइए। सभ धनसँ पैघ किसुनदेव जमीनकेँ बुझैए। बेसी जमीन भेने खेतीक काज बढ़ि गेल। अपने दुनू परानी केतेक काज करत, समयपर मजदूरक अभाव रहने, खाद-बिआ आ पानिक महगी आ अन्नक दाम कम भेने किसुनदेवकेँ खेतीसँ रूचि कमि गेल।

किसुनदेव सोचलक जमीन बेसी अछि जइमे किछु जमीन तीन-

फसिला सेहो अछि, से नहि तँ दू-फसिला आ किछु भीठ जे एक-फसिला अछि, जइमे मेहनत बेसी आ फसिल कम होइए, आ जँ ओइमे दोसर तरहक फसिल करबो करब तँ तइले समांग चाही, तेकरो अभाव अछि। से नहि तँ निमन हएत जे दू-तीन बिघा भीठ जमीनमे आमक गाछ लगा दइ छी। आमक गाछ लगबैमे बेसी पूजीक सेहो जरूरत नहि...।

यएह सभ सोचि किसुनदेव साए पेड़ कलमी आमक आ साए पेड़ सरही आमक गाछ लगबैक निर्णय कऽ लेलक। गाछीक देख-भाल चारि-पाँच साल करए पड़त, बढ़ियाँ गाछी भऽ जाएत। जमीनो सुरक्षित रहत। फलो खाएब आ फल बेच रूपैओ कमाएब आ जारैन लकड़ीक अभाव सेहो कहियो ने हएत। पहिने कलमी आमक गाछ चुनि-चुनि सभ रंगक कीनि अनलक। जइमे रोहनियाँ बम्बइ, डोमा बम्बइ, चपड़ी बम्बइ, लंगड़ा बम्बइ, दुधिया सपेता, सीपिया, जर्दालू, गुलाबखास, अम्रपाली, दशहरी, कलकतिया, शीतल प्रसाद, फैजली, सिक्कुल आ कृष्णभोग इत्यादिक बाग लगौलक।

दोसर बागमे सरहीक चुनल आमक आँठीसँ गाछ बना रोपलक। जइमे रोहनियाँ, कटहरबा, गुड़हा, चीनियाहा, सुपरिया, करियम्मा, दरिमा, केलबा, मिश्री भोग, कर्पुरिया, कोहबा, लड्डुबा, सिनुरिया, सोनहा इत्यादि रंग-बिरंगक आमक गाछ लगा कलम बागकेँ चारूकातसँ टाट लगा घेर देलक। बागकेँ पटबै खातिर एकटा चापाकल सेहो गड़ा कऽ निचेन भऽ गेल।

किसुनदेवकेँ खेत-खरिहाँन, बाड़ी-झाड़ी, गाछी-बाँसक कोनो कमीए ने अछि। मुदा कमी अछि शिक्षाक। ऐ लेल किसुनदेव पहिनेसँ मन बनौने जे बेटा सभकेँ पढ़ाएब। मुदा जेठ बेटा- रामानन्द कम्म पढ़ि किसान बनल। दोसर बेटा- श्यामानन्द पढ़ि-लिख कऽ शिक्षक बनल

आ तेसर बेटा विद्यानन्द अंचलक किरानी बनल। किसुनदेवकेँ ऊँच्च शिक्षापर बेसी जोर नै रहए। किएक तँ बेसी पढ़ि लोक डॉक्टर-इंजीनियर आकि जज-कलक्टर बनि नौकरी खातिर घर-गाम छोड़ि आनठाम चलि जाइए। तेतबे नहि, एकभगाह सेहो भऽ जाइए, ओ अपने सुख-सुविधामे लगि माए-बाप आ गाम-समाजक सेवा करनाइ बिसैर जाइए। तँए, गाम-समाज अखन पिछैड़ उपेक्षित भऽ रहल अछि। दिनो-दिन पाछूए मुहेँ जा रहल अछि। जेबो केना ने करत, ओहन लोक भेलासँ सभसँ पैघ समस्या समाजमे ई अछि जे गामक सम्पैत सेहो घेरा जाइए, गाममे रहत नहि, रहत बाहर आ जड़ो-जमीन अपने राखत। समाजक लोक सभ जे अभावक जिनगी बिता रहल अछि। तेकर अनेक कारणमे एकटा ईहो कारण अछिए किने। तेतबे नहि, माए-बापकेँ सुख ने बेटासँ आ ने बेटाकेँ सुख माए-बापक भेटैए। जखन परिवारक सभ सदस्य मिलि-जुलि परिवारमे रहत तखन ने सबहक सुख-दुखक अनुभूति सभ करत आ एक-दोसरकेँ सहयोग सेहो हएत। गाम-समाजक असल संस्कृतिकेँ वएह ने बँचेने अछि जे गामेमे अछि। जे बाहर रहैए ओ तँ आन संस्कृतिमे रमि जाइए। तिनकासँ आशा करनाइयो मुर्खता अछि।

किसुनदेवक परिवारक विकास हर तरहेँ भेल। आमदनियोँ कोनो कम नै अछि। खेतीक आमदनी, शिक्षक आ किरानीक वेतन तैपर सँ गाछ-बाँसक आमदनी। एक तँ सोना, तैपरसँ सोहागा आरो चमक बढ़ा देलक। मुदा किसुनदेवकेँ ई विकास चिन्ता बढ़ा देलक आ पड़ोसिया सभ जरए लगलै। परिवारमे तीनू बेटाक विचारमे अन्तर भेने सुमत नै रहल। भैयारीमे एक-दोसरसँ कनाइर-अराइर हुअ लगल। सभ अपना-अपनीकेँ कौशल करए लगल। पत्नी- जटहीवालीक मुँह-पुरखी सेहो चलि गेल। जहिना किसुनदेवक परिवारक विकासक जे गति रहए ओ रूकि गेल। खाम्हें बले ने घर मजगुत होइए, जँ खाम्हेंमे

घुन लगि जाए तँ घर गिरबे करत किने।

किसुनदेवक घर गिरए लगल। गामक लोक सेहो नजैर चढ़ौने रहै छइ। किएक तँ लोककेँ अपन विकाससँ जेते खुशी नै होइए तइसँ बेसी खुशी दोसराक घँसने होइए। हेबो किए ने करत। धनीकेँ रहलासँ जँ समाजकेँ कोनो उपकारे ने हेतै तखन तँ कहबियो छै किने- अन्हराकेँ जगने की आ धधराकेँ तपने की...। दोसरकेँ हुनकासँ की भेटलै। बड़ पैघ नमहर गाछ ताड़-खजूरक होइ छै मुदा केकरो ओकर छाहैरो भेटै छइ। अपने नीक कहलासँ नीक हएत आकि दस लोक नीक कहत तखने ने नीक हएत।

किछु दिनक पछाइत किसुनदेवक घरमे धक्कम-धुक्का हुअ लगल। झंझैट बढ़ैत गेल। कियो केकरोसँ कम नहि, किए कियो केकरो रूआब सहत।

आमक महिना रहइ। आमक कोनो कमी नहि, सैंकरो प्रकारक आम मुदा सभसँ नीमन आम सिनुरिया अछि। सबहक नजैर ओही आमपर लगल रहइ। सिनुरिया आमक जोड़ा ऐ परेपट्टामे नहि अछि। जेहने पिअर आ लाल रंगक रंग आ ऊपरसँ आधा आम सेनुर रंगसँ रंगल आधा सेरक आम, देखैओमे ललीचगर तेहने सुआदोमे मधु सन मीठ आ तेहने रसगरो। एक-दूटा आमक रस पीब कऽ लोक भरि दिन खेपि सकैए। नहि देखा कऽ तँ चोराइयो कऽ लोक सिनुरिया आम जरूर खाइए। किसुनदेवक पुतोहुओ सभ मोटाक-मोटा सिनुरिया आम अपन-अपन नैहर भेजैए। तैयो घरमे झंझैट ओइ आमक खातिर पसैर गेल। केकरो संतोखे ने, तँए झंझैट बढ़िते गेल आ भिनौजीक नौवत परिवारमे आबि गेल। निर्णय भेल जे गामक पाँचटा बुर्जुग पंचक बीच सभटा सम्पैतक बँटबारा हएत।

किसुनदेवक घरमे भिनौजी हएत तेकर खबैर सौंसे गाममे पसैर

गेल। बिहाने पंच बजाएल गेल आ बँटबारा शुरू भेल। मुदा एक-दूटा पंचोकेँ मन रहइ जे कहुना झंझैट हल नइ भऽ बढ़ए।

पंचक बीच हाथ जोड़ि किसुनदेव बाजल-

“हम हिस्सा नै लेब आ जेठ बेटा रामानन्द संगे रहब, से बेटो स्वीकार केलक।”

घर-घराड़ी, खेत, अन्न बरतन-बासन, गहना-जेबरक उपरान्त बाँस-गाछीक बँटबारा हुअ लगल। बाँस-गाछ आ गाछीक जमीन बाँटैत-बाँटैत सिनुरिया आमक गाछ दू भाँइक सीमानक बीच पड़ि गेल। मामला एतहि फँसि गेल, तखन पंच बजला-

“ई सिनुरिया आमक गाछ गामक चुनल आम छी। बीच सिमानमे पड़लासँ दुनू भाँइक सझियामे रहत। दुनू भाँइ आम बाँटि खाएत आ दस-पाँच छुटल-बढ़ल लोको खाएत।”

पंचोकेँ मन साफ नै रहए, ओ सभ चाहै छला जे कहुना सिनुरिया आमक गाछ सझिया रहत तँ हर साल आमक समय आमक खातिर झंझैट हेबे करत। जखन कि पंच लोकैन चाहितैथ तँ गाछक दाम लगा कोनो एक भाइक हिस्सामे दऽ कऽ झंझैटक अन्त कऽ सकै छला। मुदा सझिया राखि देलैन।

किसुनदेवक मझिला बेटा- श्यामानन्द जे शिक्षक छैथ, ओ बजला-

“यौ पंच महराज, झझैटक जड़ि तँ यएह सिनुरिया आमक गाछी छी। अही खातिर तँ दिन-राति झगड़ा होइत रहैए। हम तीन भैयारी छी, जँ ई आमक गाछ तीनटा रहैत आ एकेटाक गाछ तीनू भाइक हिस्सा होइत तखन झगड़ा नै होइएत। मुदा से तँ नहि अछि, तँए गाछकेँ काटि बाँटि दियौ। झंझैटक जड़ि खतम भऽ जाएत। ने रहत बाँस आ ने बाजत बौसली।”

श्यामानन्दक बात सुनि सभ पंच गुब्दी लादि देलक। एक दोसरसँ कनफुसकी करए जे कहुना मामला फँसल रहए। एमहर किसुनदेव गाछ कटबाक बात सुनि सोचमे पड़ि गेल। ओ मने-मन कहए जे पंच तँ परमेश्वर होइए, मुदा ई पंच सभ तँ झगड़लगौन छी। पंचपर समाज केना बिसवास करत। ई सिनुरिया आमक गाछ हमरेटा नहि, गामक गौरव छी। एहेन सुन्नर आम किनको गाछीमे नइ अछि। ऐ आमक गाछ लेल जे हमर नाम चलैए से कटलापर बुता जाएत। लोक गाछ-बेख लगबैए उपकार लेल मुदा हमर बेटा आ पंच मिलि एहेन नामी आमकेँ अन्त करैपर तुलल अछि...।

किसुनदेव अनपढ़ मुदा अनुभवी लोक, सोचि-विचारि कऽ ठाढ़ होइत पंचक बीच बाजल-

“यौ पंच मालिक, हमर बेटा सभ पढ़ियो-लिखियो कऽ बुड़िबके अछि आ अहूँ सभ ओकरे संगे बहै छी से केतेक उचित अछि। कनी हमरो बात सुनू, ई गाछ हमर रोपल छी तँए सभसँ बेसी अधिकार हमर अछि। ई आमक गाछ हमर प्राण स्वरूप अछि। जखने ई गाछ कटत तँ हम सोगे मरि जाएब। जइ गाछकेँ अपने सभ झंझैटक जड़ि बुझै छिऐ ओ हमरा जीविकामे दऽ दिअ। हमहूँ आम खाएब आ बेटो सभ खाएत आ लोको सभ खाएत तँ काया जुड़ेतै। जँ से नहि करब तँ कहबी सन हएत- जे रोपलक ताड़ से चटलक...।”

किसुनदेवक बात सुनि पंच सभ घबराइत सोचमे पड़ि गेला। तखने शिवलाल काका अपन बेटाकेँ कौलेजमे नाओं लिखा कऽ घुमि घर जाइ छला। किसुनदेव काकाकेँ देखते मातर जोरसँ बजौलक। शिवलाल काका सभ बात सुनि समैझ कऽ बजला-

“पंच परमेश्वर होइए, पनचैती निष्पक्ष करैए। दूधक दूध आ पानिक पानि बेराए कऽ झंझैटकेँ अन्त करैए, तँए ने पंच परमेश्वर

कहबैए। जे पंच केकरो पक्ष लऽ कऽ पनचैती करैए ओ पंच अधर्मी होइए। ई कोन नमहर विवाद अछि जे तइले सभ परेशान छी। बँटबारा तँ एहेन हुअए जे साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए। देखियो किसुनदेव, केतेक संतोषी अछि जे अपन अरजल जमीन-जत्था गाछी सभ सम्पैत पंचक बीच बेटामे बाँटि देलक। अपना लेल मात्र एकटा आमक गाछ मंगैए। तखन पंचक कर्तव्य होइए जे सहजे झंझैटक अन्त कऽ दिऐ। सिनुरिया आमक गाछ किसुनदेवक जीविकामे दऽ दियौ। बुढ़ारियोमे आम सन फल दान-पुन करत आ धर्म कमाएत। यौ आमक गाछ कहीं झंझैटक जड़ि होइए, झंझैटक जड़ि तँ लोक होइए।"

शिवलाल कक्काक बात सुनि किनको चहुओ ने हिलल आ बँटबारा समाप्त भेल।

❑

शब्द संख्या : 1462

जारैन

दुखनी दादी झुनकुट बुढ़ छैथ। हिनका उमेरक भरि गाममे कियो ने अछि। अखन धरि केशो अदहा कारीए छैन आ दाँतो झलकैत तथा आँखियो चोखगर जे अनहरियोमे सुह-सुह करैत सभ काज करै छैथ। दिन-रातिक क्रिया-कलापक प्रति बड़ सजग आ अनुभवमे किनकोसँ पारंगत छैथ। गामक कोनो सुखद वा दुखद काजक सलाह-विचार उत्तम स्तरक दइमे दादी करखनो ने सकुचाइ छैथ। से चाहे कियो रहअ। ऐ लेल गामक लोको सभ दादीक सम्मान करै छैन। एतेक उमेर रहितो दुखनी दादीक जिनगी सरल आ स्वावलम्बी अछि। परिवारो कोनो छोट नहि, तीनटा बेटा-पुतोहु सभ धीगर-पुतगर। पोता-पोती मिला कऽ दर्जन भरिसँ बेसीए छैन। सबहक भरण-पोषण बटिया खेती आ मजदूरीसँ होइए। दूटा बेटा समय-समयपर परदेशो खटैए आ खेतीक समय घर आबि खेती सेहो करैए। घरमे अन्न, पानि, दालि, तरकारीक कमी तँ नहि, मुदा जारैनक समस्या बनल रहैए। तइले दुखनी दादी अनहरगरे उठि खर्रा-बोरा लऽ गाछीसँ पत्ता खर्ड़ैर-बीछि आनै छैथ। किछु जारैन गाइक गोबरसँ सेहो पुंगबै छैथ। मुदा पुतोहु सभ जारैनक ओरियानक भीर नइ जाइ छैथ।

जारैनक खातिर दुखनी दादी एक दिन जेठकी पुतोहु लग बजली-

“केतेक दिन हम जारैनक भार उठेबह। आबो तँ तूँ सभ उठाबह। हमरा बुढ़ाड़ीमे पलखैत हएत।”

जेठकी पुतोहु किछु ने बजली मुदा छोटकी पुतोहु कान पाथि जे चिनवारेसँ सुनै छेली ओ लगमे आबि चनकैत बजली-

“माए, जमाना बदैल गेल। अखन के पत्ता-पुत्तीसँ भानस करैए। बजारसँ लऽ कऽ गाम धरि फ्रीएमे सरकार रसोइ गैसक कनेक्शन दइए। तखन एतेक मेहनत आ समय लगा पत्ता-पुत्तीक धुइयाँमे भानस करबाक की जरूरी अछि।”

दुखनी दादी हुँहकारी दैत बजली-

“मुँहक कोनो जमा खर्ची नहि ने लगै छइ, तँए ने जे मन होइ छह से बाजि दइ छहक। बिना भिरे जँ खीर होइतै तँ सभ ने खीरे खइतए।”

छोटकी पुतोहु किछु उत्तर नहि दऽ पुछलखिन-

“से केना, माए?”

दुखनी दादी पुतोहुकेँ समझाबैत बजली-

“महगी जमाना अछि तइमे जे जेते अकीलदारीसँ काज करत ओ ओते ओझड़ीसँ हटल रहत। जे फैशनेमे आनन-फानन करत ओ तेहेन कऽ बनरफाँसमे फँसत जे जिनगी भरि फँसले रहत।”

जेठकी पुतोहुकेँ नै रहल गेलैन, बजली-

“तखन लोक रसोइ गैस-ले किए मुड़कटाबैल करैए?”

दुखनी दादी उत्तर दैत बजली-

“गैसक खातीर लोक मुड़कटाबैलियेटा नै करैए, बेसी रूपैआ खर्च करैए आ भरि-भरि दिन गैस-गोदामपर रौदे-बसाते जान सेहो गमौने रहैए। लोक अपन चालि छोड़ि खजन चिड़ैयाक चालि पकैड़

केतेक दिन चलत।”

छोटकी पुतोहु मुँह चमकाबैत बजली-

“ई बुढ़िया तँ अपन जमानाक बात बजै छैथ। अखन सरकारक घोषणा छै जे पर्यावरणमे जे प्रदूषणक समस्या छै तेकरा कम करैले गैस-चुल्हाक उपयोग करू आ अहाँ खर्चा डरे भरियबै छी।”

दादी टोन मारि उत्तर बजली-

“जेतए जारैनक समस्या छै ओतए ने गैसक जरूरत छै मुदा गाम-घरमे तँ एतेक गाछ-बिरीछ, कलम-बाग, काठ-कुकाठ आ बाँसक बोन अछि जेकर सुखल ठेहुरी आ पातक जारैन प्रर्याप्त मंगनीए भेटैत अछि। तखन एतेक रूपैआ खर्च करि कऽ गैसक कोन खगता अछि। हँ, खगता छै शहर-बजारमे, जेतए जारैनक अभाव अछि। रहल पर्यावरणक सबाल, तँ ओ सरकार आ अमीरक बनौल समस्या छी। डीजल-पेट्रौलक विषहा धुइयाँसँ उत्पन्न समस्या छी। जारैनक धुआँ पर्यावरणमे बहुत कम हानि करैए।”

जेठकी पुतोहु अपन मुँह दबले बजली-

“तखन सरकार गामो-घरमे किए प्रचार करै छइ। जा कोनो विशेषता नइ छै तँ अनेरे किए वौआएल फिरै छइ?”

दुखनी दादी समझाबैत जेठकी पुतोहुकेँ कहलखिन-

“देखह कनियाँ, अखन फैशन आ सुविधाक जमाना छै। फैशन आ सुविधाक चलन पहिने अमीर लोक करै छल, तेकरे देखौंस गरीब सेहो करए लगैए। आमदनी कम आ महगी रहने गरीबकेँ कहियो पर नइ होइ छइ। जखन कमे लोक गैसपर भानस करैए तखन तँ एतेक महग अछि मुदा जखन सभ उपयोग करए लगत तँ समयपर मिलबो करत कि नहि, तेकर कोनो गारंटी अछि।”

छोटकी पुतोहु मुँह टेंढ़ करैत बजली-

“सरकार जे योजना चलेने अछि से की छी?”

दुखनी दादी हाथक इशारा दऽ शान्त भऽ सुनैले कहि बजली-

“सरकारक मनसा जनताकेँ सुविधा प्रदान करनाइ थोड़े छी। केतेको रंगक बिहंगरा ठाढ़ कऽ ओझरी लगा रूपैआ बटोरैक साधन बना रहल अछि। धीरे-धीरे दाम बढ़ा-बढ़ा विकट समस्या उत्पन्न कऽ जनताक बीच असंतोष बढ़ाएत। जेना देखहक, गाम घरमे जे जारैन, पत्ता-पुत्ती सभ अछि से की हएत? ओ सरकार लऽ लिअ आ बदलैनमे गैस दीअ, तखन ने गरीबक लेल सुविधा हएत। नै तँ एतेक गाछ बाँस आ पत्ता गाममे अछि तेकरा लोक की करत। जे काज मेहनतसँ आ मंगनीमे होइए तइ लेल हजारक हजार टाका लोक खर्चा करैए। जखन कि सोच बदैल एतेक रूपैआ बँचा परिवारक दोसर विकास तँ कऽ सकैए।”

छोटकी पुतोहु बजली-

“माए, अहींक सोचला आ करलासँ थोड़बे सभ चलत।”

दुखनी दादी जवाब देली-

“जखन हम करब तखन ने दोसरो करत। ओना, जेकरा उड़बाक छै से उड़ह, हम किए देखौंससँ उड़ब। मुदा विचार करबाक जरूरी अछि जे लोकक संख्या दिन दूना आ राति चौगुना बढ़ि रहल-ए। ओइ अनुपातमे गाछ, वृक्ष लगाबी जइसँ फलो-तरकारी उपलब्ध हएत आ लकड़ीक संगे जारैनक समस्या सेहो दूर हएत। दोसर उपाय अछि- गाए-महींस पोसु, दूध-दही-घी सेहो खाएब आ गोबरक गोइठासँ जारैन मंगनीमे हएत। ओ काज अखनो कऽ असानीसँ जारैनक समस्या दूर कऽ सकै छी। परती-पराँत, पोखैरक महार आ भीठ जमीनमे गाछ-बिरीछ लगा ओकर पत्ता-झाँखी-ठेहुरीसँ जारैनक

पूर्ति हएत। एतबे नहि, घरतीक वातावरण सेहो शुद्ध रहत। खर्च किछु नहि, आमदनीए आमदनी।”

आब छोटकी पुतोहुकेँ जेना ज्ञानक कुण्डली एकाएक खुजल। खुजिते बजली-

“माए, अखुनका लोक पढ़ियो-लिखियो कऽ एहेन सोच नहि रखने अछि। आनन-फाननमे रूपैओ लूटबैए आ जिनगी सेहो जोखिममे बितबैए। जे काज कनियेँ मेहनतसँ मंगनीए-मे हएत तेकरा नमहर समस्या बनौने अछि। ई अनुभव आइ हम अहींसँ सिखलौं। समाजमे अहाँ सन बुढ़-बुजुर्गकेँ रहने एकसँ एक पैघ समस्या मात्र अनुभवेसँ हल भऽ जाएत। अखन हम जानलौं जे जारैन कोनो समस्या नै छी, लोकक खूद ठाढ़ कएल समस्या छी। दुखनी दादीक बतौल अनुभवक बाट पकैड़ चललासँ खाली जारैनेक समस्या नहि, बल्कि आनो-आनो समस्या सभ दूर कऽ जिनगी सुलझा सकै छी।”

दुनू दियादनी बोड़ा-खड़ाी लऽ जारैन बीछैले गाछी दिस विदा भऽ गेली।

❑

शब्द संख्या : 914

जेहेन पाठ ने पढ़ए पुत्ता अपने सिर विसए

आनन्द बाबू खनदानी धनिक आ प्रतिष्ठित बेकती छैथ। हिनक प्रभाव परोपट्टामे छैन। सैंकड़ो बिघा जमीन, बाग-बगिचा, बाँसक कोठी छैन आ हाट-बजारक ठीकेदारी सेहो करै छैथ। तैसंग पंचायतक मुखिया रहने आरो बेसी लोकप्रियता कमेने छैथ।

आनन्द बाबूकेँ तीनटा बेटा आ एकटा कोरपच्छू बेटी सेहो छैन। बेटा-बेटी सभकेँ समान मानि उच्च शिक्षा देबाक प्रयास केलाह। मुदा से नै भऽ सकल। एकटा बेटा खेती-बाड़ी, दोसर ठीकेदारी-नेतागिरी आ तेसर इंजीनियर छैन। तीनू बेटाक बिआह भेलाक बाद जखन बेटी इण्टर पास केलकैन तखन बेटीक बिआह करैक निर्णय सेहो केलैन। शहरक नामी-गामी परिवारमे इंजीनियर लड़कासँ सम्बन्ध ठीक केलाह।

आनन्द बाबू अपन बेटीक बिआहक शुभ दिन तँइ करबाक लेल नौकर भेज पण्डित बुद्धिनाथजीकेँ बजौलैन। पण्डीजी लगले उपस्थित भेला। आनन्द बाबू पण्डीजीसँ बजला-

“पण्डीजी, बेटीक बिआह करब, सम्बन्ध ठीक भऽ गेल अछि से अपने एकटा उत्तम शुभ दिन उचारि बताउ। अखन समैध साहैब आएले छैथ, दुनू गोरे मंजूर कऽ लेब।”

पण्डीजी बजला-

“मालिक, बिआह आ पूजापाठ तँ हमर पेशे छी। हमरा कोनो पंचांग देखबाक अछि। बिआहक दिन तँ हमरा मुहेँमे रटल अछि। आइसँ पनरहम दिनक दिन भेल, सभसँ उत्तम लगन अछि ओइ दिन। काजोक लेल दिन ने बेसी आ ने कम भेल।”

पण्डीजीक बात सुनिते दुनू समधी बिआहक दिन मंजूर करैत अपन-अपन काजमे लगि गेला।

आनन्द बाबू बिआहक सामग्री जुटाएब आ नौत खिराएब शुरू कऽ देलैन। भोजन, मिठाइ बनबैक लेल हलुवाइ, पण्डाल सजेबाक लेल टेन्ट, मरबा बनेबाक लेल मिस्त्री, बरियातीक सुआगत लेल आदमी सबहक चयन करए लगला।

आनन्द बाबूक एक पुरान मित्र, स्कूलिया संगी, पण्डित उग्रनाथजी छैथ। हुनकर घर पाँच-छह कोस दूर छैन। ओ पैघ विद्वान छैथ। वनारस यूनिभरसिटीसँ ज्योतिषाचार्य केने छैथ। हुनका न्योता देबा लेल आनन्द बाबू चिट्ठी लिखि अपना मनेजरकेँ दऽ पठौलखिन।

मनेजर पण्डित उग्रनाथ जीक घर पहुँचल। पण्डीजीक लग जा प्रणाम करैत अपन नाओं ठेकान बता चिट्ठी दऽ बिआहक न्योता मौखिक रूपमे सेहो देलकैन।

पण्डित उग्रनाथजी चिट्ठी आ न्योता ग्रहण केलैन तथा चिट्ठी पढ़ि मनेजर साहैबसँ बजला-

“सुनू अहाँ अपना मालिककेँ कहबैन जे बिआहक दिन शुभ नइ अछि। हमर मित्र केना ई लगन मंजूर केलखिन। एहेन दिनमे पागलो लोक ने बिआह करैए।”

मनेजर अबिते आनन्द बाबू लग बाजल। मालिक तुरन्ते नौकरकेँ भेज पण्डित बुद्धिनाथजीकेँ बजा सारा वृतान्त कहलैन।

पण्डित बुद्धिनाथजी सुनिते आवेशमे आबि एक लप माटि लऽ

आनन्द बाबूक हाथमे दैत बजला-

“हमर उचारल आ बनौल बिआहक दिनकेँ जे उल्लंन करता ओ हमरासँ पहिने शास्त्रार्थ लेल तैयार भऽ जाउथ। हमहूँ कोनो अछरकटुआ पण्डित नइ छी। ऐ परोपट्टामे हमरासँ बेसी जजमनिका किनका अछि। आइ धरि कोनो पण्डितकेँ हमरा सामने सिर उठेबाक साहस नहि भेलैन। मुदा मालिक ई तँ पहिने कहू जे कोन पण्डित एहेन बात अपनेकेँ कहला।”

आनन्द बाबू चिन्तित मुद्रामे बजला-

“पण्डीजी, अहाँ होश सम्हारि कऽ बाजू, जे पण्डित ई बात हमरा कहलैन हेन ओ हमर मित्र सेहो छैथ। आ सुनि लिअ, ओ कोनो ईग्गी-दुग्गी पण्डित नहि, काशी बनारसक पढ़ल आ नमहर ज्योतिषाचार्यक डिग्रीधारी छैथ। हुनका अहाँ माटि दऽ चैलेन्ज करै छिऐ। हुनकर नाओं छिऐन पण्डित उग्रनाथ।”

‘पण्डित उग्रनाथ’ सुनिते बुद्धिनाथजीकेँ जेना बुधिये हेरा गेलैन। नाग जकाँ जे फुफकार कटै छला से सभटा एकाएक मलिन भऽ गेलैन। मने-मन सोचैत-विचारैत बुद्धिनाथ पण्डित अपन घर दिस विदा भेला। घर पहुँचते मनमे खुदबदी हुअ लगलैन। स्नान-धियान कऽ पूजा-पाठ केला पछाइत पनिपीआइ करि पण्डित उग्रनाथजीक घरपर पहुँचला। ओना, दरबज्जा लग पहुँच आगू बढ़ैक हिम्मतमे थोड़ेक कमी आबि गेल छेलैन तथापि हिम्मत जुटा कऽ दरबज्जापर गेला।

उग्रनाथ बाबू दुआरियेपर नमहर आसन लगा माघक रौद तपैत शास्त्र-वेदक अध्ययन कऽ रहल छला। बुद्धिनाथजी दुआरिपर पहुँचते पण्डित उग्रनाथजीक पएर छुबि प्रणाम कऽ अपन परिचय दैत बजला-

“हम अहींक जाति स्व. पण्डित शंकरक पुत्र बुद्धिनाथ छी। हमरा पण्डीताइक ज्ञानक अभाव नहि मुदा पिताजीक विरासतमे

यजमनिका बहुत भेटल अछि तहिसँ कमा-खटा गुजर करै छी। विनती करै छी हमर उचारल शुभ विआहक दिनक जँ अपने अशुभ बनेबै तँ हमर यजमनिका छिना जाएत। तखन हमर जिनगी केना चलत। हम अपनेक शरणमे छी, क्षमा कऽ दिअ आ कोनो उपाय बता दिअ जइसँ हम उबैर सकब, तखने हमर प्रतिष्ठा समाजमे बनल रहत। जँ से नहि हएत तँ आनन्द बाबू हमरा जीबए नइ देता।"

पण्डित उग्रनाथ बाबू योग्य आ अनुभवी बेकती छैथ। ओ पण्डित बुद्धिनाथक विनती सुनि हुनकर हृदय द्रवित भऽ गेलैन आ अतिथि जानि आदरसँ बैसा समझाबैत बजला-

"देखू, पण्डिताइ केनाइ कोनो गुनाह नहि अछि। मुदा ओइले योग्य बनब जरूरी अछि। जाति महान नै होइए कर्म महान होइए। मुदा अहाँ जे गलती केने छी तेकर फलो अहींकेँ भोगए पड़त। बिना लगनोक जे लगन बनबै छिऐ तँ हानि किनका हएत।"

बुद्धिनाथजी विनम्रतापूर्वक बाजल-

"अपने पैघ विद्वान थिकौं, शास्त्र-वेदसँ कोनो उपाय बता देल जाउ जइसँ हम उबैर सकब।"

उग्रनाथ बाबू पंचांग निकाइल देखैत बजला-

"अपने जे शुभ बिआहक दिन बना निश्चित केने छी ओ दिन बिआहक लेल अशुभ अछि, ओइ दिन असलमे मृत्युयोग अछि। जँ बिआह हेबो करत तँ तीनटा आफत हएत। पहिल- कन्यापक्षक हानि, दोसर- वरपक्षक हानि आ तेसर- जे बिआहक दिन बतौलक तेकर हानि। तीनूमे सँ एकटा हानि हएत अर्थात् मरत। ई तँ बुझू कहबीए सिद्ध हएत- जेहेन पाठ ने पढ़ए पुत्ता अपने सिर बिसाए।"

बुद्धिनाथजी बजला-

"लिखल जे हएत से हएत मुदा ओइसँ हमरा की नोकसान? हम

तँ सेनूरदान करबैक मालिक छी। कम-सँ-कम सेनूरदानक उपाय तँ बता दिअ, बाँकी हम समैझ लेब। ओइ बिआहमे अपने आमंत्रित छीहे, उपस्थित भऽ हमरो आ आनन्दो बाबूक मान बँचा देबैन। सिरिफ कोनो विरोध आ उलझन नै हुअए। अहाँक उपस्थितिसँ हमरो बल भेटत। जखन अहाँ विरोध नै करबै तखन केकरा चौहु अलगत जे हमरा सामने बाजत। सिरिफ उपाय बता दिअ।"

पण्डित उग्रनाथ बाबू बजला-

"कोनो तिथि चौबिसो घन्टा अशुभ नै होइए, क्षण-पल भरि लेल जरूर शुभ होइए। ओ शुभ समय रातिक बारह बाजि कऽ पाँच मिनटमे अछि, ओइ समय मुस्तैद रहि सेनूरदान करा देबइ।"

बुद्धिनाथजी खुशी होइत बजला-

"ओ समय 12:05 रातिक हमरा जीहपर रटल रहत। बरियाती अबिते कोनो विद्ध होइ आकि नहि होइ, मुदा ओइ समयमे हम पहिने सेनूरदान करा देबै, बाँकी काज घरवारी अपन आगू-पाछू करबैत रहता।"

पण्डित उग्रनाथ बाबूक पएर छुबि प्रणाम कऽ बुद्धिनाथजी घर दिस विदा भेला।

पण्डित उग्रनाथ बाबू, बुद्धिनाथक पण्डिताइक मुर्खतापर सोचए लगला। सोचब रहैन जे बुद्धिनाथ अपन पिताक विचारसँ विपरीत केना भेला? पण्डित शंकर मिश्र ऐ इलाकाक प्रसिद्ध विद्वान आ ज्योतिषी छला। भागवत कथा वाचन, यज्ञ, हवन, पूजा-पाठ, घरवास, डीहगुनाइ आ जन्म कुण्डली बनेनाइ आदि काजक लेल मसहूर छला। मुदा हुनकर पुत्र अछरकटुआ केना भेल? तेतबे नहि, अछरकटुआ रहैत एतेक दिन धरि अपन जजमनिका केना सम्हारि रखलक?

एमहर बिआहक दिन लगिचा गेल। आनन्द बाबू जोर-शोरसँ काजक तैयारीमे लगल छैथ। बिघा भरिमे पण्डाल, सैंकड़ो कार्यकर्त्ता गामक बारहो वर्णक लोक बरियातीक स्वागतक लेल तैयार। चारि-पाँच दिन पहिनेसँ दूध नपौनाइ, दही पौड़नाइ, हलुआइ सभ मिठाइ बनौनाइ शुरू केने अछि। गामक लोक आ कुटुम सभ पहिनेसँ काजक देख-रेखमे लागल।

आइ बिआहक दिन छी, बरियाती औत। समग्र गाममे खुशीक माहौल अछि। सभ लोक स्वागतक लेल तैयार अछि। स्त्रीगण मंगल गीत गबैत अछि। बुद्धिनाथजी सबेरे साँझे आनन्द बाबूक दुआरिपर पहुँचला। सभ किछु घुमि-घुमि कऽ देख दलानक चौकीपर विश्राम लेल आसन रखलैन। दू-चारि होशगर कार्यकर्त्तासँ कहलखिन-

“देखू, हम अहीठाम आराम करै छी, जँ हम नीन पड़ि जाएब तँ हमरा समयक खियाल नै रहत, तँए दस बजे रातिमे उठा देब। किएक तँ सेनूरदान समयपर शुभ मुहुर्तमे कराएब।”

मुदा जखन झलअन्हारी भेल तखन पण्डीजीक मन भेलैन जे रातिमे भोजन विलम्बसँ मिलत। से नहि तँ अखन सभ कियो फुर्सतमे अछि अखने, सबेरे-सकाल पहिने भोजन कऽ ली, पछाइत आराम करब नीक हएत।

पण्डीजी आनन्द बाबूसँ बजला-

“मालिक, हमरा सबेरे किछु भोजन करा देल जाउ। हम आरामे करब आ समयपर उठि तैयार भऽ बिआह कराएब। बरियाती पहुँचलापर सभ कियो हुलि-मालिमे लगि जाएत।”

आनन्द बाबू एक आदमीकेँ जवाबदेही दऽ पण्डीजीकेँ बजा बैसा कऽ भोजन नीकसँ खुआबए लगला। केराक पातपर दही, चूड़ा, चीनी, तरकारी आ अनेको प्रकारक मिठाइ परोसि देलखिन। भोजन

स्वादिष्ट आ रूचिगर रहए। पण्डीजी तहिया-तहिया खूब खेलैन। भोजनक अन्तमे पण्डीजी बजला-

“यौ एतेक दूधक दही आ सामान सभ जे बनल तेकर छाल्ही की भेल, नै बँचल-ए?”

खियौनहार आदमी बाजल-

“छाल्हीकेँ के पुछैए!”

छाल्हीसँ भरल एकटा कौरना उठा कऽ ओ आदमी नेने आबि पण्डीजीक आगूमे रखि देलकैन। पण्डीजी छाल्ही-चूड़ा आ मिठाइ संगे कण्ठ ठेका कऽ भोजन केलैन। खाइ खातिर पानि पीबे ने करैथ। पेटमे जगहे ने बँचल रहि सकलैन। कहुना उठि हाथ-मुँह धोइ रसे-रसे दलानपर जा पड़ि रहला। पड़ले-पड़ल एकटा घड़ीबला बेकतीकेँ बगलमे ठाढ़ देख पण्डीजी बजला-

“बाउ, हमरा दस बजे रातिमे उठा दिहअ। हम समयपर बिआहक विधि करा सेनूरदान करा देब।”

साँझ पड़िते पण्डालसँ घर धरि बिजलीक रोशनीसँ जगमगा गेल। बरियातीक सभ समान इन्तजाम आ गामक लोक बरियाती देखबाक लेल पण्डालक चारूकात टाट लगल ठाढ़ रहए। तखने समाद आएल कि बरियातीक जीप गामक पछबरिया थलही नदीमे फँसि उनैट गेल। गामक सैंकड़ो नवयुवक नदी तरफ दौड़ पड़ल। थालमे उनटल जीपमे सवार बर आ लोकनियाँ सभ कादोमे नहाएल हल्ला करैत, सभ बाल-बाल बँचल। ग्रामीण युवक सभ मिलि ठेल-ठेल जीपकेँ नदीसँ ऊपर केलक। सभ कियो दोसर वस्त्र बदैल तैयार भऽ दरबज्जापर पहुँचला। सभ ग्रामीण लोक बरियातीक सुआगतमे जुटि गेला।

तही समयमे पण्डीजीक पेटमे जोरसँ दर्द शुरू भेल। सुखल

चूड़ा-छाल्ही आ मिठाइ पेटमे फुलि बढ़ैत रहए तँए पेट फुलि कऽ ताज कऽ देलक। पण्डीजीकेँ कुहरैत देख किछु लोक जमा भऽ गेल। ओइमे सँ एकटा बुढ़बा बाजल-

"पण्डीजीक पेटमे निनाइ उखैर गेल अछि से कारी पहलवानसँ पेट ससरबा दियौ। ओ ससारिते देरी ठीक कऽ देतैन।"

तुरन्ते कारी पहलवानकेँ बजौल गेल। कारी पहलवान अबिते देरी एक माली करू तेल मंगा पण्डीजीक पेटपर चपगरसँ तेल लगा हाथसँ ससारए लगलैन। पहलवान आदमी जोरसँ दाबि-दाबि ससारैत रहए। पण्डीजीक पेटक आँत फाटि गेल। ओ जोर-जोरसँ चिचियाए लगला...।

चिचियाइत पण्डीजी बजला-

"हौ बाप! आब हम मरि जाएब। बँचाबह हौ लोक सभ..!"

एमहर बिआहक समय, दरबज्जापर बरियातीक सुआगतमे सभ लागल छला। डॉक्टरी के लऽ जाएत पण्डीजीकेँ। मुदा आनन्द बाबू खटियापर टंगबा कऽ आदमीक संगे होस्पीटल भेजबा देलखिन। मुदा पण्डीजीकेँ रस्तेमे पेट फाटि गेल आ मरि गेला।

गामपर बरियाती आबि घर-दुआरी लगल रहए, ऐ परिस्थितिमे पण्डीजीक लाश केना आनन्द बाबूक दरबज्जापर आनैत। सबहक विचार भेल जे बाहरेसँ बाहर पण्डीजीक लाश हुनके घर पहुँचा देल जाए, हुनकर परिवारक लोक दाह-संस्कार करत आ अपना सभ नहाए-सोनाए बरियातीक सुआगत करब, सहए कएल गेल।

बरियातीक सुआगत आ बरमाला कार्यक्रमक पछाइत बिआहक काज हएत।

मुदा बिआह कोन पण्डित करौत। पण्डितक अभावमे आनन्द बाबूक मित्र पण्डित उग्रनाथ बाबू जे अतिथिक रूपमे आएल छला ओ

सही समयपर माने बारह बाजि कऽ पाँच मिनटपर नीक मुहुर्तमे बिआहक काज सम्पन्न करौलखिन। भिनसर होइते बरियातीकेँ डाली-पाती दऽ विदा केला पछाइत जखन पण्डित बुद्धिनाथजीक मृत्युक समाचार समुच्चा गाममे पसरल, तखन पण्डित उग्रनाथ बाबू मने-मन बजला-

"हम पहिनहि हुनका कहने छेलिऐन- जेहेन पाठ ने पढ़ए पुत्ता अपने सिर विसाए।"

❑

शब्द संख्या : 1673

कौल्हुक सुच्चा करुतेल

बात तीन-चारि दसक पूर्वक छी। तहिया हम नवालिके रही। फागुन मास रहै, पछिया हवा रमकैत रहए। रबिया आ बुधना दुनू भाँइ चिमनीपर पजेबाक खेबालमे माटि बनबए गेल रहए। माटि कचैर बना दुनू भाँइ संगे लेढ़ाएले घुमि घर आएल। रौदाएल रहए, पोखैरक महारपर गाछक छाँहैरमे आबि जिराइत रहए, मन थिर भेला पछाइत पोखैरमे भरि मन देह मांजि नहा कऽ घर विदा भेल। घर पहुँचते मटियाएल देह उज्जर लगबे करए आ चुनचुनेबो करए। दुनू भाँइक राँइ-बाँइ देह देख माए बजली-

"बौआ, तोरा दुनू भाँइक देह किए एना राँइ-बाँइ फाटल लगै छौ! कनी करुतेल किए ने लगा लइ छैं?"

रबिया बाजल-

"से तँ ठीके माए, बहुत दिनसँ तेल-कुड़ देहमे नै औंसलौं हेन। घरसँ नीकहा करुतेल नेने आ।"

माए बजली-

"निकहा तेल तँ बौआ कनियेँ रहए, सेहो कहिया ने सधल। तखन बजरूआ खाँटी तेल कनी अछि से औंस ले।"

रबिया-बुधना दुनू भाँइ खूब चपकारि-चपकारि तेल देहमे

लगेलक। देहक चमड़ी जे फाटल छल तइमे रबरबाए कऽ तेल लगल आ देहमे लहैर मारए लगल। जहिना मसल्ला पीसैकाल मिरचाइक दाफसँ हाथ लहरैए तहिना समुच्चा देहमे लहैर मारए लगल। बुधना रबियासँ पुछलक-

“भैया, बजारक खाँटी करुतेल देहमे लगेलापर एतेक किए लहैर मारैए?”

रबिया बाजल-

“रौ बौआ, की कहबौ तेलक हाल। जहिना लोको रंग-बिरंगक अछि तहिना तेलो। ई जे बजारमे खाँटी तेल बिकाइए से कोनो ऐठाम बनैए जे सुच्चा तेल रहत। आन-आन राज्यमे तेलक कारखाना लगल अछि जइमे बहुतो जीज-वौसक तेल बनैए। तेलकेँ छानि शुद्ध कऽ रंग आ केमिकल मिला टीनक-टीन भरि देशमे बिकाइए। तेलो टटके बुझेतौं। मुदा कहियाक बनल छी आ केतेक दिनक पछाइत बिकाइए से लिखलेटा रहैए।”

बुधना बाजल-

“जखन देहमे औंसलासँ एतेक लहरैए तँ देहक चमड़ीकेँ बिगाड़ि तँ ने देत?”

रबिया बाजल-

“देहक चमड़ियेटा नै बिगाड़ैए बल्कि ऐ तेलक बनल खाइबला चीज-वौस लोक बेवहार करैए तइसँ बहुतो हानि आ बेमारी होइए। चर्मरोग, गैष्ट्रीक अल्सर, अपच आ लीवर-सूजन बेसी होइए। जँ आँखि कानमे पड़ि जेतह तँ आँखियोमे अँखिदुखी आ कानोमे कनदुखी हुअ लगतह।”

गप-सप्प होइते रहए कि शिबु काका खराम पहिरने पट-पटबैत पहुँचला। दुनू भाँइकेँ घौलाइत-बड़बड़ाइत देख ठाढ़ भऽ बजला-

“रौ रबिया-बुधना, बेर खसि पड़ल आ तूँ दुनू भाँइ बैसल की करै छीही?”

रबिया बाजल-

“काका, हम दुनू भाँइ सुच्चा करुतेल आ बजरूआ खाँटी करुतेलमे ओझराएल छी। हम सभ तँ काठक कौल्हु तँ नै देखलौं।”

शिबु काका बजला-

“रौ तेलक भाँज एना नै ने बुझबिही। पहिने अँगना जो खेने आ, तखन हम बुझा देबौ।”

बुधना बाजल-

“काका, ताबे अहाँ दलानेमे बैसू, हम दुनू भाँइ खेने अबै छी।”

कहि, रबिया-बुधना अँगना जा माएसँ खेनाइ मांगि खाए लगल आ माएसँ बाजल-

“माए, तहूँ खा कऽ दलानेपर अबिहेँ। शिबु काका बैसल छथिन, ओ करुतेलक महत्वपूर्ण बात बतेता।”

माए बजली-

“चल तूँ सभ हम पीठेपर अबै छी।”

रबिया सुपारीक टूक काकाकेँ हाथमे दैत चुनौटी निकालि चून-तमाकुल चुनबए लगल। दुनू गोरे तमाकुल खा थूक थुकैड़ गप-सप्प शुरू केलक। बुधना आ रबियाक संग माए सेहो कातमे बैसली। रबियासँ बेसी धियान बुधना रखने रहए जे सुच्चा करुतेलक हाल केना जानी, तँए ओ बिच्चेमे काकासँ पुछलक-

“काका, आब तँ सभ निचेन भऽ गेलौं सुच्चा करुतेलक चर्चा भऽ जाएत तँ बड़ नीक हएत।”

शिबु काका बजला-

“देरी हमरामे नहि, तोरे सभमे छह। हम तँ चाहबे करै छी जे गाम-समाजक पुरना रीति-रिवाज आ चालि-चलैन सभ कियो जानि जाए, जइसँ समाजक प्रथा चलैत रहत। किएक तँ पहिलुकबा जे चालि-चलैन अछि ओइसँ लोकक संस्कृति आ रोजगार चलन्तमान होइए आ शुद्ध समानो भेटैए। ने मिलाबट आ ने बेइमानी।”

बातकेँ शिबु काका आगू बढ़बैत फेर बजला-

“देख रबि, तूँ सभ अखन धिया-पुता छँह। तोहर बाप मरि गेलखुन मुदा माए जीविते छथुन। पुछि लहुन तोरा माए संगे बापकेँ चुमौन करा हमहीं अनने छी। ई जे हमर चौरस चाकर सुडौल आ पाँच हाथक देह देखै छीही से शुद्ध अपन गाए-महींसक दूध-दही आ घी खेलहा पोसल छी। पौआ-पौआ कठहा कौल्हुक सुच्चा सेरसो-तोड़ीक तेल सभ दिन ऐ देहमे पचबै छेलों। तँए ई देह अखनो इस्पात जकाँ सोझ आ मजगुत अछि। की कहबौ, जखन तोरा बापक चुमौन करबए गेलौं तँ किछु लोककेँ गुदुर-फुसुर करैत सुनिलेए की हमर कान ठाढ़ भऽ गेल। हम अपन चलह-पहल करए लगलौं। हमरा देख कऽ ओतुक्का लोककेँ सिटी-पिटी बन्न भऽ गेलै। आ केकरो चौहुओ ने अलगले आ ने मुँहसँ बकारे फुटलै।”

बिच्चेमे बुधना बाजल-

“कका, अहाँ तँ अपन बीतल बात कहलौं मुदा सुच्चा करुतेलक बात बता दिअ जे हमहूँ सीखब।”

काका बजला-

“बुधन हम बुढ़ भेलौं बजैत-बजैत भँसिया जाइ छी। सभ गप मनो नइ रहैए। तूँ ठीके हमरा मोन पाड़ि देलेँ। अच्छा, सुन कहै छियौ- पहिने समाज पछुआएल छल। लोक सभ काजकेँ बाँटि-बाँटि लूरिक हिसाबे करै छल आ एक-दोसरकेँ सहयोग करै छल। तँए जेकर जे

काज छल ओ ओइ काजक लूरि सीखने ओस्ताज कहबै छल आ तहिना समाजो रहए। सबहक काजो सभ रंगक रहइ। कियो काठक काज, कियो सोना-चानीक काज, कियो खेती-बाड़ी तँ कियो तेल पेरइ छल। ऐ तरहेँ अनेकानेक काज समाजमे होइत रहए। सभ तरहक काजो आ सभ चीज-वौसक जरूरत सेहो एक-दोसरसँ पूर्ति होइ छल। अही समाजमे एकटा विशेष वर्ग अछि जे कठहा कौल्हु बना बरद जोइत घुमा-घुमा तोड़ी, सेरसो, तीसी, तिल पेर-पेर समाजमे सुच्चा तेलक कारोबार करै छल जे अखन अन्त भऽ गेल अछि। किएक तँ अखन हाट-बजारक बेवस्था अछि, जइमे सभ समान बनले-बनल भेटैए। अखन ने ओ लोक आ ने ओ समाज अछि। जहिना फेंटल लोकक समाज अछि तहिना मिलाबट कएल चीज-वौस। पुछही ने माएकेँ, पहलवान ब्राण्ड, डबल परी, हिरण छाप, इंजन छाप, मशाल छाप, धारा, फरचुन आ स्कूटर छाप इत्यादि, ई जे रंग-बिरंगक डिब्बाबला करुतेल भेट रहल अछि से पहिने भेटै छल?”

माए मुड़ी डोलबैत बजली-

“नहि, ई सभ तेल पहिने कहाँ छल। एकरा सबहक नाउओं ने सुनने रही। ई सभ तेल तँ आब चलनमे आएल।”

बुधना बाजल-

“तखन लोक पहिने तेलक जरूरत केना पुरा करै छल?”

शिबु काका बजला-

“ओइ समयमे समाजमे कौल्हुसँ तेल पेराइ छल, कौल्हेबला सँ लोक करुतेल कीनै छल। चाहे, जेकरा सेरसो-तोड़ी रहै छेलै ओ बहतौन दऽ पेराइये लइ छल। जैठाम कौल्हु नइ रहै तैठाम लोक तेलक भौड़ी-बट्टा करए। टाड़ी-टाड़ामे सुच्चा करुतेल लऽ गामे-गाम घुमि बेचए। तेलक नपना कोइया रहै जे कनमा, चाठी, अधपौआ आ पौआ

भरिक रहै छल। कोइए-सँ नापि तेलक बिकरी होइ छल। रूपैआ अथबा अन्नक बेच दऽ लोक तेल लइ छल।”

जखन समाजमे किनको बेसी तेलक जरूरत होइ छेलैन तँ ओ कौल्हुबलाक एठीम सेरसो-तोड़ी आ कि तीसी लऽ पहुँचै छला। कौल्हुबला सेरक हिसाबसँ बहतौन लऽ पेर दइ छेलइ। बहतौनमे जेतेक सेरसो-तोड़ी पेरै तेतेक अन्न मेहनतमे लइ छेलइ। हिसाबो नीके बनल छेलै, तीन सेर सेरसो-तोड़ीमे एक सेर तेल आ तीन सेर अन्न बहतौन लइ। तेलक खइर सेहो कौल्हुबलाकेँ होइ छेलइ। खइरकेँ लोक गाए-महींसकेँ कुट्टी-सानीमे खिबैले कीनि लइ छल। मेहनतिया काज भेने आमदनियो दोबर, एकटा बहतौन दोसर खइरक आमद।

रबिया सुनबेटा करए मुदा बुधना मने-मन अपन रोजगारक बुधियो लगबए। जखन अपने घरमे रोजगार भऽ जाएत तखन कमा कऽ जिनगी नीकेसँ जीब लेब। गपक क्रम टुटल देख बुधना बाजल-

“काका, ई काठक कौल्हु केना आ के बना देत? जँ बनि जाएत आ सभ सरमजानक ओरियान भऽ जाएत तँ हम यएह काज करब। ने रौद-बसातक डर रहत आ ने कखनो बैसारी हएत। जेहेन मेहनत करब तेहेन आमद हएत।”

शिबु काका बजला-

“काज तँ बड़ नीक अछि। गाम-समाजसँ जुड़ल स्वतंत्र-स्वावलम्बीबला काज अछि। जेहेन काज तेहेन मान-सम्मान। आत्मनिर्भरता सेहो आबि जेतौ। काजो तेहेन अछि जे सभ दिन चलतौ। कहियो बैसारी नै हेतौ। किएक तँ तेलक बिना केकरो काजो थोड़े चलत। ओना, कौल्हुक काज अखन उसैर गेल अछि। कौल्हु बनबैक कारीगर सेहो आब नहियेँ रहल। कौल्हु बनाएब सभ मिस्त्रीक बस नहि। जँ कारीगर मिल जाए तँ अखनो ई काज बड़ नीक हएत।

समाजमे सभकेँ सुच्चा करुतेल ई भेटत आ एकटा रोजगार समाजमे ठाढ़ हएत। कौल्हुक कारीगरोकेँ रोजगार बढ़त। एकटा समाजक जीविकोपार्जनक कला जे उसरन भऽ गेल सेहो पुनः पुनर्जीवित हएत।”

बुधना बाजल-

“कका, जँ कौल्हु बना काज करब तँ कोन-कोन चीजक ओरियान करए पड़त?”

शिबु काका बजला-

“ओरियान की करए पड़त, सभ समान तँ अपना घरेमे अछि। मुदा कला बिनु जानवर छी। तखन कौल्हु लेल एकटा मोटगर कटहरक छह-फिट्टा टोन आ मोहैन लेल चारि-पाँच फीटक कुसुम वा बेलक सुरेबगर लकड़ीक जरूरत पड़त। किए तँ मोहैन ओही दुनू लकड़ीक होइए से बुझल अछि। तेकर अलाबे एकटा मजगुत पहटा, पालो आ एकटा भुटबा बूतगर बरद चाही। जँ बेसी कौल्हु चलत तँ दूटा बरद, नहि तँ एकोटासँ काज चलत।”

बुधना बाजल-

“कटहर आ बेलक गाछ अपने अछि। पालो, पहटा आ हरबोहा जोड़ा बरदो अछिए। सिरिफ कौल्हु बनबैबला कारीगर खोजए पड़त। हम इएह रोजगार करब। घरे गाममे रहि कमाएब- खाएब आ समाजक बीच रहब। कका, कनियेँ धियान दऽ कारीगर खोजि कौल्हु बनबा दीअ।”

शिबु काका बजला-

“कारीगर खोजैले गामे-गाम जाए पड़त। किएक तँ ई रोजगार गामे-घरक छी। सिजिनो तेल पेरैक आबि रहल अछि। तोड़ी, तीसी आ सेरसो ऐबेर खूब उपजबो कएल अछि।”

किछुकाल रूकि शिबु काका फेर बजला-

“रबि, तूँ काल्हिये कटहर आ बेलक गाछ काट आ हम-बुधना दुनू गोरे कारीगरक खोजमे जाएब। जाबे कारीगर नै भेटत ताबे घुमि कऽ घर नै आएब।”

शिबु काका आ बुधना भोरे एकटा झोरामे बटखर्चा- दू सेर चूड़ा-मुरही आ नोन-मिरचाइ तैसंग धोती-गमछा लऽ विदा भेला। पहिने जइ-जइ गाममे बेसी कौल्हु चलै छल से काकाकेँ बुझले छैन। फुलकाही, हिरपट्टी, लदनियाँ होइत लौकही पहुँचला। पता चललैन जे कौल्हुक कारोबार कहिया ने बन्न भऽ गेल आ कारीगरो सभ बुढ़ाए-बुढ़ाए मरि गेल। अखन एकटा बुढ़ा कारीगर महदेवामे पंची साहु, सोमरन पट्टीमे दुनू भाय सोनेलाल साहु आ किशुन साहु पुरान इलाकाक मसहूर कौल्हुक कारीगर छैथ। कौल्हु बनेबो करै छैथ आ भंगठल कौल्हुकेँ मरोमत सेहो करै छैथ। शिबु काका आ बुधना खोजैत झलफल साँझमे सोने लाल साहुक घरपर पहँचला।

सोनेलाल साहु आएल अतिथिकेँ आदर-सम्मानसँ चौकीपर बैसा सुआगत केलक। शिबु काका सोनेलालसँ कहलखिन-

“हम एकटा कठहा कौल्हु बनबए चाहै छी से अहाँ बना दिअ।”

सोनेलाल बाजल-

“कौल्हुक काज तँ बहुत पहिने बन्न भऽ गेल, ओजारो सभ हराए-ढराए गेल। तखन एते दूरसँ एलौं हेन तँ पहिने जिराए किछु जलखै खा चाह पीबू तखन काज हेबे करत।”

सोनेलाल किशुनकेँ बजौलक। किशुन सोनेलालक पितियौत भाए, हुनका लग औजार सभ अछिए। दुनू भाँइ कौल्हु बनबैले तैयार भेला। किशुन लाल बाजल-

“हम दुनू भाँइ जाएब आ हमर संगबे महदेवाक पंची साहु सेहो

रहता। तीनू गोरे मिलि काज कऽ देब। खेनाइ-पिनाइ छोड़ि तीन हजार रूपैआ लेब। कौल्हु बनबैसँ लऽ कऽ चालू करैत-करैत सात-आठ दिन समय लागि जाएत।”

शिबु काका मंजूर कऽ लेलैन। रातिक भोजन कऽ सभ कियो सुति रहला। अन्हरौखे उठि सभ कियो विदा भेला। रस्तेमे चाह-पान करैत दुपहरमे पंची साहुक घर महदेवा गाम पहुँचला। दिनक भोजन कऽ साँझ धरि घुमि अपन गाम एला। थाकल ठेहियाएल सभ कियो खाए-पीब कऽ आरामसँ सुति रहला। भोरे उठि दिशा-मैदानसँ आबि लकड़ीक टोन गाछीएमे बना उठा दरबज्जापर राखि छेब कौल्हु बनेनाइ शुरू कऽ देलक।

लकड़ियो नीके रहइ। खूब अहगर, तीन-चारि सेरक खोंइछबला कौल्हुक पेट साफ करैत तेलक निकास बनबए लगल। मोहैन बना बाँसक ओधिकेँ घुमौना, लकड़ीकेँ डँर-घुमौना सभ बनबैमे चारि दिन बीत गेल। पाँचम दिन कौल्हुमे बाँसक खाप पंची साहु भरि मोहैन सेट केलक। छठमा दिन कौल्हु गारि सभ सरमजानकेँ जुति लगा सेट केला पछाइत जगहकेँ नीप-पोति रातियेमे पूजा-पाठ कऽ प्रसाद चढ़ा देलक। सातम दिन भोरे तीन सेर सुखल तोड़ीमे एक चुरुक पानिक मोहि दऽ मिला कऽ कौल्हुमे दऽ पालो सेट कऽ बरद जोइत घुमबए लगल। पहटापर भार खातिर एक गोरे बैस गेल बा बरदोकेँ हाँकए लगल। घुमैत-घुमैत जखन पचास-साठि फेरा लगल की तेल गड़-गड़ा कऽ चुबए लगल।

गड़गड़ाइत तेल चुबैत देख सबहक मनमे खुशी भेल। गामक धिया-पुतासँ लऽ कऽ बुढ़-बुढ़ानुस, सबहक हुजुम लागि गेल। किएक तँ कहियो लोक कौल्हुसँ तेल पेरैत नै देखने रहए। एहेन साफ सुच्चा करुतेल देख सभकेँ अचरज लगए।

कारीगर पंची साहु अपने हाथे प्रसाद आ पहिल घानीक तेल लोकक बीच बाँटि देलक। दहिना हाथमे प्रसाद आ बामा हाथक तरहत्थीमे एक कोइया तेल। लोक सभ परसादी मुँहमे लऽ तेल माथक चानिपर रगड़ैत सुच्चा तेलक आनन्द लैत अपन-अपन घर विदा भेल।

सुच्चा करुतेलक खबैर समुच्चा गाममे पसैर गेल। देखैयो-ले आ तेलो लइले लोक एबो करए आ जेबो करए। बेरा-बेरी बरदकेँ उनटा-फेर कऽ भरि दिन कौल्हुमे जोतने आ सेरसो आ तोड़ी पेरैया करैत रहल। रबिया-बुधना तीनू कारीगरकेँ आ शिबु काकाकेँ मेहमान जकाँ आदर-सम्मान कऽ भोजन करेलखिन। भोजनक तरूआ, भुजुआ आ तरकारी ओही कौल्हुक सुच्चा तेलमे बनल। भोजनो सुआदिष्ट आ उत्तम रहए...।

शिबु काका बजला-

“बजारू खाँटी तेलक बनल तरूआ-तरकारी तँ चमचमाइन लगैए मुदा काठक कौल्हुक सुच्चा तेलक बनल चीज-वौस तँ घीओसँ चिक्कन होइए।”

रबिया-बुधना शिबु काकासँ विचारि तीनू कारीगरकेँ एक-एक जोड़ धोती-गमछा आ 51-51 टाका विदाइ देलक। तीन हजार रूपैआ, जे मजूरी गछने छल सेहो देलक। तीनू कारीगर विदा होइसँ पहिने कौल्हु लग जा देखलक। तखन बुधना कौल्हु जोतने रहए। सोनेलाल ठाढ़ भऽ कौल्हुकेँ देख बजला-

“रबि आ बुधन दुनू भाँइ सुनह, अखन एक-दू मास कौल्हु चलबह, जखन खापक घाट चिक्कन भऽ जाएत, तखन तेल कम उतरए लगतह तँ हमरा बजाबिहह। हम आबि खाप बदैल ठीक कऽ देबह आ दुनू भाँइकेँ सिखाइयो देबह तँ आगू ऐ तरहक भंगठी अपनेसँ कऽ लइ जेबह। किएक तँ कौल्हुक खाप बदलनाइ झंझटिया होइए। जँ

कनियोँ उरेब भऽ जेतह तँ तोड़ी-सेरसो पिसेबे ने करतह आ ने तेल चुतह। तूँ दुनू भाँइ मनसँ काज करह। हम एहेन लक्ष्मी कौल्हु बना देलिअ जे तोरा धनक अम्बार लगा देतह।"

दुनू भाँइकेँ पीठ ठोकि आशीष-वचन दऽ कारीगर विदा भेलाह।

रबिया-बुधना दुनू भाँइ बेरा-बेरा कौल्हु चलबए आ माए भानस-भात कऽ बरदक कुट्टी-सानी करए। खइर-नोन फुला कऽ बरदोकेँ सानी समयपर खुआबए लगली। बरदो खइर खा तैयार भऽ गेल। लोको सभ तेल-खइर कीनैले आबए लगल। अपनो गामक लोक आ आनो गामक लोक सेरसो-तोड़ी, रैंची-तीसी लऽ लऽ आबि पेरबैले नम्बर लगौने रहैए। तीनिए-चारि मासमे बुधना-रबियाक घर अन्न आ खइरसँ भरि गेल। तेल-खइर जे नगदी बिकाइ तइसँ हाथपर साए-दू-साए रूपैआ हरिदम रहबे करैए। जइ अन्न आ रूपैआ खातिर रबिया-बुधना हरदम बेकल रहए, अनकर काज करए आ बैसारीमे चिमनीपर पजेबा पाथि गूजर करए ओकरा कर्म संगे किश्मतो साथ देलक जे आइ अपने काजसँ छुट्टी नइ होइए। काजो बढ़ल आ आमदनी सेहो बढ़ल।

रातिमे दुनू भाँइकेँ समझाबैत माए बजली-

"बौआ, पहिने दिक्कतदारी रहए आ काजो-आमदनी कमे रहए। मुदा आब काजो बढ़ि गेल, तँए कहै छिअ जे दुनू भाँइ बिआह कऽ लैह जे पुतोहु घर रहती तँ काजो सम्हारि देती। हम तँ बुढ़ भेलौं नजरियो कम अछि तँए तोरो सभसँ विचार करब उचित बुझना जाइए। अहुना जँ लोक घरमे कोनो काज करैए तँ अपनामे विचारि करैए, तखन ओ काजो नीक होइए।"

रबिया-बुधना दुनू भाँइ माइक बात सुनि किछु बाजब उचित नइ बुझि चुप्पे रहल।

बेटाक किछु उत्तर नहि पाबि मनमे सोचली जे केकर बेटा-बेटी माए-बापकेँ सोझमे कहैए जे हमरा बिआह कऽ दए।

भिनसरबेमे रबिया-बुधना उठि कौल्हुमे घानी दऽ बरद जोतने रहए कि शिबु काका खराम पहिरने पटपटबैत पहुँचला। रबियाक माए बरतन-बासन करै छेली। खरामक पटपटाएब सुनि लगमे आबि शिबु काकाकेँ बैसैले कहलखिन। तखने बुधना सेहो कौल्हुक घरसँ निकलल तँ शिबु काकाकेँ देख माएसँ बाजल-

“माए कनी टेस्टगर चाह बनेने आ, कको पीता आ अपनो सभ पीब। भरि दिन तँ काजमे जोतले रहै छी।”

जेतेक कालमे रबियाक माए चाह बना ऐली, तैबीच बुधना शिबु काकासँ गपो करए आ तमाकुलो चुनबए। शिबु काका रबियासँ कौल्हुक आमदनीक चर्च सेहो केलैन।

चाह नेने रबियाक माए एली। शिबु कक्काक हाथमे चाहक गिलास पकड़बैत बजली-

“भैया, अपने समाजक बुजुर्ग आ अनुभवी बेकती छथिन। जहिना हमरा दुनू बेटाकेँ रोजगार कऽ देलखिन तहिना दुनूकेँ बिआहो करा घर बसा देथिन। रबियो-बुधनाकेँ बाप नै छै जे कहबै। तखन तँ नीक कि अधला, देख-रेख तँ हिनके करए पड़तैन।”

शिबु काका बजला-

“सेहो करब मुदा समय लगा कऽ ने करब। जँ एतेक दिन दिक्कत काटलह तँ थोड़बे दिन आरो काटह। एमकी शुरूए बला लगनमे दुनू भाँइक बिआह कऽ देब। बेरा-बेरी करब तँ काजो बरदाएत आ खर्चो बेसी हएत।”

रबियाक माए बजली-

“भैया, लड़की बेसी पढ़ल आ सिफलाहि नै हुअए। बिनु पढ़लो हुअए मुदा कमासुतनी, पितमरू आ नीक-बेवहारक हुअए।”

शिबु काका बजला- “लेनो-देन करबहक?”

रबियाक माए बजली-

“लेन-देन की करब भैया, अनका धनसँ लोक धनिक नै होइए। दहेजक रूपैआ तँ हहासेमे उड़ि जाइए आ उनटे बदनामी माथपर चढ़ि जाइए। हमरो आ हमरा बेटाकेँ एहेन विचार नै अछि जे ई करम करी। धन तँ लोक अपना कर्म आ मेहनैतसँ कमाइए। अनकर देलहा धन बाढ़िक पानि जेना अबैए तेना चलियो जाइते अछि। मुदा मेहनतक कमाएल धन स्थायी होइए। हमरा किछु ने चाही, खाली कमासुतनी पुतोहु कऽ दौथु।”

शिबु काका बजला- “बड़ नीक विचार छह तोहर। सएह करब।”

गप-सप्प चलिते रहए कि चन्दू मालिक रबियाक दरबज्जापर एला। शिबु काकाकेँ देख बजला-

“गोर लगै छी काका।”

शिबु काका अकचकाइत बजला-

“नीके रहअ बौआ चन्दु। आबह, बैसह। बहुत दिनपर भेँट भेलह, हाल-चाल कहअ।”

चन्दु मालिक बजला-

“सभ ठीके अछि काका, भगवानक कृपा आ अहाँ सबहक दयासँ दनदनाइ छी।”

शिबु काका बजला-

“केमहर आइ चान उगल जे तूँ एमहर घुमै छह?”

चन्दु मालिक बजला-

“यौ काका, लोकेक मुहेँ प्रसंशा सुनि एलौं हेन। लगधग महिना दिन पूर्व पोता भेल। की कहब, जखन पोताकेँ बजरूआ खाँटी करुतेल लगा कऽ जाँतैए तँ बच्चा फकसियारी काटि कनैए। अपनो छगुन्ता होइए, तखन अपनो तेल लगा देखलौं तँ सौंसे देहमे लहरए लगल। आँखिमे भकभका कऽ लागल।”

शिबु काका बजला- “हौ चन्दु, घरमे ढेरक-ढेर सेरसो उपजल हेतह, अखने लऽ आनह, तुरन्ते रबिया पेर देतह। ओ शुद्ध कंचन तेल कथी-ले लगेलासँ लहरत आकि देहे लसियाएत।”

रबियाक माए घरेसँ सुनै छेली। मालिक पोताक नाओं सुनि ओ रौतुका कौल्हुक ठोपारीबला तेल एक बाटी नेने एली आ बजली-

“अखने ई तेल नेने जाथु, पोतोकेँ आ अपनो लगा कऽ देखिहथिन।”

चन्दु मालिक तेल देख सुघिं प्रसन्न भेला। घर पहुँचते पोताकेँ तेल लगबैले कहलखिन। पोताकेँ तेल लगा-लगा जेते जाँतए पोता तेते हँसए। कथी-ले एकोबेर चूँ-चाँ करत।

चन्दु मालिक ओइ तेलमे सँ कनी तेल लऽ अपना माथपर लगा मुँह-हाथमे सेहो लगेला। बड़ नीक तेल, ने कोनो झाँस आ ने एकोरत्ती लहैर। तखने दस सेर सेरसो लऽ पेरबए विदा भेला। सभ कियो वएह तेल आँसए आ तीमनो-तरकारी करए। लगबैयो आ खाइयोमे बड़ सुन्दर लागल।

चन्दु मालिक प्रसन्न भऽ सोचए लगला जे एतेक सुन्दर काज लोक छोड़ि किए देलक?

चन्दु मालिक सौंसे गामक लोककेँ दुपहरियामे अपने दरबज्जापर बैसा कऽ कहलखिन-

“जेहेन समय भऽ गेल अछि तइमे शुद्ध खाद्य भेटब कठिन अछि। मनुखकेँ अपन काजपर भरोस करए पड़त। तखने शुद्ध चीज-वौस प्राप्त हएत। सभ कियो अपन-अपन गाए-महींस पोसू तखन शुद्ध दूध-दही आ घी मिलत। अपन हाथक कुटल-पीसल चाउर-चूड़ा-आँटा इत्यादि उपयोग करू। अपनासँ सेरसो-तोड़ीक तेल पेराउ तखने शुद्ध तेलसँ भेँट हएत। शुद्ध खाद्य खेलासँ निरोग काया रहत। आइ जे एते रंग-बिरंगक रोग-व्याधि पनैप रहल अछि एकर कारण ईहो सभ अछि जे शुद्ध खाद्यसँ हम-सभ दूर भऽ रहल छी। अपना हाथे काज केलासँ बेकारी सेहो दूर हएत। अपन पूर्वज लोकैन अहिना जीबै छला। ऐ सभ काजसँ एक-दोसराक सहयोग होइए आ समाजमे एकता आ प्रेम सेहो बढ़ैए। लोको स्वावलम्बी आ आत्मनिर्भर बनि असली जिनगी जीबैए। जहिना गाममे रबिया-बुधना काठक कौल्हु बैसा अपन रोजगार ठाढ़ केलक आ अपना मेहनतक बदौलत जिनगीकेँ खुखहाल बनौलक तहिना गाम-समाजमे तेतेक रंग-रंगक काज अछि जइमे लोक मेहनत करए तँ गाम-समाज खुशहाल भऽ जाएत। गामक लोक जे कमाइ खातिर घर छोड़ि बाहर जाइए से ने जाए पड़त।”

चन्दु मालिकक बात सुनि लोक सभ काज करैक संकल्प लेलक। सभ कियो थोपरी बजा चन्दु मालिककेँ बातकेँ सम्मान केलक।

शिबु काका रबिया-बुधनाकेँ कमासुतनी लड़की खोजि बिआह कराए देलखिन। दुनू भाँइ मिलि आब कौल्हुक जगह लोहोबला तेलपेरा मशीन कीनि लेलक। आब काजो बढ़ि गेल छेलइ। दुनू पुतोहुओ घरक काज सम्हारि लेली।

❑

शब्द संख्या : 3063

दूधबेचनी

चलितर आ पवितर दुनू भाँइक समल्लिते कमौआ परिवार अछि। माए-बाप पहिनहि स्वर्गवास भऽ गेलखिन। एकटा बहिन-रीता जुआन अछि। बड़ लूरिगर-कमासुतनी सुन्नर अछि। मुदा पढ़ल-लिखल नै रहने बिआहक गड़े ने लगैए जे लग्न ठेकत।

नारेदिगरमे सम्पन्न परिवार हिरालालक छैन। हुनका एकेटा बेटा- सोनेलाल, परिवारो नीक गुणगर अछि आ धनक कोनो कमीए ने। मुदा बेटा मतिछिन्नु, बिआह हेबे ने करए। चलितर-पवितरकेँ गड़ लगल, ओ अपन बहिनक बिआह सोनेलालसँ बिनु दहेजक केलक।

रीता सासुर बसए लगली। समय पाबि सासु-ससुरक सेवा टहल सेहो करए। उत्तम विचार मनमे रखने आ करितो। दू बर्खक पछाइत वसन्त पंचमी दिन रीताकेँ जौंआँ दूटा बेटा भेल। परिवारमे सभ कियो खुशीक माहैल बनौने।

छठीहार दिन भोज-भण्डाराक सरमजान करए लगल। धुमधामसँ छठीहार मनौल गेल। गौंआँ सभ कहए जे भगवानो जेकरा दइ छथिन तेकरा छप्पर फारि कऽ।

मुदा रीताक परिवारमे ई खुशी बेसी दिन नै रहल। तीनिये बर्खक पछाइत सोनेलालक मति आरो बिगैड़ गेल। राज-राजक इलाज

आ सिद्ध ओझा-गुनीसँ झाड़-फूक करौलक मुदा सुधरल नहि, मरि गेल। पुत्रक सोगमे हिरालाल दुनू परानी सेहो मरि गेला। पति, सासु-ससुरक इलाज श्राद्ध-कर्म आ भोज-भातमे तेते ने खर्च भेल जे रीताक धन हहैर गेल। बहुतो घरक समान आ जमीन-जत्था बीकि गेल। ने घरमे बुढ़-बुजुर्ग रहला आ ने गार्जन। मसोमाती राज, ने कियो कहनिहार ने सुननिहार। तैयो रीता धीर-गम्भीर बनि अपन सुझ-बूझसँ परिवारकेँ आगू मुहेँ ससारैत रहली।

दुनू बेटाक लालन-पालनमे कोनो कोताही नइ हुअ देलक। पाँच बर्खक पछाइत दुनूकेँ गामक स्कूलमे पढ़बए लगल। घर-गिरहस्ती आ खेतीक काजक लूरि रीता नैहरेमे सीखने छेली, तँए घर भरल-पुरल रखने। मुदा 1954 ईस्वीमे कोसीक बाढ़ि-पानि तेतेक ने आएल जे सम्पूर्ण नारेदिगरकेँ तहस-नहँस कऽ देलक।

रीताक जमीन कोसीक पेटमे समा गेल आ जे बँचल से बालुक बुर्जा बनि गेल। खट्टा, काश, पटेर आ झौआक बोनक अलाबे किछु ने देख पड़इ। रीताक चास बिलैट गेल। अल्हुआ, सुथनी, मरूआ, कौउन आ कोदो उपजा कऽ रीता जीवन चलबए लगली। दुख-पर-दुख बढ़ितो रीता जिनगीसँ हारि नै मानली। किछु दिनक पछाइत जन-मजूरी कऽ घरक खर्च चलबए लगली।

रीताक मन मोहिया कऽ घुरियाए लगल। मोहियाइते मन घुमि कहलकै- दू-चारिटा लगहैर गाए-महींस पोसब।

रीता अपन गहना बेच दूटा महींस आ तीनटा गाए कीनि सेवा करए लगली। घासक कोनो कमीए ने छल। घास काटि-काटि गाए-महींसक आगू ओगारबो करए आ एक साँझ चरेबो करए। दूध बेच कऽ गुजर करए लगली। नीक आमदनी हुअ लगल। दूधक कारोबार देख रीताकेँ लोक दूधबेचनी कहए लगल। दूधबेचनी सुनि रीताकेँ

खुशीए होइत। मनमे होइत रहैन घूसखोरनी आकि घूसखौकासँ सात कच्छे नीक अछि किने।

बेटाकेँ पढ़बै खातिर रीता दिन-राति अपन काजमे मनसँ लागल रहै छेली। दुनू बेटा जहिना देखै-सुनैमे नीक तहिना पढ़ैयोमे चन्सगर। बपटुगर रहितो दुनू बेटाकेँ रीता दरभंगामे राखि पढ़बए लगली। कोनो दिक्कत नै भेने फस्ट डिविजनसँ पास करैत एक भाँइ बी.एस-सी आ दोसर बी.कॉम कऽ नोकरी तलाशए लगल।

नोकरीक कम्पेटिशन परीक्षामे एक भाँइ रेलबेमे आ दोसर भाँइ बैंकमे कमप्लिट केलक। दुनू बेटाकेँ आन प्रदेशमे नोकरी भेल। दुनू भाँइ अपन-अपन बिआह अपने मने परदेशेमे कऽ लेलक आ परिवार बसा-बसा दुनू भाँइ सुख-मौजसँ रहए लगल।

बुढ़ माएकेँ के देखैए। दुनू भाँइ अपन-अपन काज आ परिवार लऽ कऽ उगए-डुमए लगल। धीरे-धीरे अपन गरीबीकेँ जहिना बिसरए लगल तहिना माइक कष्टकेँ सेहो बिसैर गेल।

झुनकुट बुढ़ भेने रीताक समांग खसि पड़ल। समांग खसने रीताकेँ ने काज करैक शक्ति आ ने गाए-महींसक सेवा-टहल करैक इच्छा-शक्ति रहल। अपन आगूक जिनगी केना चलत आ के सहारा करत तेकर चिन्ता बढ़ि गेल।

शारीरिक शक्ति घटने रीता सोचए लगली जे अपन कर्तव्य तँ हम इमान राखि बेटा लेल केलौं मुदा बेटाक धरम ने चाही जे अपन माइक दूधकेँ मोन राखत। जे बेटा दूधक कर्ज नै चुका सकैए ओ...।

बेटा लेल जेते केलौं तेते जँ समाज लेल करितौ तँ अपन कल्याण संगे समाजोकेँ कल्याण होइतए। बेकती खराप भऽ सकैए मुदा समाज नहि। तखन समाजक शरणमे जा कसि कऽ पकड़ब सही हएत। ओना, समाजोमे तँ अपन प्रतिष्ठा अछिए। ने केकरो धारने छी

आ ने केकरोसँ उकटा-पुकटी कहियो भेल। हम अपन जिनगीकेँ काजमे लगौने छी तखन के हमरा अकठाह की अनटाह कहत। हम की कोनो जिनगीकेँ उखठाह बनौने छी जे कियो जरत-मरत। अपन जिनगी तँ सरल सरस अछिए, जरूर समाज संग देबे करत।

रीता सोचि विचारि दोसर दिन समाजक लोक सभकेँ बैसा बजली-

“हम समाजक बीच रहि जिनगी बितेलौं। अपन शरीरसँ कमा परिवारकेँ आगू ससारलौं। मुदा हमर समांग खसि पड़ल। बेटा-पुतोहु सभ जे करैए से अहाँ सभक सोझहेमे अछि। जखन बेटा लेल एते केलौं तँ हमर धरम बनैए जे समाजक लेल सेहो किछु करी।”

तैबीच बेचन बाजल-

“अपनेक इच्छा की अछि से खोलि कऽ आगू बाजू।”

रीता बजली-

“हमर अन्तिम इच्छा अछि जे अपन खेत-पथार-डीह-डाबरक संग गाए-महींस सभ किछु समाजकेँ सौंपि दी। जइमे एकटा गोशाला आ एकटा स्कूल बना दिऐ, जेकर कागज हम समाजकेँ बना देब।”

समाजक सभ कियो सर्व-सम्मैतसँ विचार मानि लेलक। तैबीचमे रामरीत आगू आबि बाजल-

“गोशाला आ स्कूल, दुनूक खगता समाजमे अछि। गोशालाक आमदनीसँ गरीबक धिया-पुता पढ़बो करत आ गाए-महींसक सेवो करत।”

बिच्चेमे एक बेकती ठाढ़ होइत बाजल-

“बड़ सुन्नर विचार। जखन एकटा दूधबेचनी एतेक तियाग करैले तैयार अछि समाजक खातिर तँ हम समाज मिलि हिनकर सभ सेवा-

टहल जिनगी भरि निमाहब। दूधबेचनी गामक इज्जतकेँ बढ़ौलक। धन आ ज्ञान दुनूकेँ बढ़बैले जे प्रण लेली अछि ओ साक्षात् लक्ष्मी-सरस्वतीक देवी भेली किने।"

समाजक लोक देवी रूपमे दूधबेचनी- रीताकेँ माला पहिरा समाजमे घुमबए लगल।

❑

शब्द संख्या : 832

गोदानक गाए घुमि घर आएल

कोसीक कहर आ कटनियाँसँ तबाह भेल सरयुग अपन माथपर हाथ रखि दुखित मने सोचैत रहए। जिनगीमे केतेको बेर घर बनेलक मुदा घरक सुख नै भेटल आ कोसीक कटनियाँमे दहा गेल। ने रहैले घर आ ने घराड़ी। दुनू बेटा, पत्नी आ बेटीक संग अपनो गाम छोड़ि सरयुग विदा भऽ गेल। जाइत-जाइत नेपालक बोडर कातमे सरकारीए जमीनपर गामक लोकसँ बाँस-करची जियल मांगि-चांगि एकटा फुसि घर बनेलक आ रहए लगल।

दुनू परानी बोइन-बुत्ता करि हँसी-खुशीसँ जिनगी बितबए लगल। सरयुग मेहनतिया कर्मठ अछिए, घर-घरहठक काजमे निपुन अछि, तँए काजक कोनो कमीए ने रहै छइ। सभ दिन काज करए।

सरयुगक पत्नी- सुगिया सेहो मेहनती, पितमरू, सहनशील, हँसमुख संस्कारी अछि। गामक लोक सुगियाक काज आ बेवहारसँ खुशो अछि प्रसंशा सेहो करैए। खेतीक काजमे सुगियाक हाथ कियो ने पकैड़ सकैए। काजमे बड़ झाड़ल, तँए लोक सुगियासँ काज करबए लगल। दुनू परानीक सभ-दिना काज भेटने बोइन-बुत्तासँ आमदनी बढ़ल आ जिनगीमे हरियरी आएल। सुगिया सभ दिन सबेरे खेनाइ बना धिया-पुताकेँ खिआ बकरी चरबैले भेज दैत अपनो काजपर चल जाइत। कमासुतनी आ जोगनी सुगिया तँए आमदनी हरिदम

पछुआएल रहैत। बकरीसँ सेहो आमदनी भेल तखन सुगिया पतिकेँ कहलक-

“बेटा-बेटी-ले एकटा गाए कीनब। बेटी घास-पात आनत आ बेटा गाए चराएत। सभ मिलि दूधो खाएब आ बेचबो करब। पछाइत पहिने बेटीक बिआह करब तखन बेटाकेँ कमाइले पंजाब भेजब।”

पत्नीक नीक विचार सुनि सरयुगो सहमत भेल।

बेटीक बिआह धुम-धामसँ केलक, गामोक लोक सहयोग केलक मुदा बेसी खर्च भेलासँ किछु महाजनी भऽ गेल। सरयुग अपन जेठका बेटा- रघुकेँ कमाइ-ले पंजाब भेज देलक। बेटाक कमाइ आ अपन कमाइसँ महाजनी सधा बढ़ियाँ घर बनौलक। तैसंग किछु घर-घराड़ी आ किछु खेती जोग जमीन कीनि लेलक। आब बोइन-मजदूरी करब छोड़ि अपन काज करैत जिनगी चलबए लगल।

एक दिन सुगिया पतिकेँ कहलक-

“रघु आब जुआन भऽ गेल। आब रघुकेँ घर बजा लिअ आ ओकर बिआह करि दियौ। नीक हएत जे अही फागुनमे कऽ दिऐ। ऐ समयमे गाए-बियाएत दूध-दही बेसी नै किनए पड़त। अपने गाएसँ पाँच सेर दूध भऽ जाएत।”

मुदा विचारल बात मनेमे रहि गेल। माघ मास रहइ सरयुग भोरबेमे पोखैर दिस जाइत रहए कि ठण्ढ लगि गेलइ। शरीरक अंग बेकाम भऽ गेलइ। समयपर उचित इलाज नै भेलासँ सरयुगक मृत्यु भऽ गेलइ। जेठका बेटा पंजाबेमे रहै, छोटका बेटा- बौकु, पिताक मुखाग्नि दए दाह-संस्कार केलक।

चारिम दिन छौरझप्पी हएत, कर्म लेल महापात्रजीकेँ बजौलक। महापात्रजी रघुक घर पहुँचते दुआरिपर बान्हल गाए देख हिया लेला। एहेन गाए परोपट्टामे किनको ने अछि। गाए साक्षात् लक्ष्मी सन अछि।

गाए महापात्रजीक नजैरमे बैस गेल।

छौरझप्पी केला पछाइत, जखन महापात्रजी घर पहुँचला तँ सुतै-बैसैत हरदम वएह गाए नजैरमे नचैत रहैन। गाए प्राप्त करबाक लेल महापात्रजी युगती खोजए लगला। मने-मन विचार केलैन जे श्राद्धकर्ममे गोदान लेल ओही गाएकेँ भाँजपर चढ़ाएब। घाटपर यजमानकेँ रिझा कोनो-धरानी मना लेब।

श्राद्धक समय लगिचा गेल। रघु नै आबि सकल। किएक तँ चिट्ठी पंजाब पहुँचैमे एक पनरहिया लगि गेल आ घर अबैमे चारि दिन आरो लगल। रघु अपन पिताक मरितो समय मुँह नै देखलक, आ ने पिताकेँ मरलापर आगि दए सकल। श्राद्ध-कर्म सेहो अपना हाथे नै कऽ सकल।

माघक मास जाड़सँ हार हिलैत रहए। पछिया हवा आ कुहेससँ अन्हार रहइ। श्राद्ध-कर्मक वास्ते महापात्रजी पहुँचला। पोखैरक महाड़पर घाट बनल, महापात्रजी कर्म करबैले बिछाएल नारपर बैस मोटगर चद्दैर ओढ़ि बौकुसँ बाजल-

“बौआ, पोखैरमे जा नहा भिजले वस्त्र पहिरने ऐठाम आउ, कर्म हएत।”

बौकु देहपर सँ चद्दैर उतारि जखन नहाइ-ले जाए लगल तँ जाड़सँ देह थरथराए लगलै। मने-मन सोचए जे हम कोन पाप केने छी, जखन सभ जान बँचबैले मोट चद्दैर आ कम्बल ओढ़ि जाड़सँ बँचैत अछि। मुदा हम छी अभागल जे एहेन विकट समयमे नेहाएब। परन्तु, पिताक लेल श्रद्धा भावसँ नहा कर्मपर बैसल।

श्राद्ध-कर्मक समानक कोनो कमी नहि, नव वस्त्र- खटिया, पटिया, छाता, साड़ी, धोती, मधु, मखान, पिण्ड, तील, जअ, अरबा चाउर, उसना चाउर, दालि, सतंजा अन्न, घी, दही, धुप, दीप, फल,

फूल, पान, सुपारी आ लड्डू इत्यादि यथास्थान पिण्ड कटाइमे सोना-चानी मांग केलैन। दक्षिणामे कमसँ कम दू साए एकावन रूपैआ हाथमे कर्ताकेँ लइले आग्रह केलैन।

महापात्रजीक सभ बात सुनि बौकु बाजल-

"हम गरीब छी। सोना-चानी तँ देखनौं ने छी। केतए-सँ देब।"

महापात्रजी बजला- "सोना-चानी शुद्ध द्रव्य होइए, विद्ध शुद्ध हएत। जखन अहाँ कर्मपर सोना-चानी दान करब तखने अहाँक पिता स्वर्गमे सोना-चानीक ठेरीपर बैसता आ अहूँ भरल-पूरल सभ दिन रहब। हम तँ कहबे करब, मुदा करब तँ अहीं।"

कर्ममे बिलम्ब भेल। बौकुक शरीर जाड़सँ थरथराइत रहए आ रहि-रहि कऽ कुदए लगल।

मने-मन महापात्रजी सोचए जे जेतेक देरीसँ कर्म हएत तेतेक जजमानक देह जाड़सँ कठुआएत। अपना लेल ई नीक्के। जजमानक देह जाड़सँ कठुआएत तखने जे मांगब से सभटा देत। मौका देख महापात्रजी बजला-

"जजमान! सोना-चानी नै अछि तँ छोड़ू, मुदा अन्तिम दान आ पैघ दान होइए गोदान। गोदानसँ अपनेक पिता आ पुर्खाकेँ स्वर्गमे सभ दिन दूध भेटत। अपनेक दरबाजापर हुनके पोसल-पालल गाए अछिए, ओ गोदान करू। तुरन्त दान महाकल्याण।"

एक तँ बौकु नवालिक अछिए, दोसर- जाड़सँ देह थरथरा रहल छेलै, बेचारा किछु सोचि समैझ नै सकल। मनमे एलै गोदान विध छी, फेर तँ गाए हमरे रहत।

ओ ई नहि बुझैत रहए जे गोदान कएल गाए महापात्रजीक हएत। गाए मंगा गोदान कऽ देलक। महापात्रजी दक्षिणा करा कर्म अन्त कऽ गाए-बाछीकेँ हँकने अपन घर पहुँचला। सज्जन दूधगर गाए

आ बाछी देख महापात्रक परिवारक सभ कियो खूब प्रसन्न भेल।

जखन पंजाबमे रघुकेँ घरक चिट्ठी भेटल खुश भऽ अपन मित्रसँ पढ़ौलक। मुदा चिट्ठीक बात सुनिते दुखी भेल।

पिताक मृत्यु सुनि तैयार भऽ घरक लेल ट्रेन पकैड़ चलि देलक। चारीम दिन जखन घर पहुँचल तँ देखलक घर-दुआरि उदास, अंग-भंग भेल अछि। दरबज्जापर गाए नहि, खाली नादि खुट्टा पड़ल रहए। जोर-जोरसँ अबाज देलापर बौकु आएल।

अबिते भैयाक देख हाथसँ झोड़ा आ माथक बेरा लऽ आँगन आएल। माए एकटा ओछैनपर सोगाएल पड़ल छेली। जे घर स्वर्ग सन रहए ओ आब नरक बनि गेल अछि।

रघु मने-मन सोचए पिता तँ स्वर्ग गेला मुदा गाए की भेल? कनियेटासँ गाएकेँ पालन-पोषण केने छेलौं। माए आ छोटका भाएकेँ बोल-भरोष देलक।

रघु रूखल-सुखल खाए भूख मेटौलक। पछाइत बौकुसँ पुछलक-

"गाए की भेलौं?"

बौकु डरिते बाजल-

"बाबूजीक श्राद्ध-कर्ममे गोदान कऽ देलिऐ।"

रघु- "किनका राय-विचारसँ गोदान केलही।अपने मनसँ आकि माए कहने रहौ?"

दुनू बेटाक बात सुनि माए बजली-

"बौआ एक तँ कमौआ बाप अचक्केमे दुनियाँसँ गेलौ, दोसर लक्ष्मी सन गाए सेहो दुआरिपर सँ चलि गेलौं। आब हम केकरा लऽ कऽ जीयब। केना गुजर काटब ऐ बुढ़ाड़ीमे।"

रघु, माए आ छोट भाएकेँ बोल-भरोष दैत बाजल-

“नसीबमे जँ लिखल हेतौ तँ गाए घुमि आबि जेतौ, नहि तँ माथ पटकलासँ आब की हेतौ।”

धीरज दैत रघु युगती खोजए लगल। रघु बौकुसँ पुछलक-

“महापात्रजीक घरक पता बुझल छौ, केतेक दूर आ केमहर अछि। हमरा संगे तूँ भोरे चलिहेँ।”

रघुक आँखिसँ नीन उड़ि गेल रहए। भोरबेमे उठि दुनू भाँइ हाथमे ठेंगा नेने दू कोस दूर, महापात्रजीक घरक समीप पहुँचल आ गामक चरचित लेलक।

गाए खुटामे बान्हल नादिमे सुखल कुट्टी करवनु-करवनु टुघरए आ रूकि-रूकि हौंकुरैत रहए। गाए खाइ बिनु दुबर आ दुखी रहए। बाछी तँ दूध बिना दूधकट्टू भऽ टगैत रहए।

किछु समय बाद महापात्रजी दूहै वास्ते बालटीन लऽ दरबज्जापर पहुँचला। बाछी खोलि गाएकेँ पन्हेलक आ बाछीकेँ ठठा दोसर खुट्टामे बान्हि दूध दूहलक। दुहैयेकाल बिच्चेमे महापात्रजीक छोट-बड़ बच्चा-बेदरू थनतरसँ बाटी-बाटी दूध लऽ पी-पी कऽ खुशी मनबैत रहए।

एमहर दुनू भाँइकेँ सभ तमाशा देख-देख करेजा फटैत रहइ। आपसमे विचार करैत रघु बाजल-

“देखही बौकु, महापात्रजी श्राद्ध-कर्ममे कहने छेलौं गोदान केलासँ पिता आ पुर्खाकेँ स्वर्गमे दूध खाइले मिलतौ मुदा से नहि, तोरा ठकि लेलकौ। देखही गाए तँ स्वर्ग नहि पहुँचल ओ पहुँचल महापात्रजीक घर। तोरा मुँहमे जाबी लगेलकौ आ अपना घरमे दूधक नदी बहबैए। सामने देखै छी, हुनकर बाल-बच्चा दूध पीब कऽ लहोठिया, भोल्टा सन खलीफा बनल अछि आ तूँ सुखि कऽ छहोड़ा

बनल छँह। देखही भरि बाल्टीन दूध दूहि आँगन लऽ जाइए।"

दुनू भाँइ हिम्मत कऽ महापात्रजीक दरबज्जापर आएल।

महापात्रजी दुनू भाँइकेँ देख बजला-

"जजमान बाउ, दूनू भाँइ पहुँचलौं हेन किछु विशेष बात छी की आकि कोनो आरो घटना भेल हेन?"

रघु आवेशमे आबि बाजल-

"हमरा पिताजीक श्राद्धकर्ममे अहाँ हमरा छोट भाएसँ गाए-बाछी ठकि लेलौं। माए मरत तँ दुनू भाँइ अहाँक दुआरिपर नोकरी करब की?"

महापात्रजी खिसिया कऽ बजला-

"की कहलौं जजमानजी, कनी सम्हैर कऽ बाजू। गाए-बाछी ठकलौं नहि, गोदानमे मिलल। समाजक लोक जनैत अछि।"

रघु बाजल- "गोदानक गाए स्वर्गमे जा हमर बाप-पुरुखाकेँ दूध कहाँ पीबैत अछि। ओ तँ अहाँक दरबज्जाक शोभा बढ़ौने अछि। आँखिसँ देख रहल छी जे अहाँकेँ दूध पीबैए। ई ठकपनी नहि भेल तँ की भेल?"

तखने रघु जोर-जबरदस्ती करैत गाए-बाछीक डोरी खोलि देलक। डोरि खुजिते गाए-बाछी रघुक घर दिस लंक लऽ कऽ भागल। बौकु रेबारैत गाए-बाछीकेँ, गाम दिस विदा भेल। पाछू-पाछू रघु सेहो दौड़ैत घर आएल।

गाए-बाछीकेँ देख रघुक माए जे सोगाएल पड़ल छेली ओ उठि कऽ खुशी होइत गंगा जल आ दुबि-धानसँ गाएकेँ चुमौलक आ प्रेमसँ पीठ पोछलक। गाए-बाछी अपन मलिकिनी सुगियाक हाथ चाटए लगल।

पीठिया ठोक केने महापात्रजी दू-चारिटा पंचकेँ बजौने संगे रघुक दुआरिपर पहुँचला आ पनचैती बैसा देलखिन। पनचैती हुअ लगल।

पंच लोकैन सभ बातक जानकारी लैत रघुसँ पुछलखिन-

“गोदान केलहा गाए लोक आपस नै लइए। ई धर्मक विरूद्ध छी जे पुरान लोकक कहब अछि।”

रघु बाजल- “पंच महराज, महापात्रजीसँ पुछियौन जे घरक मालिक पिताकेँ मरलापर माए होइए की नहि। हमर भाए- बौकु अखन नवालिगे अछि।

श्राद्ध-कर्ममे पोखैर महारपर भिजले देह पूजबैत रहैथ। जाड़सँ बौकु हिलैत रहए। पूजाक सामग्री आ वस्त्र, रूपैआ-पैसा, सोना-चानीक बहाना करैत लोभ-लाचलमे गोदानक बहाना करैत महापात्रजी हमर गाए हाँकि लेलैन। बाजल छला गोदानक गाए स्वर्ग पहुँच पिता आ पुरुखाकेँ दूध पीऔत। मुदा हम दुनू भाँइ महापात्रजीक घर पहुँच कऽ देखलौं जे हुनकर बाल-बच्चा दूध पीबैत अछि। ई केतेक उचित छी।

ई अन्धकारमे पड़ि समाज केतेन दिन पिसाइत रहत। हमर आइ आँखि खुजि गेल। ई गोदान पुरुखा लेल नहि, महापात्रजीक लेल होइए। महापात्रजी बौकुकेँ नासमझ, अबोध जानि गोदानक बहाना बना गाए ठकि लेलैन। ई ठक नहि छी तँ की छी?”

सभ पंच आपसमे विचारि बजला-

“श्राद्ध-कर्म हुअए मुदा गोदान इत्यादि आडम्बर आ अन्ध-विश्वास छी। समाजक लोक सचेत रहू। रघु आइ समाजक आँखि खोलि देलक। जखन महापात्रजी कहने गोदानक गाए स्वर्ग पहुँच मरलहाकेँ स्वर्गमे दूध पीबैत अछि।

मुदा गाए स्वर्ग नै पहुँचल तँ गाए महापात्रजी अपना घर किए लऽ गेला। ओ इमानदारीसँ गाए रघुकेँ घुमा देथुन।”

महापात्रजी पंचक बात सुनिते मुँह लटका घर दिस विदा भेला।

❑

शब्द संख्या : 1612

असिरवाद

बात तीन दसक पूर्वक छी। एक समय बहुत तेजीसँ एहेन खबैर पहुँचल कि गाम-गामक लोक उठि कऽ पीपरा जाए लगल। पीपरा ओइ समय सहरसा जिलाक अन्तर्गत छल। मुदा अखन सुपौल जिलामे अछि। खबैर छल-

“पीपरामे एकटा बुढ़ियाकेँ भगवती मैया सपना देलखिन जे निर्मल मनसँ बिना भेद-भावसँ लोकक बीच जड़ी-बुटीक बनल दवाइ नि:शुल्क प्रसाद रूपमे बाँटू। ऐ दवाइसँ कोनो प्रकारक रोगसँ ग्रसित रोगी छुटकारा पाबि जाएत।”

ई खबैर काने-काने सुनैत गेल आ छुआछुतबला रोग जकाँ तेजीसँ बढ़ैत गेल। ई बात टेलीफोनक माध्यमसँ तेजीसँ पसरल।

ई बात सुनि गाम-धरसँ हेंजक-हेंज बेमार लोक पीपरा पहुँचए लगल। पीपराक भीड़ सिंहेश्वर मेलाकेँ फेल कऽ देलक। भीड़केँ कन्ट्रोल करैले प्रसाशनक ओरसँ पुलिस लगौल गेल छल आ गामक लोक सुरक्षा लेल मदैत करैत छल।

यएह खबैर सुनि लक्ष्मीनियाँ गामक किछु लोक पैदल कोसी नदी पार करैत सुपौलक रस्तासँ पीपरा पहुँचल। ओइठामक दवाइ खा घुमि घर आएल।

सही जानकारी मिललासँ हमरा गामक दोसर हेंज पीपरा जेबाक योजना बनौलक। योजना ऐ तरहसँ बनाएल गेल जे कम खर्चमे, सुगम रस्तासँ एक-दोसरक सहयोगसँ मिलि-जुलि संगे जाएब आ आएब।

लक्ष्मीनियाँसँ पीपरा लगभग पैंतीस-चालिस किलोमीटर अछि, दच्छिन-पूबक कोणमे। विचार एहेन भेल जे निर्मलीसँ पूब कोसी नदीकेँ तीन-चारि धारक समूह पार करैत सुपौल पहुँचब आ दोसर दिन सुपौलसँ पीपरा पहुँचब। ई बात सुनि हमर माए हमरो गौंआँक संग जाइले कहली। किएक तँ ओइ समय हमर उमेर लगभग बारह-तेरह बर्खक छल जे बरबैर बेमारे रहै छेलौं।

विहाने पीपरा जेबाक तैयारी भेल। हमहूँ खाइ-पीबैक समान आ एक सेट कपड़ा- चद्दैर, गमछा आ धोती झोड़ामे रखि तैयार रही। पता लागल जे गामक दू-तीन झूण्ड भोरे विदा भऽ गेल। मुदा हमरा टोलक झूण्ड दिनुका भोजन कऽ विदा भेल। ऐ झूण्डक संग हमहूँ विदा भेलौं। मुदा हमरा जाइक विचार नहि छल, किए तँ कोसी धारक रस्ता छी, पैदल चलए पड़त। जाइ-अबैमे पाँच-छह दिन समय बेकार भऽ जाएत।

हम सतमा बोर्ड परीक्षाक तैयारीमे लगल छेलौं। गर्मीक मौसमक अन्तिम सप्ताह रहइ। तँए, सफर करब उचित नै बुझि पड़ै छल। मुदा मनोबल कम नै छल। अपने पड़ोसिया काका-भैया संगे निर्मली होइत कोसीक कछेरमे पहुँचलौं। कोसीक भीषण बाढ़ि ढलपर ढल बजरैत देख सबहक हिम्मत टुटि गेल। तैयो किछु संगबेक विचार भेलैन जे नाहसँ टपि चलू। यात्रीक कमी नहि, नाहेक कमी छल। मुदा ओइ समयमे एकटा मझोलबा नाह लऽ नाविक आएल। घाटपर लगिते नाह खचा-खच्च भरि गेल। स्थिति-परिस्थित देख हम अविलम्ब

निर्णय लेलौं की नाहसँ कोसी पार नै भऽ सकब। एहेन स्थितिमे नाह डुमि सकैए। हम अपन मेरियामे ई विचार रखलौं।

किछु लोक हमर विचारकेँ विरोध केलैन। बजला जे चढ़ल नाह केना घुमि जाएब।

मुदा हम अपन निर्णयपर अडिग रहलौं। हमर संगबेमे किछु लोक नाहसँ उतैर गेला मुदा किछु लोक, जे हट्ठी छला से नाहसँ पार भऽ जेबाक लेल नाहसँ नहि उतरला। घाटसँ खुलिते नाह पानिक तेज धारामे एकाएक आँखिसँ ओझल भऽ गेल। नाहमे सवार किछु लोक, जे हेलब जनै छल ओ सभ अपन-अपन जान बँचेलक। मुदा अधिकांश लोक कोसीक तेज धारामे समा गेल।

आँखिक देखल ई घटना अखनो चौंका दैत अछि। चौंक गेल छला ओहो सभ जे हमर बात मानि नाहसँ उतैर घाटपर ठाढ़ रहैथ। सभ कियो हमरा धन्यवाद देलैन आ पुन: हम सभ निर्मलीमे बस पकैड़ विदा भेलौं।

रानीगंजमे दोसर बस पकैड़ रातिमे पीपरा पहुँचलौं। हम सभ यात्रीगण उचित स्थान एकटा बाधमे बनल स्कूलक ओसारपर शरण लेलौं। भीड़ एतेक जे सुइयो ने समा सकै छल।

खाइ-पीबैक लेल ने दोकान आ ने होटल ठहरैक स्थान। अपन-अपन झोड़ासँ चूड़ा, सतुआ निकालि सभ कियो खा कऽ पानि पीब राति बितेलौं। भोरमे उठि बेरा-बेरी दिशा-मैदानसँ निवृत्त भऽ दतमैन कऽ नहाइ-ले पाँतिमे लगलौं। पानिक बड़ अभाव, ने इनार-पोखैर आ ने कोनो नदी छल। मुदा पंचायतक ओरसँ दूटा चापाकल सड़कक कातमे, किछु हटि कऽ खेतमे गाड़ल छेलइ। विशाल भीड़ आ रैलामे लोक केना नहाइत। कोनो तरहेँ दू लोटा पानि माथपर ढारि भिजले देहे दवाइ लेल लाइनमे लागि जाइ छल लोकसभ। दवाइ मिलत कि नहि,

तेकर ठेकान नहि। मुदा देर-सबेर सभकेँ भांग-बथुआक कुटल-पिसल दवाइ प्रसाद सभकेँ एक चुटकी भेट जाइ छल।

हमहूँ आ हमर संगी सभ सेहो बेरा-बेरी लाइनमे लगि गेलौं। भोरे जे लाइनमे लगलौं तँ नअ-दस बजे करीबमे दवाइ मिलल। दवाइ खा पानि पीब सभ संगी अपन-अपन जलखै निकालि पनपियाइ केलौं। तरखन सबहक विचार भेल कि दिनुका भोजन लेल सभ मिल अपनेसँ भानस-भात करब।

माटिक दूटा पतली, कराही, चाउर, दालि, अल्लु, नोन, तेल, मिरचाइ आ राहैर दालिक बेवस्था केलौं। भात-दालि आ अल्लुक चोखा बनैत-बनैत दुपहरिया बीति गेल। भूखसँ सबहक देहमे कोनो लज्जैत नहि छल।

भोजन बड़ नीक नहि तँ कोनो बेजाइयो नहि। ओना, तँ भूखलमे गुल्लैर सेहो मीठे होइ छइ। मुदा भात-दालिक संग अल्लुक चोखा, सभ कियो भरि-भरि इच्छा खेलौं। बरतन-बासन धोइ गाछक डारिमे बान्हि लटका रखलौं, किएक तँ आइ राति रहि फेरो दोसर दिनक दोसर खोराक दवाइ खा कऽ जाए पड़ैत। लग-पासक कारनी सभ तँ पहिल खोराक दवाइ खा कऽ अपन-अपन घर चलि जाइत छल मुदा हमरा सभ संगे तँ से नहि, दूरसँ आएल छी, रहए पड़त।

किछुकाल धरि अराम केला बाद घुमि-फिर कऽ पीपरा बजारक सभ अनुभव केलौं। पीपरा बजार ओइ समयमे कोनो नमहर नहि, चौक जकाँ दस पाँचटा दोकानक छल। मुदा पीपराक खाजा बड़ नामी छल, मसहूर। दस रूपैये किलो खाजा मिलै छेलइ। कियो आधा सेर तँ कियो सेर भरि खाजा सनेसक लेल लेलक। रातिमे किनको भूख नहि, किएक तँ दिनमे सभ अबेरमे खेने छेलौं। बीच-बीच खाली पानि पीबैत रही।

रातिमे सबेर-सकाल ओइ स्कूलक ओसारपर कहुना कऽ घोंसिया-घोंसिया जगह बना सुइत रहलौं। भोरबेमे उठि दिशा-मैदान आ दतमैन कऽ नहाइ-ले लाइनमे लगलौं। भीड़ एतेक जे चापाकलक चारू बगल लोक थाहा-थही करैत। कलक चारूकात कट्ठा भरिमे थाले-थाल। ओइ थालमे धक्कम-धुक्का, रेलम-रेल करए, कियो पिछैड़ थालमे गिरबो करए। एक तँ नहाइमे लाइन लगल-लगल लोक अधमरू भऽ जाइत छल। दोसर दवाइ लेल सेहो लाइनेमे लागल रहए पड़इ। रौद-गर्मीमे मौलाएल लोक पानिक आसमे। हम सोचै छेलौं कि हमरा सबहक समाजमे अखनो धरि लोक अंध बिसवासमे पड़ि अपन जान गमबै पाछू पड़ल अछि। ऐठाम तँ नीको लोक बिमार भऽ जाएत। सोचैत रसे-रसे ओइ थालमे अपने डेग बढ़बैत आगू बढ़ै छेलौं। ओइ समयमे नजैर बगलबला पाँतिपर पड़ल। देखलौं एकटा मौलबी दुबर-पातर सुदामा जकाँ एक हाथमे पातर ठेंगा, दोसर हाथमे बदना नेने ओइ भीड़मे मरैले तैयर छला। बदना आ पकलाहा नमहर दाढ़ी देख हम बुझि गेलौं कि मुसलमान मौलवी छिआ।

मुदा ओ ठेलम-ठेलमे ठेला कऽ पिछैर थालमे गिर गेला। हाथक ठेंगा आ बदना छुटि फेका गेलैन आ अपने ठेहुन भरि थालमे खसि पड़ला। ओइ पाँतिक लोक मुँह तकैत रहि गेल, कियो पाँति छोड़ि मदद करैले तैयार नहि, किए तँ पाँतिमे पाछू पड़ि जाएत। मनमे भेल जे हुनकर जानक मदैत जरूरी अछि। किएक तँ कोनो बेकतीक परान बँचाएब सभ मनुखक धर्म होइत अछि। हम झट-दे अपन हाथक लोटा दोसर बेकतीकेँ पकड़ा हुनका लग फानि कऽ गेलौं। हुनकर दुनू बाँहि पकैड़ भरि पाँज कऽ पकैड़ पजिया कऽ उठा थालसँ बाहर सुखल जमीनपर बैसा ठेंगा आ बदना सेहो आनि कऽ हुनका हाथमे पकड़ा देलिऐन। हुनकर देह केराक भालैर जकाँ काँपि रहल छेलैन।

ओ वेचारे कुहैर कऽ बजैत हमरा माथपर हाथ राखि असिरवाद

दैत बजला-

“खुदा तुझे शलामत रखे।”

हुनकर ईशारासँ हम समझलौं की ओ पानि मांगि रहल छैथ। हम हुनकर बदना लऽ थालमे घुसि भीड़केँ धकलैत पानि आनि हुनका हाथमे देलिऐन। पुन: अपन लोटा लऽ पाँतिमे लागि गेलौं। मुदा दोसर खोराक दबाइ सहजे मिल गेल। हम दवाइ खा स्कूलपर आबि गेलौं। हमर सभ संगी साथी दवाइ लऽ आपस आबि भोजन बनबैमे लागि गेल। सभ कियो भोजन कऽ अपन-अपन झोड़ा-झँटी लऽ घर तरफ विदा भेलौं।

जखने हम सभ बस लग एलौं कि ओहूठामक भीड़ देख अचम्भा लागि गेल। बसमे तील रखैक जगह नहि। बसपर लोक निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि ठसमठस। बस तँ देखेबो ने करए, खाली लोकेटा देखाइ। हमर संगी सभ बसपर छड़ैप-छड़ैप ऊपर चढ़ए लगल मुदा हम बजलौं-

“हौउ सुनै जाइ जा, एना काज नै करह। जानक खतरा मोल नै लएह। कोनो बसबला मंगनी लऽ जाएत। बसपर निच्चा-सँ-ऊपर धरि केतौ जगह नै छै, जँ लटैक-फटैक जाएब तँ खतरा हेबे करतह। तूँ सभ जेबह तँ जाह मुदा हम दोसर बससँ जाएब।।”

हमरा लाटक सभ संगी बससँ उतैर गेल। हम सभ दोसर बसक इंतजारमे ठाढ़ भऽ गेलौं। लगले दोसर बस आएल आ सवारी चढ़ौलक। दस मिनटमे बस खुजल। पीपरासँ रानीगंज होइत कोसी बराजपर दऽ कऽ साँझ पड़ैत कुनौली पहुँचल। मुदा कुनौलीसँ निर्मलीक लेल कोनो बस नहि, पता चलल जे एकटा बसक दुर्घटना भेल जइमे बहुतो लोक मरबो कएल आ घाइलो भेल। तँए, बस बन्न रहए। साँझक समय, गर्मी सेहो छेलै, हम सभ पएरे विदा भेलौं किएक

तँ घरमुहाँनी चलैमे हिम्मत रहए। चलैत-चलैत कुनौलीसँ महादेवमठ रातिक साढ़े आठ बजे पहुँचलौं। सभकेँ भूख-पियास लगि गेल। सभ थाकि गेलौं। सबहक विचार भेल जे राति महादेवेमठमे बिताएब। भोरे चलब। जलखै बेर घर पहुँच जाएब। मुदा बसक दुर्घटना भेलासँ रस्ता बाधित रहए। कोनो गाड़ी नै रहलासँ महादेवमठमे सवारीक भीड़ बढ़ले जा रहल छल। छोट-छीन चौकपर पाँच-सातटा दोकान, सेहो चुटपुजिया। फुटहो ने खाइले मिलए जे पानियोँ पीब। सड़केपर बैस सभ कियो पचताइ छेलौं कि एकटा नमहर ट्रक आएल। ट्रकक खलासी हल्ला करैत बाजल-

“निर्मली जाइले जे यात्री छी से चलू, पाँच रूपैआ भाड़ा लगत।”

यात्री सभकेँ यात्राक मुसिबत रहबे करए, पाँच रूपैआ भाड़ा देलासँ एके घन्टामे घर पहुँच जाएब। सभ कियो ओइ ट्रकमे सवार भऽ गेल। ट्रकक खलासी पहिने सभसँ पँच-पँच रूपैआ भाड़ा तसील लेलक, तखन ट्रक खोललक। ओइ समयमे सड़क पकी आ बढ़ियाँ नइ रहए। केतौ पक्की तँ केतौ कच्ची सड़क रहए।

जखन ट्रक उछलैत-कुदैत भुतहा सुलीश गेट लग आएल, ओही दिन साँझक समयमे जे बसक दुर्घटना भेल रहए, जइमे पनरह आदमी मरल आ पचीस-तीसटा घायल भेल छल, तँए ओइठाम माने सुलीश गेट लग पहिने ट्रकेँ रोकि पुलिस छान-बीन केलक। रातिक समय, पुलिसक पहरा, सुनसान जगहमे ट्रकक रोशनीपर, एक-दिसनेसँ पसरल लाश- जे टुटल-फाटल आ थकुचल लेहु-लोहान देख सबहक प्राण सुखि गेल। जहिना जगहक नाओं भुतहा तहिना मुर्दासँ भरल स्थल। डरसँ सबहक माथ चकराए लगल। मुदा पुलिस पुछ-ताछ केला बाद ट्रककेँ आगू बढ़ैले इशारा देलक।

भुतहासँ ट्रक विदा भेल। हम सभ एगारह बजे रातिमे निर्मली पहुँचलौं। निर्मली पहुँचलापर सबहक जान पलैट गेल। सभ संगी-साथी एकेबेर बाजल-

"ठीके आजुक यात्रामे कोनो ग्रह रहए। तखन जे पीपरामे पहिल बस छोड़ि देलौं से नीक्के भेल। ओही बसक यात्रीक मेलसँ जे बस आएल वएह यात्री सभ दुर्घटनाक शिकार भेल।"

काका बजला-

"कर भला तँ हो भला।"

हम बजलौं-

"से तँ ठीके भेल। पैघ लोकक आशिर्वाद बड़ काज दैत अछि। जखन हम पीपराक भीड़मे जे बुढ़बा मुसलमान-फकीरकेँ थालमे सँ बँचेलिऐ, तखन ओ आशिर्वाद दैत कहलैन- खुदा तुझे सलामत रखें। वएह आशिर्वाद अखन काज देलक। तँए, आइ अपना सभ सलामत घर घुमि ऐलौं।"

काका बजला-

"हौ बौआ, तँए लोक सभ जखन घरसँ आनठाम जाइले विदा होइए तँ बड़-बुजुर्गकेँ गोर लागि पहिने आशिर्वाद लइए। मुदा हमरा आइयो मन कहैत रहैए जे माइक आशिर्वादसँ कोसीक धारमे डुमैसँ बँचलौं आ अबैत काल मोलबीजीक असिरवाद बसक दुर्घटनासँ बँचि सुरक्षित घर घुमि एलौं। से मन पड़ैत रहैए। माइक आशिर्वाद आ मोलबीजीक- अल्लाह तुझे सलामत रखें। से बेर-बेर अखनो मन पड़ैत रहैए।"

❑

शब्द संख्या : 1722

ई केकर दोख

रूपन आ कारी लंगोटिया संगी। दुनू गोरे बच्चेसँ संगे खेलाए आ संगे पढ़बो करए। जाति एक नइ रहितो खेनाइ-पीनाइमे कोनो भेद नहि। दोस्तीक केतेको कथा पढ़ने आ उदाहरण जनने दुनू गोरे दोस्तीक सम्बन्ध जोड़ि कृष्ण-सुदामा जकाँ निमाहैक संकल्प केलैन। बातो अहिना छेबो करए जहिना रूपन अमीर तहिना कारी निच्छस गरीब। मुदा आगू चलि रूपनक सोभाव धूर्त्त कपटी मुदा कारी निश्छल सोझमतिया। तैयो दुनू जे बच्चेमे संकल्प केने छल ओकरे इमानदारीसँ दोस्ती निभा रहल अछि। दोस्तीमे कुश्ती हेबाक कहियो अवसर नै आएल। कारी सत्तयुग दिस तँ रूपन कलियुग दिस ।

रूपन धनी भेने आगू पढ़ैत रहल आ कारी पाँच किलास पढ़ि, पढ़ाइ छोड़ि देलक। कारण जे कारीक पिता घुरन अल्पे उमेरमे मरि गेला। बापक श्राद्ध-कर्म करैमे कारी कर्जाक तर दबि गेल। माए तेतरी मसोमात बनि कारीकेँ संगे काजक लूरि सीखेबो करए आ बोनि-मजूरी कऽ कहुना दुनू साँझक बुतात ओरियान करैत रहल। पतिक मरने चिन्ता-सोगमे सोगाएल तेतरी बेमार भऽ गेली। बेटाकेँ परिवारक भार देख तेतरीक मन आगू-पाछू हुअ लगल। एक दिन बेटाकेँ कहलखिन-

“बौआ, हमरा जिनगीक कोनो ठेकान नै रहि गेल। जीब की मरब। हम अपने जीबैत तोहर बिआह कऽ लेब जे परिवार नीक-

नहाँति चलतह। घरक काजो बाँटि-बाँटि करियह। आब हमर कोनो ठेकान अछि। अहुना बपटुगर छह आ हमहूँ मरि जाएब तँ बपटुगर-मइटुगर दुनू भऽ जेबह। एक तँ गरीब छहे, दोसर पेदार भेने के अपन बेटीकेँ तोरासँ बिआह करतह।"

तेतरी अपन लत्तिया-गोतियासँ भाँज लगा कारीकेँ बिआह केलक।

कारीक मित्र रूपन पढ़ि इण्टर पास केलक मुदा कोनो नोकरी नइ भेने कलियुगक राह पकड़ने अछि। लुच्चा-लफंगा बनि ठक-फुसिक काज करए लगल। सभ दिन एक-दूटा उपराग रूपनक माए-बापकेँ भेटैत रहए।

रूपनक पिता अबध गामक प्रतिष्ठित लोक छैथ। रूपनक बेवहार आ चालि-चलैनसँ उबि बिआह कऽ देलैन। मुदा रूपनकेँ घरक काजमे मन नै लगैत रहए। ओ गामक किछु नवयुवकक संगे बैसार केलक आ एकटा नाचक कम्पनी ठाढ़ केलक। नाचक सभ सरमजानक ओरियान कऽ ओइ पछारी पड़ि गेल। आइ ऐ गाम तँ काल्हि ओइ गाममे नाचक काजसँ बेहाल रहए लगल। अपने रूपन नाचक कम्पनियो छी आ नाचक पाटो नीके खेलैए। परोपट्टामे रूपन नीक नचनियाँ-गबैया-बजबैया। मुदा ओकर बेवहारसँ कियो खुश नहि। जइ कारणेँ रूपनक पत्नी खुशी नहि, दुखी रहैए। दुनू परानीमे सभ दिन खटपट होइते रहैए। तीनटा सन्तान रहितो रूपन घरसँ फरारे रहैए। तीन-चारि बरख धरि तँ नाचक पार्टी चलल मुदा बादमे छिटफुट भऽ बन्न भऽ गेल। रूपनकेँ दोसर काजमे मन नै लगै छल। ओ नीक गबैया-बजबैया छीहे। गामे-गामे भजन-कीर्तन करैए आ नीक-नहाँति भोजन-भात करैए। ऐ तरहेँ ओ केश दाढ़ी बढ़ा आडम्बरी बबाजी बनि गेल। बबाजी भयंकर, काज छुतहर। भजन कम आ छौड़ी-मौगी

सभकेँ पटियाबैमे बेहाल। कोखिया गुहारि, ओझ-टोन आ तंत्र-मंत्रक धंधा बेसी। केतौ-केतौ जशो कमाइए आ केतौ-केतौ मारियो खाइए।

सभ पायासँ हारि रूपन अपन घर पकैड़ लेलक। हारल नटुआ आ बिगड़ल बबाजी, तँए गाममे कोनो मोजरे नहि। किछु दिन घरमे मन मारि रहल। पत्नियोँ करवनो जी नइ लगबै छेली। जखन कहा-सुनी होइ तँ पत्नी परचट्टा, तीमनचट्टा, थूकचट्टा इत्यादि सभ किछु कहि दइ। तैयो रूपन घबहा कुकुर जकाँ घरेमे मुँह छिपा रहैए। किछु दिनक पछाइत, जखन मनमे असथिरता नइ आएल तखन रूपनकेँ अपन लंगोटिया संगी- कारी मन पड़ल। सोचए लगल- जँ आनठाम आन दरबारमे जाएब तँ मानहानी हएत, मुदा दोसक घर जा भेँट करब तँ दोसक मनमे जिज्ञासा बढ़त, दोस्तीमे प्रेम बढ़त आ आदर-मान सेहो हएत।

एक दिन रूपन भोरे अन्हरोखे कारीक घर दिस विदा भेल। जाड़क समय, ओस-कुहेस लगल रहए। रस्ता निहारि-निहारि आगू बढ़ैत कारीक दरबज्जापर रूपन अनभुआर जकाँ पहुँचल। कारी गोहालमे घूर लगा आगियो तपै छल आ कंकर भरि चीलममे आगि बोझि सुनगाबैत रहए। पैरक धमक सुनि कारी अकानए लगल। तैबीच रूपन 'दोस' कहि अवाज देलक। अवाज सुनि कारी चिन्ह तँ नहि सकल मुदा मुड़ी निकालि देखलक तँ रूपन दोसकेँ देख, खुशी मनसँ बजौलक आ एकमुट्ठी पुआर आनि घूरे लग बैसौलक। हाथक कंकर भरल चीलममे सोंट मारि दोसक हाथमे दैत बाजल-

"जाड़ बड़ छइ। जड़ाएल एलौं हेन, कंकर पीबू। बहुत दिनक बाद एलौं हेन। ताबे हम अँगनासँ एक लोटा पानि आ चाह नेने अबै छी।"

अँगना जा पत्नीकेँ कारी कहलक-

“बहुत दिनपर हमर लंगोटिया आएल हेन। कनी चट-दे नीक चहटगर चाह बनेने आउ। ताबे हम पानि दइ छी।”

कारीक पत्नी- मंगली धिया-पुताकेँ सुतले छोड़ि, उठि झट-दे चाह बना दूटा गिलासमे लऽ दरबज्जापर एली। एक गिलास चाह दोसकेँ आ दोसर गिलास पतिक हाथमे दऽ चलि गेली।

दुनू दोस गपो-सप्प करए आ चाहो पीबए। मंगली अँगने चाह पीब घर-आँगनक काज करए लगली। बरतन-बासन आ घरक काज कऽ भानस-भात करैक ओरियानमे लगि गेली। किए तँ आइये कारीकेँ कमाइ खातिर बाहरो जेबाक अछि। तँए, भानसक पछाइत बट-खर्चो बनाएब छइ।

कारी-रूपनक दोस्तीमे अगाघ प्रेम अछि। दुनू दोस्तक बीच गप-सप्प चलैत रहल। तखने भानस भऽ गेल। मंगली दू लोटा पानि नेने दरबज्जापर आबि खेनाइ-खाइले आग्रह केली।

दुनू गोरे हाथ-मुँह धोइ अँगना जा भोजन करए लगल। मंगलीक चहल-पहल देख रूपन बाजल-

“दोस, आइ केतौ जेबाक प्लान बनल अछि की? बेसी सरनजामक ओरियान देखै छी!”

कारी बाजल-

“दोस, अहाँसँ छाम की करब। सभ दिन तँ जिनगी गरीबीएमे बीतैए। माए-बापक कर्जासँ लऽ कऽ अपनो कर्जा-बर्जा माथपर लादले अछि। परिवारो बढ़ि गेल। तीनटा धिया-पुता आ दुनू परानी मिला पाँच गोरे भेलौं। काम-धाम गाममे नहियेँक बरबैर अछि। हाथ जोड़ि केतेक दिन धरि बैसल रहब। रहैले घराड़ीए-टा बँचल अछि। जँ ओहो कर्जे तरे बीकि जाएत तँ धिया-पुता सभ बिलैट जाएत। तँए, मन बनेलौं हेन कि घरसँ बाहर जा कमाएब। किछु बँचा कऽ कर्जो

चुकाएब आ घरो-परिवारक खर्च चलत। अही खातिर आइ ओरियानमे लगल छी। कलकतामे हमर मसियौत भाए सभ बहुत दिनसँ काज करैत अछि, वएह सभ कहलैन जे अहीठाम आउ, नीक कमैनी हएत। ओतइ जाइक प्लान केने छी। भने आइ अहूँ समयपर आबि गेलौं। भेँटो-घाँट भइये गेल आ हालो-चाल जानि लेलौं। हम बाहर जाइ छी, जाबे हम घुमि घर आएब तैबीच अहाँ हमरो बाल-बच्चाकेँ देखैत रहब।"

रूपनक मनमे खोंट अछिए ओ कारीसँ मजाक करैत बाजल-

"दोस, सिरिफ बाले-बच्चाक देख-रेख करब कि दोस्तिनियोकेँ?"

कारी सोझमतिया, हँसैत रूपनसँ बाजल-

"ई की कहै छी, जखन हम नै रहब तँ अहीं ने सभकेँ देखबै।"

रूपन अपन दाव लगबैत बाजल-

"अहाँ अपन पत्नीकेँ बजा हमरा सोझहेमे कहि दियौ, जँ मानि लेती तँ हमरा कोनो हर्ज नहि। जँ नइ मानती तखन हम की करब।"

पत्नीकेँ बजा कारी रूपनकेँ सोझहामे बाजल-

"जाबे हम घर घुमि नै आएब, ताबे अपन दोस- रूपन अपना घरकेँ देखत। कोनो खगता-बेगरता हएत तँ दोस पूरा करता।"

कारी अपन झोरा-झण्टी लऽ विदा भेल।

कारी अपन उदेसमे कलकत्ता पहुँच गेल। दू दिन धरि कलकत्ता घुमि-घुमि देखबो करै छल आ काजो खोजै छल। मुदा काज ओहन भेटै जइमे गुलाम बनि करए पड़ैत आ दरमहो कम्मे। जखन कि कारीक मनमे रहै जे काज ओहन हुअए जे स्वतंत्र होइ। जखन मन हएत करब, नइ मन मानत तँ नहि करब। सोच-विचार करैत कारी अपन रिक्सा चलबैक निर्णय केलक। जखन मन हएत चलाएब वा नइ

मन हएत तँ नइ चलाएब। दिनमे रिक्सा कम्मे चलत मुदा रौतुका समयमे बढ़ियाँ आमदनी हएत।

कहियो कम आमद होइ आ कहियो एतेक भऽ जाइ जे सभ दिनक उनाड़ी भऽ जाइ। कारीकेँ रूपैआ कमबैक भूत सवार भऽ गेल। मनमे रहै कर्जा सठेबाक अछि। कारी सोचलक- समय जे लगत मुदा एतेक जरूर कमा लेब जइसँ कर्जा चुका लेब आ अपना परिवार-ले रूपैआ रहत तँ गामेमे कारोबार सेहो ठाढ़ करब। परिवारक भरण-पोषण नीक जकाँ हएत आ धियो-पुतो-ले नीकसँ सोचब। ताधैर घर-खर्चा लेल बीच-बीचमे रूपैआ पठबैत रहब।

एमहर रूपन बबाजी एक तँ नौतल दोसर राकस। चरित्रहीन आ छिहत्तरा तँ पहिनहिसँ रहबे करए, दोसर कारीक बनाएल घर-परिवारक देख-भाल करैक पावरनामा सेहो भेटल रहइ।

रूपन अपन डेरा कारीक घरपर खसा लेलक। आ मंगलीकेँ फुसिया मनकेँ मोहि रूपन अपन शारीरिक सम्बन्ध बनबैक उदेससँ कहियो साड़ी तँ कहियो तेल-साबुन-सिनुर आ रंग-बिरंगक खाइ-पीबैक चीज-वौस दिअ लगल। हलाँकि मंगली रूपनक बेवहार आ विचारसँ सहमत नइ रहै छेली। ने कोनो समान लइ छेली आ खुशे रहै छेली। समान लइसँ सेहो इनकार करै छेली। मुदा रूपन बबाजी बड़ खेलाड़। अपन माया-जालमे किनको फँसबैमे माहिर छथिए। तैयो मंगली अपन चरित्र-कर्तव्यसँ नहि चुकली। तखन रूपन बबाजी मंगलीसँ बाजल-

“सुनू, जखन हमर दोस घरसँ बाहर जाए लगल तखने अहाँकेँ बजा हमरा सामनेमे कहने रहए, जाधैर हम घर घुमि नै आएब ताधैर हमर घर परिवारकेँ देख-भाल करब। मुदा कोन दुबिधा रहि गेल, घर-खर्चो तँ हमहीं चलेबे करै छी। तखन हमरा अहाँक बीच दूरी किए

रहत।”

मंगली मने-मन सोचए लगली जे बात तँ ठीके हमर पति कहि देने रहैथ। सोझमतिया मंगली रूपनक जालमे फँसि गेली।

गाममे जेनए जाउ, सगरे धिया-पुतासँ लऽ कऽ कनियाँ-बहुरिया आ बुढ़-बुढ़ानुस धरि रूपन बबाजी आ मंगलीक किरदानीक चर्च करैत रहए। मुदा सामनेमे बाजत के। झगरा-झंझटमे के पड़त। केकर खेत केकर गाए आ कोन पापी रोमए जाएत। जेकरा जे मनमे अबै से बजैत रहए। मुदा परोछमे। एमहर रूपन बबाजी आ मंगलीक खेल-बेल बढ़ैत गेल। पाँच बर्खमे एकटा-कैं के कहए जे दूटा बेटा मंगलीकैं आरो भऽ गेल। तीनटा संतान पहिने कारीक जनमल जइमे दूटा बेटी आ एकटा बेटा रहए, पछाइत दूटा आरो भेल।

परिवार नमहर भेने रूपन बबाजीकैं मुसिबत बढ़ि गेल। मंगली आ रूपनमे टनाटनी हुअ लगल। रूपन बाबजीक मन बदैल गेल। मंगलीक देख-भाल करब छोड़ि चलि गेल।

मंगलीकैं पाँचटा धिया-पुताक संग अपन जिनगी बिताएब पहाड़ बनि गेल।

रूपन तँ बबाजी छी। गामे-गामे घुमि-घुमि भजन-कीर्तन करए आ दिन काटए। मुदा मंगलीक जिनगी पहाड़ बनि गेल। कँकोंरबा बिआन कँकोंरबे खाए सन मंगलीक जिनगी बनि गेल। मंगली मने-मन सोचए लगली जे जहरो पीब जँ मरि जाएब तँ बाल-बच्चा सभ अनाथ भऽ जाएत।

मंगलीमे जे मातृत्व गुण अछि ओ मरैसँ बँचबए लगल। ओहुना नारीमे दुख सहैक बेसी शक्ति रहिते अछि। मुदा मंगलीक जिनगी बीच धारमे फँसल। ऐपार कि ओइ पार, दुखे-दुख...।

मंगलीकैं एक तरफ धिया-पुताकैं पोसनाइ आ दोसर तरफ

पतिक डर आ तेसर बीच मजधार अछि समाज। मंगली समाजमे मुँह केना देखाएत।

पाँच बर्खक पछाइत, जखन कारी कलकत्तासँ घुमि घर अबैत रहए। रस्तेमे सोचए जे घर जाइते पहिने कर्जा चुकाएब। पछाइत रहैले एकटा नीक घर बनाएब आ ओही घरमे दोकान सेहो करब। रूपैआ पोख्ता अछिए, पाँच-दस कट्टा भीठ जमीन सेहो खरीद लेब, जइमे एकटा चापाकल गड़ा तरकारीक खेती सेहो करब। मंगली आ धिया-पुता सभ सेहो बाड़ी-झाड़ीक देख-रेख करत आ काजो करत। जँ आमदनी हएत तँ बेरा-बेरी बेटियोक बिआह करब आ बेटोकेँ पढ़ाएब।

कारी घर पहुँचैबला रहए कि मंगली घरक पछुआरेसँ अबैत देखली। पतिकेँ अबिते मंगली हाँइ-हाँइ काज सम्हारए लगली। घरमे जोगेलहा रूख-सुख किछु खेनाइ ओरियाबए लगली। बच्चा-बेदरूकेँ कहि देलक जे 'बौआ-बुच्ची देखहीन, रस्ता धेने बाबू आबि रहल छौ।'

ढेरबा बड़की बेटी माइक बात सुनिते दौड़ल बापक माथक समान आनए। पाछू-पाछू लेधुरियो सभ हल्ला करैत आगू-पाछू पहुँच गेल। कारी बहुत दिनपर गाम आएल। अपनो धिया-पुताकेँ ठीकसँ नहि चिन्हैत रहए। बड़की बेटीसँ कारी पुछलक-

"दाइ, ई दुनू छोटाक लेधुरिया के छी?"

बेटी बाजल-

"सभ हमरे भाए छी। अहाँ समाने हम एक भाए आ दू बहिन रही। आ अहाँ गेला पछाइत माएकेँ दूटा बौआ आरो भेल।"

गप-सप्प समाप्तो ने भेल कि घरक दरबज्जापर सभ पहुँच गेल।

पतिक आगमन होइते मंगली एक लोटा पानि आगूमे राखि दुनू हाथे आँचरक खूट पकैड़ पतिक पएर छुबि गोड़ लगली। आ समानक मोटा-झोरा ठेकान लगा राखि छिपलीमे पनिपियाइक चीज-वौस लऽ

एली। तैबीच बड़की बेटी बापकेँ बैसैक ओरियान ओसारापर एकटा सोनौटा बोड़ा बिछा देलक।

कारी हाथ-पएर धोइ बिछाएल बोड़ापर बैसल आ एकटा छोटका झोरा खोलि कलकत्ताक बनल बिस्कुट, लेमनचुस निकालि बच्चा सभकेँ देलक। आ मोटासँ निकालि तीनू बच्चाकेँ कपड़ा देलक। मुदा दूटा लेधुरिया लेल तँ कोनो कपड़ा नहि अनने रहए। दुनू लेधुरिया कारीक मुँह दिस ताकि टुकुर-टुकुर निहारए लगल।

कारीक आगू पनिपियाइक छिपलीमे सभ कियो संगे खाए लगल। दू-चारि कौर खा कारी उठि गेल। लेधुरिया सभ खाइते रहल। मंगली भानस-भातक ओरियान करए आ दू-चुल्हियापर अधनो चढ़ेने रहए।

कारी मंगलीक बेवहारसँ खुश तँ रहए मुदा बेटी जे रस्तेमे कहने रहै, जे अहाँक गेलापर माएकेँ दूटा बौआ आरो भेल, से देख कारीक देह जेना करिया नाग जकाँ कारी भऽ गेल। कारीक आँखि लाल-पियर हुअ लगलै। तमसाइत कारी बाजल-

“ई दुनू बच्चा केकर छी?”

मंगली कनसुखुए मने बजली-

“अपने छी।”

कारी-

“जखन हम गाममे नै छेलौं तँ..?”

मंगली-

“हम तँ अहींक वचन ने निभेलौं। कहि गेल छेलौं किने जे जाबे हम गाममे नहि रहब ताबे बालो-बच्चा आ अहूँक देख-रेख हमर दोस करत। हमरा तँ अहाँ माल-जाल जकाँ पोसियाँ लगा गेलौं। जे पोस-

पालन केलक ओ इंसान नहि, जानवर रहए। एकरे फलाफली ई सभ भेल। अहीं कहू जे जे इज्जत-आबरू हमर चलि गेल ओ आब फेर घुमि औत। एकर जिम्मेदार के? के हमर इंसाफ करत। जँ इंसाफ करबो करब तँ अहीं ने।"

पत्निक बात सुनिते कारी दुनू हाथ माथपर लऽ ठामहि खसि पड़ल। खसिते मुहसँ अवाज निकलल-

"हौ दैब, ई केकर दोख..!"

❑

शब्द संख्या : 1978



राम विलास साहू

जन्मभूमि : लक्ष्मीनियाँ

जन्म तिथि : 01 जनवरी 1957

पिताक नाओं : स्व. नशीव लाल साहु

माताक नाओं : कैली देवी

मातृक : हिरपट्टी (बनगामा) मधुबनी

पता : गाम- लक्ष्मीनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी, पिन कोड- 847108

शिक्षा : स्नातक

जीविकोपार्जन : कृषि एवं निजी अध्यापन कार्य

रूचि : साहित्य पढ़ब-लिखब।

सम्पर्क : 9955802522, 8863058834, Email : rambilaskavi2011@gmail.com

साहित्य लेखन : 2008 ईस्वीसँ।

सम्मान/पुरस्कार : नरेन्द्र सम्मान- 2018, लेखकीय सम्मान- 2018

प्रकाशित कृति :

(१) रथक चक्का उलैट चलए बाट (पद्य संग्रह) : 2013

(२) अंकुर (कथा संग्रह) : 2016

(३) कोसीक कछेर (काव्य संग्रह) : 2017

(४) दूधबेचनी (कथा संग्रह) : 2018

अप्रकाशित कृति :

(१) मनक मैल (टनका/हैकू/शैर्न्यू संग्रह)

(२) आगिये आगि (कविता संग्रह)

(३) नेत्रदान (खण्ड काव्य संग्रह)

(४) अंशुमान (कथा संग्रह)

पल्लवी प्रकाशन

जे.एल.नेहरु मार्ग, तुलसी भवन

निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

ISBN : 978-93-87675-71-1

₹ 150